


ॐ दीय-कोष 

**AN ENCYCLOPAEDICAL
AYURVEDIC-DICTIONARY**



सकल कर्ता—

भाबू रामजीत सिंह जी वैद्य

भाबू दलजीत सिंह जी वैद्य

• ओ३म् •

• आयुर्वेदीयानुसंधान-ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प •

आयुर्वेदीय-कोष

An Encyclopaedical Ayurvedic Dictionary
(with full details of Ayurvedic, Unani and Allopathic terms)

अर्थात्—

आयुर्वेदके प्रत्येक अङ्ग प्रत्यङ्ग सम्बन्धी विषय यथा—निघण्टु, निदान, रोग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, कीटाणु विज्ञान आदि २ अनेक विषय के शब्दों पर इनके अन्वय भाषा के पर्याय का विस्तृत व्याख्या सहित अपूर्व संग्रह। व्याख्या में प्राचीन व अर्थाधीन मतों एवं चिकित्सा प्रणाली के के अन्वयार सुसनात्मक एवं गवेषणा पूर्ण विवेचन दिया गया है।

इसमें लगभग २००० वनस्पतियों, खनिज एवं

माणिक्य की औषधियों के आगतक के

शोधोंका सर्वांगीण वर्णन है, संक्षेप

में आयुर्वेद सम्बन्धी कार्य भी

विषय नहीं आते यह

प्राचीन हो या नवीन

जिसका समावेश

इसमें नहीं।

संयोजक कर्ता—

प्रकाशक—

डा० रामजीतसिंहजी वैद्य

डा० दलजीतसिंहजी वैद्य

रायपुरी, झुनार (पू० पी०)

प० विद्वेदशरदयालुजी वैद्यराज

सम्पादक—अनुभूत योगमाला,

भरालोकपुर-इटावा (पू० पी०)

सन् १९३२ ई० व सम्बत् १९८९ वि०

प्रथम संस्करण

प्रथम बार

सर्वाधिकार सुरक्षित

{ इस अंक का मूल्य



प० विश्वेश्वरदयालुजी के प्रबन्ध से श्रीहरिहर प्रेस, धरमकोटपुर-इटावा में मुद्रित ।

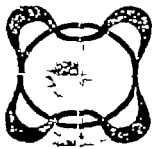


इस कोष में समस्त भाषा के शब्द देवनागरी ध्वनिमाला के क्रमानुसार रखे गये हैं। अरबी, फारसी आदि अन्य भाषाओं के एक ही ध्वनि के समावेश के लिये दो अक्षरों का प्रयोग किया गया है। अर्थात् 'अ' के स्थान में फारसी ध्वनि के लिये 'आ' और 'आ' के स्थान में फारसी ध्वनि के लिये 'अ' का प्रयोग किया गया है। परन्तु 'अ' मानकर ही उन्हें हिन्दी ध्वनि क्रम में स्थान दिया गया है। शेष अन्य समस्त ध्वनि के लिये भी इसी भाँति समस्त लोग चाहिये। क्योंकि देवनागरी ध्वनिमाला अन्य किसी भी भाषा के ध्वनिमाला की अपेक्षा अधिक पूर्ण एवं स्वाभाविक है और उसमें इतने पर्याप्त ध्वनियों का समावेश है,

कि अन्य भाषा की ध्वनि जो हिन्दी में प्रकट करने में कोई अड़चन उपस्थित नहीं होता। अन्य भाषा में जो अधिक ध्वनियाँ आई हैं वे या तो एक ही ध्वनि के भेदोपभेद मात्र हैं अथवा वे इतनी आवश्यक नहीं और उनका समावेश अपने मूल ध्वनि में हो सकता है। अतः देवनागरी ध्वनिमाला में कोई परिश्रम करना हमें उचित न जान पड़ा। हाँ! जो एक २ ध्वनि के स्थान में कई ध्वनियाँ आये हैं उन्हें अथवा उनके किसी विशेष उच्चारण को स्पष्ट करने के लिये कुछ अक्षर मान लिये गये हैं। ध्वनि क्रम निम्न है।

— 161 —

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ |
| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न |
| प | फ | ब | भ | म | य | र | ल | व | |
| श | ष | स | ह | ळ | ळ | ळ | | | |



| | | | |
|------------------|---|---------------------|-------------------------|
| कु० टी०, कुसामा० | कुसुमायली टीका | च० द० (सं०) | चक्रपाणिदत्त कृत संग्रह |
| कुर्ग० | कुर्ग | चान्द० तै० | चन्द्रनाथि तैल |
| कु० नफी० | कुक्षियात नफीसी | च० धि० | चरक विमान स्थान |
| कुमा० तं० | कुमार, तंत्र | च० सं० | चरक संहिता |
| कुस्ता० र० | कुस्ता जान रहीमी | चान्तु० ज्व० | चातुर्थक ज्वर |
| कुस्ता फी० | कुस्ताजात फीरोज़ी | चा० | चा० |
| कुमा भू | कुमार भूत्य | चि० | चिकित्सा स्थान |
| कौ० | कौकण, कौकड़ी | चि० क० फ० (पक्षी) | चिकित्सा क्रम- |
| क० | कसिया | | कश्यपक्षी |
| कुसा० न० | कुसासतुषपाइस | चिद० | चिदगांध |
| क० | कंड | ची० | चीनी |
| ग० गं० | गलगंड | चू० | चूर्ण |
| ग० | गण | छे० शा० | छेदमधुख |
| गद० | गदपात्र | छो० | छोटा |
| गज० घे० | गज घेधक | छो० ना० | छोटानागपुर |
| गा० मा० | गण्डमासा | जली० का० | जयोरहे सार्जमराही |
| गा० | गारो | जटा० | जटाधिर |
| गि० सु० | गियासुल्लुगात (हिन्दुस्तानी फारसी अरबी लोगात) | जय० द० | जयवत्त |
| गु० | गुटी, (डी) | जर० | जरमेनी |
| गुवभू० | गुवसंश | जय० | जयपुर |
| गुर्ज० गु० | गुर्जरी, गुजराती | जा० | जाया |
| गु० व० | गुरुच्यादि घर्ष | जापा० | जापान |
| गो० | गोष्ठा | जी० एम० एम० | जोसेज मेट्रीरिया मेडिका |
| गोड० | गोडल, गोडाखी | जगु० शा० | जगु शास्त्र |
| गंगा० परि० | गंगाघर परिभाषा | ज० | जङ्गली |
| ग० | ग्रह | ज्य० | ज्वर |
| ग्रह० | ग्रहणी | ज्यराति० | ज्यरातिसार |
| ग्री० (यु०) | ग्रीक (युगानी) | कै० | कैलम |
| घ० | घनाय | ट्रा० ई० | ट्रांस इण्डस |
| चक्र० द० | चक्रदत्त, चक्रपाणि | टी० | टीका |
| | दत्त द्रव्यगुण | ड० | डवण |
| | | डक० | डकन मिध |

डे० एकन
 डू० सांपटरी डूरी
 ल० म० तजुमा नफासी
 फने साना इलमुल् अदुवियद्
 सश० व० वररीह वपीर
 सा० (तामि०) तामिल
 तालु० मु० रो० तालुगतमुजरोग
 सा० श० तालीफ शरीफो
 तिप्प० तिप्पतं
 ति० फा० तिप्पी फ र्माकोविषा
 ति० अ० तिप्पे अफयरी
 ति० की० तिप्पे कीमिर्षाई
 तिर० तिगुल
 मु० तुसु
 मुर० मुरकी
 ल० लुप्पा
 से० तेल० तेलगु, तैलंग
 से० सेत्र
 ल० तो० अरु तोला
 तो० तोला (तोलाक)
 तोडू० तोडुयानन्द
 तो० मो० तोहफतुल मोमीन
 त्रि० त्रिलिंग
 त्रिका० त्रिकारुड रोप
 था० डि० थाना डिस्ट्रिक्ट
 द० दक्षिनी
 द० द० दक्षिनी वर्मा
 द० मा० दक्षिन भारत
 द्दि० रो० द्दस्तरोग
 द० मु० रो० द्दस्तगत मुख रोग
 द० द० दधियग

दश० दशक
 दा० हि० दाक्षिणात्य हिन्दी
 दु० घ० दुस्प्रवर्ग
 दुर्गा० मे० मे० दुर्गादासकर यज्ञला मेटी
 द्रव्याभि० द्रव्याभिधान
 द्राधि० द्राधिषी
 द्वि० (रूप०) द्विरूपकोष
 ध० मि० धायस्तरि निघण्टु
 धर० धरणिः
 धा० धि० प्र० धातुविद्या प्रकार
 धा० (न्य) व० धान्यवर्ग
 ध्व० भ० ध्वजभंग
 नामा० नानार्थ
 ना० अ० नाडीदृश
 ना० गु० नासिदल् मुक्तामजीम
 ना० रो० नासाधोग
 ना० धि० नाडी विद्याम
 नि० निदान स्थान
 निदा० निदाग
 मे० ह० रो० नेत्र इष्टिगत रोग
 मे० रो० नेत्ररोग
 मि० घ० रो० नेत्र यत्रगत रोग
 मे० घु० रो० नेत्र शुक्रगत रोग
 मे० स० रो० नेत्र सन्धिगत रोग
 नैपा० नैपाल
 न्या० पै० न्याय पैथक
 प० पञ्जाय (श्री)
 प० पलपरिच्छेद
 पद० पदना
 प० नि० मो० पर्व्याय निर्वाचक नांद

| | |
|---------------|------------------------------|
| प० प० | पथ्यापथ्य |
| प० प्र० | परिभाषा प्रश्नीप |
| प० म० | परमद |
| प० मु० | पर्याय मुक्तापसो |
| पहा० | पहाड़ी |
| पस्तुः पशु | अफगानी भाषा |
| पा० अजा० | पामाजीय |
| पि० उ० | पिच्चर |
| पि० थ० | पिप्लत्यादिद्वगं |
| पी० वी० एम | प्रेकिशनर्स वेड मीथम |
| पु० | पुलिग |
| पुत० | पुतंगोडी |
| पु० घ० | पुल्पयगं |
| पु० | पूर्य खरद, पूर्य भाग |
| पु० भा० | पूर्यय भारत |
| पु० त० | पूर्यय तपारं |
| पो०, व० | पोरवम्बर |
| प्र० | प्रत्येक, प्रयोग, प्रसारणां, |
| प्रमे० (ह०) | प्रमेहे |
| प्रयोगरत्न० | प्रयोगरत्नाकर |
| प्रयोगा० | प्रयोगामृत |
| प्र० शा० | प्रत्यक्ष शारीर (म० म० |
| | व० गन्धनाथसेन (विरचित्र) |
| प्रसू० त० | प्रसूति, लत्र |
| प्रसू० शा० | प्रसूति शास्त्र |
| प्रद० | प्रदूर |
| प्र० | प्रकृत |
| मे० | मेन |
| फ० व० | फलधग |
| फा० | फारसी |
| फा० इ० | फार्माकोप्रिया इंडिया |

[सा० वि० ठा० इमाक विरचित] १, २, ३ भा०

| | |
|----------------|--|
| फार्मी० | फार्मिडिडी अंगरेजी काय |
| फि० | फिरंगी |
| फि० (प्रा०) | फ्रेंच (फरान्सीसी) |
| घ० व० | घनुयघन |
| घ० थ० | घर्मा (र्मा] |
| घम्य० | घम्यई |
| घरघ० | घरघरी |
| घ० अ० | घंठकल असाहिर (अरबी घंठक कोप) |
| घ० से० सं० | घंमसेन महिला |
| घ० क० | घष्या फरपुम |
| घ० य० | घ गाल [ली] |
| घु० मु० | घुस्तातल मुफदात |
| घु० का० | घुहनिक्वानीअ |
| घेरा०, वे० | घेरा, घेखूची |
| घोषा० | घोखारा |
| घुग्देला० | घुग्देलकरइ |
| घिटि० फ० | घिटिश फार्माकापिअ |
| घ्या० फ० ३ भा० | घ्याङ्ग वधीर १, २, ३ भाग |
| भंग० | भगम्बर |
| भ० द्विरूप | भरतद्विरूप कोप |
| भ० रमस० | भरतपुत्र रमसे |
| भेदला० गुड | भेदलातक गुड |
| भा० | भाग, भारत, भाष्यदेश |
| भा० पू० | भाष्यप्रकाश पूर्व भाग |
| भा० म० | भाष्यप्रकाश मध्य भाग |
| भा० १० शा० | भारतीय रसायनशास्त्र |
| | (आ० धामन गोपेश देशारं कृत मरठठी प्रथ) |
| भू० उन्माद० | भूतोन्माद |
| भूटा० | भूटानी |
| भूरि० म० | भूरिप्रयोग |
| भूरी० | भूपरवामायली |

शी० वि० शैविक विद्यात (रूप १)
 म० मह महाराष्ट्र (महरठी)
 म० अ० मरहज्जुलमद्विधियद
 (हकीम मीरमुहम्मद हुमेन विरचित)
 ग० अफ० मरहज्जुल अफसीर
 म० अ० था० मरहज्जुलअद्वियया डावटरी
 म० खी० मध्य खरई
 म० ज० मरहज्जुल अदादर या तिम्पो प
 डावटरी सुगात
 म० मद्रास
 म० म० निप० मद्रग पाल निघरट्टे
 मधु० मधुमती टीका
 मधुमे० (म० मे०) मधुमेह
 मनी० मनीपूर
 म० म० मध्यमदेश
 म० मु० मरहज्जुल मुफ्तूति
 मय० मयसूर
 मरा० मराठी
 मल० मलपाली
 मळा० मळार्थीक
 मह० मरहठी
 महा० वा० महापालेश्वर
 मसू० मसरिकी
 मा० मापा
 मा० अफ० मादजुल अफसीर
 मा० नि० माधय निदाने
 माला मालायार
 मि० मिश्रोभापा
 मि० ख० मिफ्ताहुल, खज़ान वर धयान
 अफशीर प रसायन (इफ्तीम फरीमवफ़ा हुत)

मिश्र० मिश्रकाष्याय
 मुग० मुगली
 मु० मुर
 मु० अ० मुनी, अफज़म
 मु० री० मुलराग
 मुह० मुहरे
 मुफ० नि० मुफ्तूति वर आलम निव्व
 मुफ० मा० मुफ्तूति मामीन
 मुफ० सि० मुफ्तूति सिक्वरी
 मुनाका० फ० मुनाफा कयीर
 मुन्त० इ० मुन्तरखुल अद्वियद
 मु० ता० मुन्तरखुल शोगात
 मू० ए० मूअफ़्फ़
 मू० घा० मूभाघात
 मू० र० मूअरक
 मे० मेची
 मे० मे० मेटीरिया मेडिका (डॉ मोदीम
 शरीफ़ हुत)
 मेदि० मेदिनी
 मेमो० मेम रैयडम शोइक
 मारसेज़ एण्ड अवर पटीकुलसै
 आफ़ इण्डियन पेकोनामिक्स
 मेया० मेयाइ
 धम० धमनी (पू०)
 पु० मू० पूमानी
 योग० र०, यो० योग रत्नाकर
 (रत्न) रत्ना ।
 यो० धि० योग धिन्तामशि
 यो० वर० योगतरंगिणी
 यो० (ति) ध्या० यो० योगि ध्यापद

| | | | |
|-------------------|--------------------------------|-----------------|--------------------------------|
| पृ० सु० | पृहत्सुभ्रुतम् | पृ० वी० | पृकरोप |
| पृ० रत्न सुं | पृहत् रत्नराज सुम्बर | शे० | शेप |
| पृ० नि० र० | पृहन्निघण्टु रत्नाकर '७-८ भाग' | शशी० | शशीपद् |
| पै० चन्द्रिका | पैद्यक चन्द्रिका | श्लो० | श्लोक |
| पै० जी० | पैद्यक जीवन | सत० | सतलक्ष |
| पै० निघ० | पैद्यक निघण्टु | स० फा० इ० | सखिलमैष्ट द्रु वी फार्माकोपिया |
| पै० श० | पैद्यक शब्द सिन्धु | | भौक इंडिया (डॉ मोहीदीन |
| पै० स० | पैद्यक समग्र | | शरीफ हत) |
| प्यप० शा० | प्यपहार आयुर्वेद | स० प्र० | सद्यो प्रथ |
| पै० पि० | पैद्यकिनोद | सं० - | संस्कृत |
| प्य० | अभ्यय | सं० प्र० | संमह |
| प्याक० | प्याकरण | सं० प्रहणी | संमह प्रहणी |
| प्र [ण] शी० | प्रथ शोभन | सता | संताप्त |
| प्र० | शराय | स० (सभिपा०) | सभिपात |
| ॥० श० | अर्धशराय | सभ्या० ज्य० चि० | सभ्यांस ज्येर चिकित्सा |
| श० च० | शब्द चन्द्रिका | सर्व० मु० रो० | सर्वगत मुषरोग |
| श० चि० | शब्द चिन्तामणि | सा० | साधारण, साभिपातिष |
| शब्द कल्प० | शब्द कल्पद्रुम | सा० की० | सार कौमुदी |
| श० मा० | शब्दमाला | सा० सुं० | सार सुन्दरी |
| श० र० | शब्द रत्नावली | सि० | सिलोन (लंका) |
| श० शा० | शल्य शास्त्रीय | सि० क्ष० | सिद्धिस्थान |
| श० अ० | शरह असबाब | सिद्धि० | सिद्धिम |
| श० त० पि० | शरीर तत्त्व विज्ञान | सिद्ध० | सिद्धनी |
| शा० | शरीर रचान | सिम० | सिमला |
| शा० घ० (शाङ्ग०) | शाङ्गधर | सिद्धह० | सिद्धहठ |
| शा० मि० मू० | शास्त्रिग्राम निघण्टु भूपख | सि० यो० | सिद्ध योग |
| शा० घ० | शाक बर्ग | सि० | सिध |
| शा० प्र० | शरीर प्रथ | सिगा० | सिगासी |
| शि० च० | शिवेत्तोग | सि० मू० | सिग मूत्र |
| शिपो० पि० | शिपो विरेचनम् | सिरि० | सिरिया (शमी) |
| शी० पि० | शीतपिच | सु० ब० | सुम्बर बन |

| | | | |
|----------------|-----------------------------|-------------|-------------------------------|
| सु० | सुधुत | ह० घ० | हरीतकी वर्ण |
| सु० टी० उ० | सुधुत टीका उल्लेख | ह० श० र० | हमारे शरीर की रचना १, २ भाग |
| सु० ति० | सुधुत निदान स्थान | ह० | (डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा कृत) |
| सु० मि० | सुधुत मिश्रकाण्डाय | ह० अत्रि० | हारीत |
| सु० र० | सुर्यानी (सीरिया या शामी) | हारा० | हारीतोत्तरे अत्रि |
| सु० | सुधुत स्थान | हिमा० | हारावलि (घली) |
| सु० ति० | सुधुतिका | हिं० | हिमास्य |
| सु० र्वसि० | सुधुत सिद्धांत | हिं० पा० | हिन्दु धाजार |
| सु० | स्तयक | हिं० श्या० | हिक्का एवास |
| सु० | श्री लिंग | हरीत० निघं० | हरीतक्यादि पिघट्ट |
| सु० | स्थान | हृ० का० | हुम्मियात कानून |
| सु० मे० (५०) | स्वर भेद | हृ० द्रो० | हृदोग |
| सु० | हजारा | हृ० श० | हृमचन्द्र |
| सु० | हजारी | हृ० म० | हृयादि तन्त्र टीका |
| सु० | हजारायुध | हृ० | हारपाधि |
| सु० | हलीमक | हृ० | H H Wilson |



Explanation of the Initials and Names Attached to the Botanical names and Synonymes.

Ach or Achar—E Acharius, author of *Lichenographia universalis*

Adans—M. Adanson, author of *Histoire naturelle du senegal*, etc

Ait or Aiton—W, author of *Hortus Kewensis*, &c

Balfour—Dr J H, author of the *Class Book of Botany* &c

Benth—M Bentham, author of *Labiatorum genera et species*, and *Schorophularineae Indicae*, &c

Berk —Berkeley, a Botanist or naturalist

Bj or Blum—O L. Blume, author of *Iora Javanensis*, Etc.

Br or R Br—R Brown, author of many Botanical works.

Burm —N L. Burmann, author of a *Flora Indica*

Cav.—A J Cavanilles, author of *Icones et descriptiones plantarum* Etc

Chois or choisy—A D Choisy, a Swiss Botanist who elaborated several of the *Natural Orders* for De Candolle's *Prodromus*

Colebr —H T Colebrooke, author of several *Memoirs* in the *Linnean Society's Transactions* Etc

Colladou—Author of *Histoire des Cassioe*

Corr—J Corrêa de serra, author of some botanical papers

Dalz—N A Dalzel, one of the authors of *Bombay Flora*.

DC —A P De Candolle, author of numerous botanical works

Dec.—De Candolle, Fil (Son of De Candolle)

Delile—A R author of *Florae de Aegyptiacoae Illustratis* Etc

Desv —N A. Desvax, author of some botanical papers and editor of the '*Journal de Botanique*'

Don—D, author of the *Prodromus Florae Nepalensis*, Etc

Duch —A P Duchesne, author of *Histoire Naturelle des Fraisiers*, Etc

Dunal—M. F., author of *Monographie de la famille des anonacees*, Etc

Endl —S Endlicher, author of *genera plantarum secundum ordines naturales dispositae*, Etc

Fabr—P O Fabricius, author of *Enumeratio methodica Plantarum Horti Medici Helmstadensis*, &c

Falc or Falconer—Dr H., author of some botanical papers.

Forsk—P Forskaol, author of *Flora Aegyptico-Arabica*, Etc

Forst.—Forster, author of a *Flora*, Etc

Goertn —J Goertaer, author of '*De Fructibus et Seminibus*'

G Don—Editor of a new Edition of *Miller's Gardener's Dictionary*

Grey—De Greville

Gris.—G Grisley, author of *Viridarium lusitanicum*, Etc.

Ham —Dr. F. Hamilton (formerly Buchanan), author of a 'Journey to Mysore' and some botanical papers.

Haw —A H. Haworth, author of *Synopsis plantarum Succulentarum*

H B, et K.—Humboldt, Bonpland and Kunth, authors *Nova genera et species*, Etc.

Herbert—H. W. Herbert, author of 'Herbert's *Amarillidaceae*' Etc.

H, et T.—Drs. J. D. Hooker and T. Thompson, author of a *Flora Indica*, etc.

Heyn or Heyne—B. Heyne, a Botanist or Naturalist.

Hook or Hooker—Dr. W. J. Hooker, author of *Botanical miscellany*, and of his (Hooker's) *Journal of Botany*.

Jack—Dr. W. Jack, author of some papers on Penang plants, Etc.

Juss—Bernard de Jussieu, author of *Genera plantarum*, Etc.

Koen, Kon or Kon—J. G. Koenig, a Danish Botanist.

Kth. or Kunth—A. Prussian Botanist.

Labill—J. J. Labillardiere, author of *Icones Plantarum Syriae rariorum decades*.

Lam.—J. B. Lamarck, editor of the botanical portion of *Encyclopaedia in thodica*.

Lehm—J. G. O. Lehman, author of *Plantae familiae asperipolarum nuciferae*, Etc.

Lesch.—Leschenault de la Tour, & Director of the botanical garden at Pondicherry.

Lindl or Lindley—Dr. J., author of *the Vegetable Kingdom* Etc.

Link—H. F., author of *Philosophia botanica novae prodromus*, Etc.

Linu —Carl von Linnæus, the founder of Botanical Science.

Maton—Dr. W. B. Maton.

Meisn, or Meissner—Leon Fred. Meissner, author of some botanical papers.

Miers—J. Miers, author of a work. Miq, or Miquel—F. A. W., a Botanist.

Mill—P. Millers, author of *the Gardener's Dictionary*.

Moench—O. Moench, author of a few botanical works.

Mull or Mull—Otto Fred. Muller, author of some botanical works.

Nees—G. G. Nees von Eabenbeck, author of several botanical works.

Oliver—G. A., author of a botanical work.

Pavon—J., author of a botanical work.

Pell—Pelletier, author of some botanical papers.

Pers—O. H. Persoon, author of *Synopsis plantarum seu enohridium botanicum*, Etc.

Planck—A. Botanist.

Pohl—J J author of 'Brazilian plants' Etc

Retz.—A J Retzius, author of Fasciculus Observationum Botanicarum Etc

Risso—A, author of Histoire naturelle des Oranger

Roem or Rom et schult.—J J Roemer, and J A Schultes, authors of Linnœi systema vegetabilium, Etc

Rose or Roscoe—W Roscoe, author of Monandrian plants of the Order Scitamineæ

Roth—A W author of Novae Plantarum, and several other works

Rott—Dr Rottler, an Indian Botanist

Roxb —Dr W Roxburgh, author of Flora Indica, and plants of the Coromandel Coast, Etc

Roy of Royle—Dr J F Boyle, author of the Illustrations of the Botany of the Himalyan Mountains, and of a work on the fibrous plants of India

Salisb —R. A Salisbury, author of the Prodromus Londinensis, Etc

Sav or Savi—O, author several botanical work

Schott—H author of a few botanical works

Schrad.—H A Schrader, author of many botanical works

Seb or Schult—O F Schultz, au

thor of Prodromus Florae Stadenensis, Etc

Seb —A Seba, author of a book

Ser —N C Seringe, who has elaborated several difficult Tribes in Candolle's Prodromus

Sm or Smith—Sir J E Smith, author of Several botanical works

Spr or Sprengel—K. Sprengel author of Systema Vegetabilium, and many other botanical works

Stocks—author of some botanical Papers in Hooker's Journal of Botany

Stok —J Stokes, author of Botanical Materia medica.

Swt —R Sweet, a Botanist

Swz. or Swartz—O Swartz, author of Prodromus Descriptionum Vegetabilium Indicae Orientalis, Etc

Thunb —O P Thunberg author of Flora Japonica and many other works

Tourn —J P Tournefort, author of Elements de Botanique, Etc

Vahl—M, author of Symbolae botanicae, Etc

Vent or Ventn —E P Ventenat, author of Principes de Botanique, Etc.

Vill or Villars—D, author of Histoire des plantes du Dauphine, Etc

W et A —Dr B Wright and Mr G A Walker Arnott, author of the Prodromus Florae Peninsulae Indicae Orientalis.

Gris.—G Grisloy, author of *Viridarium lusitanicum*, Etc.

Ham —Dr. F Hamilton (formerly Buchanan), author of a 'journey to Mysore' and some botanical papers

Haw —A H, Haworth, author of *Synopsis plantarum Succulentarum*

H B, et K.—Humboldt, Bonpland and Kunth, authors *Nova genera et species*, Etc

Herbert—H, W Herbert, author of 'Herbert's *Amarillideae*' Etc.

H, et T —Drs. J D. Hooker and T Thompson, author of a *Flora Indica*, etc

Hayn or Heyne—B, Heyne, a Botanist or Naturalist.

Hook. or Hooker—Dr W. J Hooker, author of *Botanical miscellany*, and of his (Hooker's) *Journal of Botany*

Jack—Dr W author of some papers on Penang plants, Etc.

Juss—Bernard de Jussieu, author of *Genera plantarum*, Etc.

Koen, kon, or kon—J, G, Koenig, a Danish Botanist.

Kth. or kunth—A. Prussian Botanist.

Labill—J J, Labillardiere, author of *Icones Plantarum Syriae rariorum decedens*.

Lam.—J, B, Lamarck, editor of the botanical portion of *Encyclopaedia methodic*.

Lehm.—J G O, Lehman, author of *Plantae familiae asperipoliarum nuciferae*, Etc.

Lesoh —Leschenault de la Tour, a Director of the botanical garden at Pondicherry

Lindl. or Lindley—Dr J., author of the *Vegetable Kingdom* Etc

Link—H F, author of *Philosophia botanicae novae prodromus*, Etc

Linn —Carl von Linnaeus, the founder of *Botanical Sarcocoe*

Maton—Dr W E Maton

Meisn. or Meissner—Leon Fred. Meissner, author of some botanical papers.

Miers—J Miers, author of a work
Miq. or Miquel—F. A W, a Botanist.

Mill —P. Millers, author of the *Gardener's Dictionary*.

Moen.—O moonob, author of a few botanical works.

Mull or Mull—Otto Fred Muller, author of some botanical works

Nees—G G Nees von Esenbeck, author of several botanical works.

Oliver—G A., author of a botanical work.

Pavon—J., author of a botanical work

Pell—Pelletier, author of some botanical papers

Pers—Q. H. Persoon, author of *Synopsis plantarum seu enchridium botanicum*, Etc.

Planoh—A. Botanist.

- Pohl—J J author of 'Brazilian plants' Etc
- Retz.—A J Retzius, author of *Fasciculus Observationum Botanicarum* Etc
- Risso—A, author of *Histoire naturelle des Oranger*
- Roem or Rom et schult.—J J Roemer, and J A Schultes, authors of *Linnæi systema vegetabilium*, Etc
- Rose or Roscoe—W Roscoe, author of 'Monandrian plants of the Order Scitamineæ
- Roth—A W author of *Novae Plantarum*, and several other works
- Rott.—Dr Bottler, an Indian Botanist
- Roxb —Dr W Roxburgh, author of *Flora Indica*, and plants of the *Coromandel Coast*, Etc
- Roy or Royle—Dr J F Royle, author of the *Illustrations of the Botany of the Himalyan Mountains*, and of a work on the fibrous plants of India
- Salisb —R A, Salisbury, author of the *Prodromus Londinensis*, Etc.
- Sav or Savi—C., author several botanical work,
- Schott—H. author of a few botanical works
- Schrad.—H A Schrader, author of many botanical works
- Sch or Schult—C F Schultz, author of *Prodromus Floræ Stadgardensis*, Etc
- Seb —A Seba, author of a book
- Ser —N C Seringe, who has elaborated several difficult Tribes in D Candolle's *Prodromus*
- Sm or Smith—Sir J E Smith, author of several botanical works
- Spr or Sprengel—K Sprengel author of *Systema Vegetabilium*, and many other botanical works
- Stocks—author of some botanical Papers in Hooker's *Journal of Botanical Materia medica*
- Stok —J Stokes, author of *Botanical Materia medica*
- Swt —R. Sweet, a Botanist
- Swz. or Swartz—O Swartz, author of *Prodromus Descriptioinum Vegetabilium Indicæ Orientalis*, Etc
- Thunb —O P Thunberg, author of *Flora Japonica* and many other works
- Tourn —J P Tournefort, author of *Elements de Botanique*, Etc
- Vahl—M, author of *Symbolæ botanicæ*, Etc
- Vent or Ventn —E P Ventenat author of *Principes de Botanique*, Etc
- Vill or Villars—D, author of *Histoire des plantes du Dauphine*, Etc
- W et A.—Dr R Wright and Mr G A Walker Arnott, author of the *Prodromus Floræ Peninsulae Indicæ Orientalis*

Wall — Dr N wallich, author of
 plantis Asiaticis rarioris, and Tent-
 amen florae Nepalensis Illustratio

Wadd — Weddell, author of Histoire
 naturelle des quinquinais

W. Li. not — Sir, author of Flora
 Andhrica

Wight — Dr R, author of Icones
 Plantarum Indiae Orientalis, Illustra-
 tions of Indian Botany, and Contribu-
 tions to Indian Botany, Etc

Willd — O L Willdenow, author
 of Species Plantarum, and several
 other works

अक्षर विवरण ।

ह्रस्व

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|----|---|----|----|----|----|----|----|----|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः |
| a | a | i | i | u | u | e | ai | o | ou | an | ah |
| آ | ع | آ | إي | أ | او | إي | آے | أو | أو | ان | اھ |

व्यंजन

| | | | | | | | | | | | | |
|----|----|---|----|----|----|----|-----|----|----|---|----|---|
| क | ख | ग | घ | च | ट | ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द |
| k | kh | g | gh | ch | ṭ | ṭh | ḍ | ḍh | ṇ | t | th | d |
| ک | ق | گ | ع | چ | ٹ | ٹھ | ڍ | ڍھ | ڻ | ت | تھ | د |
| क | ख | ग | घ | च | ट | ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द |
| kh | x | g | gh | ch | ṭ | ṭh | ḍ | ḍh | ṇ | t | th | d |
| ک | خ | گ | ع | چ | ٹ | ٹھ | ڍ | ڍھ | ڻ | ت | تھ | د |
| ध | न | प | फ | ब | भ | म | य | र | ल | व | श | |
| dh | n | p | ph | b | bh | m | y | r | l | v | sh | |
| دھ | ن | پ | ف | ب | بھ | م | ی | ر | ل | و | ش | |
| | | | प | ख | ह | ह | ख | व | ज | | | |
| | | | sh | s | h | h | ksh | tr | iy | | | |
| | | س | س | ھ | ح | | | | | | | |

निहामो, अन्नजात्र, तनासुल जाहिरो (प्रधानतः स्त्री के) स्त्री जननेन्द्रियाँ (याम्) हि० Pudendum

प्रअजात्र कैलूसियह (An zan Kailaasyah) أعضاء كليلسيه अ० आलात कैलूसियह ।

प्रअजात्र खादिमिह (An zan Khadimih) أعضاء خاديميه अ०, सेवा करने वाले अयय, वे अयय जो किसी अन्य अयय की सेवा करें, यथा-आमाशय जो यकृत की सेवा करता है अर्थात् भोजन से शुद्ध आहार रस (कैलूस) तैयार करके यकृत की ओर भेजता है । अथवा शिराएँ जो यकृत से आहार तथा प्राकृतिक शक्ति को ले जाकर अययों से विभाजित करती हैं ।

अअजात्र खादिमहुरईसह (Anzan khadimahurraisiyah) أعضاء خاديميه ايسيه अ०, उत्तमाङ्गों की सेवा करने वाले अयय यथा-धमनी जो हृदयकी सेवा करती है, शिराएँ जो यकृतकी सेविका उक्त हैं और मादी जो मस्तिष्क की सेवा करती है अर्थात् उक्त अययों की प्रधानशक्तियोंको अन्य को ओर पहुँचाती हैं ।

अअजात्र गिजा (An zan ghiza) أعضاء غيजा अ०, आहा रेन्द्रियाँ, आहार सम्बन्धी अयय अथवा आहार को ग्रहण करने वाले अयय, यथा आमाशय, अंत्र और यकृत आदि ।

अअजात्र गैर रईसह (An zan ghair raisi) أعضاء غير ايسيه अ०, वे अयय जो न स्वयं किसी की सेवा करते हैं और न कोई उनकी सेवा करता है ।

नोट—किसी अयय का यह विचार है कि शरीरमें कुछ ऐसे अयय भी हैं जिनमें जीवन और पोषण की स्वाभाविक शक्ति विद्यमान है तथा उत्तमाङ्गों से उनमें क ई शक्ति नहीं आती, यथा अस्थियाँ । किन्तु, स्वतन्त्र हकामोंका यह पंथ नहीं और वास्तविक यत्न भी यही है । शरीर में कोई एक अयय भी ऐसा नहीं जो अन्योन्याध्यय न हो अथवा जिनमें स्वामी से एक भाग विद्यमान न हो ।

अअजात्र तनफूस (An zan tanaffus) أعضاء تنفس अ०, आलात तनफूस । स्वासोच्छ्वासोन्मिह (Respiratory or gans) अअजात्र तनासुल (An zan tanasul) أعضاء تناسل आलात तनासुल जननेन्द्रियाँ हि० । Reproductive organs हि० ।

अअजात्र तायडपह (An zan ta baiyyah) أعضاء طبعيه अ०, प्राकृतिक शक्ति संबन्धी अयय, यथा जननेन्द्रिय तथा आहारोन्द्रिय ।

अअजात्रह तर्फिय (An zan tarfiyah) أعضاء طرفيه अ०, शाखायय, वे अयय जो शाखाओं में स्थित हैं, यथा-हस्तपाद आदि ।

अअजात्र दम्बियह (An zan damviyyah) أعضاء دمويه अ०, रक्त से उत्पन्न होने वाले अयय, रक्त अन्य अयय, यथा-माला वा यसा

अअजात्र नफज (An zan nafs) أعضاء نفس अ०, शारीरिक मूल को निकालने वाले अयय, यथा-अंत्र, धूक, धस्त्रि, लिंग,

गर्भाणु की प्रीया और गुदा, प्रसूति । एषस
 कोरटी अंगण (Excretory organs) १० ।
 अश्रुजात्र पसीतह (Azaa basitah)
 اعراض १०, अश्रुजात्र मुफ्रिदह
 अश्रुजात्र यौल (Az aa bouh)
 اعراض १०, अश्रुजात्र यौल ।
 मूत्रेश्रियो मूत्रसन्धान दि० Urinarysystem
 अश्रुजात्र मर ऊसह (Azaa mara
 aih) اعراض १०, वसमांगों से लाम
 उठाने पाल अरपप ।
 अश्रुजात्र मुश्राविहलुल अश्रुजा (Az
 aa matshabbatalhja) اعراض १०, अश्रुजात्र मुफ्रिदह ।
 अश्रुजात्र मुरन्विरपह (Azaa muar
 isy h) اعراض १०, अश्रुजात्र अस्त्रियह ।
 अश्रुजात्र मुफ्रिदह (Azaa mufridah)
 اعراض १०, मुफ्रिदह अश्रुजात्र अश्रुजात्र
 पसीतह, अश्रुजात्र मुश्रविहलुल अश्रुजात्र यह
 अश्रुजात्र जो स्वयं अश्रुजात्र उसका कोई भाग
 नाम और वास्तविकता में अनेक हो अर्थात्
 पवि उरुन मुफ्रिदह (मौलिक धातु)
 का कोई भाग लेकर कहा जाय कि इसका
 क्या नाम और परिमाणा है तो उचर
 में घही नाम और परिमाणा बतलाई जाय
 ओ वास्तविक अश्रुजात्र के लिये कहा जाता है,
 उदाहरणतया-अस्त्रिय के एक घूम भाग कोमी
 अस्त्रिय कहेंगे एवं मांस के सूक्ष्म भाग को
 मांस मुफ्रिदह अश्रुजात्र (मौलिक धातुओं)
 की संख्या १० है, यथा- अस्त्रिय, उपास्त्रिय
 धा कुरी (Cartilodge), माड़ी मांस
 पेसी, पमनी, शिरा, कसा (किहो), संधि व

धन (बधनी, स्नायु रज्जु) और कण्डप ।
 धीरसे उरपत्र होते हैं इसलिये इनको अ
 ज्ञात्र मुश्रिव्यह (शौकाश्रुजात्र) कहते हैं ।
 इनमें से वयर्षी धातु लहम (मांस, गोष्ठ)
 शहम (वसा) तथा समीन (मोटापा रूपका)
 की गणनामी इसीमें होती है । ये तीनों शोषि
 से बनते हैं । रोम तथा नख की गणना वस
 शारीरिक मजों में होती है । किन्तु किसी
 इनकी गणना भी अश्रुजात्र मुफ्रिदह में कि
 है । टिपरयो-अश्रुजात्र मुफ्रिदह की रक
 को अरयो में नरन (५० व०) और मसा
 (५० व०) तथा अयुर्वेद में तन्तु
 अंगरेजी में टिशु (Tissue) कहते
 प्रत्येक भाँति के तन्तु विशेष प्रकार के में
 (कोषों, घटकों पीसों) के परम्पर मि
 द्वारा बनते हैं । अस्तु, अस्थि, म
 रग तथा नाड़ियों की रचना मुख्य मु
 भाँति के सेहों के पारस्परिक मिलाप
 होती है । इसका विस्तृत पक्ष तन्तु श
 (histology) में होगा ।

अश्रुजात्र मुरकपह (Azaa mur
 abal) اعراض १०, अश्रुजात्र अ
 यद, मुरकाब अश्रुजात्र । संयुकाश्रु
 ये अश्रुजात्र जो अश्रु मुफ्रिदह (अ
 तन्तु धातु) के पारस्परिक मेल से
 हैं । उदाहरणतः-वस्तु अस्त्रियो, रणों नाडि
 और मांस पेशियों तथा लवचा के मिलाप
 बनता है । इस भाँति के अश्रुजात्र का यदि
 भाग लिया जाय तो वह अश्रुजात्र परिमाणा
 नाम में सम्पूर्ण से निश होगा, यथा-बाप
 अस्त्रिय अश्रुजात्र मांस इत्य नहीं रहतायेग

अश्रजाश्र मुहिम्मह्, (An zān mulim mah) أعضاء منقذة अ०, अश्रजाश्र शरीफह् ।
अश्रजाश्र रईसह्, (An zān raisah) अ०, أعضاء उत्तमाह्ण एक्स्ट्रा Extra ह० । जीवनापार भूत अश्रयय अर्थात् ये अश्रयय जिनपर जीवन अवलम्बित हो । ये चार हैं, यथा (१) हृदय, मस्तिष्क, (३) यकृत और (४) मुरक (पुरुपायइ), लिङ्ग और शुक्राशय । इनमें से प्रथम तीन महत्त्वपूर्ण जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं, क्योंकि ये क्रमशः प्राणशक्ति (फुट्यते हयात, फुट्यते हैवानी), चेतना शक्ति (फुट्यते नफुत्तानी) और प्राकृतिक शक्ति (फुट्यते तयई) अर्थात् शारीरिक पोषणशक्ति अश्रययों को प्रदान करते हैं । इनमें अन्तिम के जनने शिथिल सत्यन्धी अश्रयय स्वजाति रक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक है ।
अश्रजाश्र शरीफह् (Anzan Sharifah) أعضاء شریفه अ०, शरीफ अश्रजाश्र, अश्रजाश्र मुहिम्मह्, अहम अश्रजाश्र । ये अश्रयय जो अपने वाय की महत्ता के अनुसार उत्तमाह्णों के समीप कक्षा का अधिकार रखते हैं । इनकी गणना उनके (उत्तमाह्णों) के पीछे होती है, यथा—फुफ्फुस, आमाशय और अंत्र इत्यादि ।
अश्रजाश्र सदरियह् जाहिरह् (Anzan Sadriyyah Batinah) أعضاء صدریه ظاهره अ०, यद्योर्थाह्ण हि० । यकृत के ऊपर के अश्रयय, यथा—मातृय मासपेशियाँ और स्तन प्रभृति ।
अश्रजाश्र सदरियह् बालिनह् (Anzan Sadriyyah Batinah) أعضاء صدریه باطنیه अ०, यकृतपरस्थ अश्रयय, यकृत से भीतर के अश्रयय, यथा—हृदय और फुफ्फुस आदि ।

शारीरिक विसरी (Thoracic visceroe) ह० ।
अश्रजाश्र सौत (Anzan sout) أعضاء صوت अ०, आवाज के अश्रजाश्र 'शब्देन्द्रियाँ', शब्दोत्पादक यंत्र, यथा—स्वरयंत्र डेंडुवा (श्वासपथ) और फुफ्फुस इत्यादि । आगंख आफ् पाइस [Organs of Voice] ह० ।
अश्रजाश्र हज्म (Anzan Hazm) أعضاء هضم अ०, पाचक यंत्र, पाकायय, यथा—आमाशय, यकृत, मासारीकइ इत्यादि । टायजेस्टिव आगंख [Digestivo organs] ह० ।
अश्रजाश्र हर्कत (Anzan harkat) أعضاء حرکت अ०, 'आलात हकत' ।
अश्रजाश्र हिस्स (Anzan Hiss) أعضاء حس अ०, 'आलात हिस्स' ।
अश्रजाश्र हैवानियह् (Anzan Haivaniyyah) أعضاء حیوانیه अ०, जीवन शक्ति सम्बंधी अश्रयय, प्राणिक शक्ति से सम्बन्ध रखने वाले अश्रयय, यथा—हृदय वगैरहमनी प्रभृति ।
अश्रनप (Annab) أعضاء انساب अ०, जिसकी मासिका पड़ी और सम्बन्धी हो ।
अश्रनश (Annash) أعضاء انش अ०, ह्रींगा, ह्रीं गुर, ह्ः अंगुलियों वाला ।
अश्रनाक (Annaq) أعضاء انقاق अ०, (य० य०), उ (अ०) नक (ए० य०), प्रीघा, पार्दन हि० ।
अश्रिक्स Corvix, नेक्स Neoks ह० ।
अश्रफज (Anfaz) أعضاء انفج अ०, तौदीहा, मेंदयुक मेदावी, स्पृज, यह व्यक्ति जिसकी तौद निकली हो ।
अश्रफर (Aafar) أعضاء انفار अ०, सफेद साकी, मैला, सुफेद ।

अन्नफोज (Anfa) **اعمال** अ०, आन्त्र-हि० ।
 Intestines, Entrails
अन्नमश (namash) **امش** अ०, जिसके नेत्र
 जल से खाय होता हो ।
अन्नमा (Anma) **اعما** अ०, नापीना, कोर-
 फा० । अन्न, अन्न, नेत्रहीन हि० । Blind ।
अन्नमाश (य० य०) और **अमा (खी०**
हि०) ही ।
अन्नमाले विद्युद् (Annalo-bilyad)
اعمال अ०, हस्तकिया, 'शरप' हि० । वस्त्र
 कार-फा० । (Operation)-३० । छेदन विद्या
 व्यपश्चेद् शास्त्र । साहय कामिनाके बचनात्सारा
 इसके तीन भेद हैं, (१) रग, (२) मांस की
 की काट छोट, जैसे रक्तमोक्षण, महतर देना,
 पूषक् करना (काटना छोटना), दागना और
 टांके लगाना इत्यादि और (३), अस्थि को
 पया स्थान बिठाना, टूटी अस्थि को जोड़ना,
 और स्थानरूपत अस्थि की संधि को बिठाना
 इत्यादि ।
अन्नमिदतुला मिन्मरीन (Annidatul
minkharin) **اميد** अ०, 'नासामध्य
 परदा' शरीर मनुष्यों के मध्य का परदा-हि० ।
 (Nasal Septum)-३० ।
अन्नयाश (Aayaa) **اعيا** अ०, (१) दूधना,
 यकाबद (२) हाथ पैर दूधना, शरीर-का
 धर जाना ।
अन्नयून (Aayun) **اعون** अ०, मसूरित
 बस्तु, वह मनुष्य, जिसके नेत्रकी पुनर्लियाँ फैल
 गई हों ।
अन्नरज (Anraj) **اراج** अ०, 'अन्नरज', लुह-
 हि० । (Lamo)-३ ।

अन्नराज (Aarax) **اراض** अ०, (य० य०),
 अर्ज (य० य०), रोग के लक्षण । (Sympt
 oms) ३० ।
अन्नराजे नफसानिद्यह (Aaraxo nifsa-
nilyyah) **اراض** अ० इम्फिआलाते
 नफसानिद्यह । 'अस्तः ह्येन' मनोविकार,
 आत्मा में होने वाली वशाये हि० । ये छः हैं,
 पया (१) शोक (२) क्रोध, (३) भय, (४)
 आनन्द, (५) लज्जा और (६) चिन्ता । ३ ।
अन्नरा (Anala) **انسا** अ०, शयकोर फा० ।
 'नकाय' यह मनुष्य जिसको रतींधी का रोग
 हो । (Nyctalopa) ३० ।
अन्नसाय (Annab) **انصاب** अ०, (य० य०),
 बसय (य० य०) नाडियाँ, धान या बोधतन्तुयें
 (वेजो-नाडी)-हि० । (Nerves)
अन्नसाय उब्जिरयह (Annab-ujziyyah)
 नाडी, 'रुक्थि **انصاب** अ०, अन्नसाय
 सुनीन । मितय (विक) नाडी । ये धातु तन्तु
 सुपुम्नाकाण्ड से निकल कर मितम्पास्थि-से
 बाहर आते हैं । ये संख्या में ५ आड़े आते हैं
 इनकी शाखायें उर, टांग, या पाँव के मांस पे
 शियाँ तथा त्वचा में फैला व खंडा बहाती हैं-
 (Sáoral Nerves)
अन्नसाय उनुकियह (Annaba unūkh
yyah) **انصاب** अ०, अन्नसाये गन्तः
 फा० । शीघ्र नाडियाँ-दि० । (Corvsoal
 nerves)
अन्नसाये कलनिरयह (Annabo-qatniyy-
ah) **انصاب** अ०, अन्नसाये कमर-फा०-
 कटि नाडियाँ हि० । (Lumbar nerves)

अशसाधे जहरिय्यह (Asabe-Zahriy yah) اعصاب ظهريه अ०, अशसाधे पुरत-फा० पृष्ठ नाडियाँ-हि० । [Dorsal nerves]

अशसाधे दिमागिय्यह (Asabo-dima ghiyyah) اعصاب دماغيه अ०, मास्तिष्क नाडियाँ-हि० । [Cranial nerves]

अशसाधे नुखाह्यह (Asabe nukha-ryah) اعصاب لظهر اءه अ०, सौपुल नाडियाँ-हि० । (Spinal nerves)

अशसाधे मुरककह (Asabe murakka bah) اعصاب مركبه अ०, मिश्र नाडियाँ-हि० । मिश्र नद्यंज (mixed nerves)-हि० ।

अशसाधे शिकिय्यह (Asabe shirkiy yah) اعصاب شريكه अ०, अशसाधे शिकी, अशसाधे हम्परी । धिगल नाडियाँ हि० । Sympathetic nerves-हि० ।

अशसाधे हर्कत (Asabo harkat) اعصاب حركت अ०, हर्कती-अशसाध । चालक नाडियाँ, चेष्टावहा नाडियाँ, गतिसम्बन्धी नाडियाँ-हि० । (Motor nerves)

अशसाधे हास्सह (Asabo-hasaah) اعصاب حسه अ०, विशेष चेतना सम्बन्धी नाडियाँ-हि० । Special senses nerves

अशसाधे हिस्स (Asabe hiss) اعصاب حس اءه अ०, हिस्स के पुष्टे व० । सांवेदिक नाडियाँ, चेतना सम्बन्धी नाडियाँ-बोध अथवा ज्ञान तन्तु हि० । Sensory nerves हि०

अशमिनी (Agrimonia)-मंत्रं, राज मूल-परागीस-अ० । Agrimonia Rup-

atorium, Linn-ले० । फाँ० हि० १ मा० । अहता (Aita)-गों, मरोड़फली-हि० । Helo-cteres isora, Linn-ले० ।

अहदा (Aida)-अ०, हीरायोफी-हि० । इ-म्मुल अरब्येन-अ०, हि०, याजा० । Draoac-na cinnabari, Balif ले० । फाँ० हि० ३ भा० ।

अहँपा (Aindha)-र० प० सू० । हर्पू खल्ला । अजहार आसा० । Lagerstromia. Flos-reginæ, Roxb-ले० ।

| | |
|------------------|---|
| अहन (Ain)-मह० | } आरुनवृक्ष, साज, स-दरी-हि० । पियासाल-ब० । To- rminalia Tomen- tosa ले० । हि० मे० मे० । मेमो० । |
| अहनी (Aini) कना० | |

अहर (Air)-हि०, फरीदवृदी । I arseta-
Aegyptia ले० ।

अहरन (Airan)-पम्प अरती, उरिन, पियम हि० । Olerodendron Phlomodis ले०
हि० मे० मे० ।

अहरन मूल (Airanmul) यन्त्र०, 'अरती' अग्निमय्य । Premna Integrifolia ले० ।
हि० मे० मे० ।

अहरसा (Ahrasa) अ०, पुष्करमूल, पद्यपुष्कर सं० । इरसा (Irasa)-हि० । Iris Flor-entina ले० । Orris root हि० ।

अहँस (All) अथ० हि०, 'सातला' । सीकी (के) कार्द-व० । कोचै-यं० । Acaela Concinna, D. C. ले० । हि० मे० मां०, फा० हि० १ म० ।

अण्डजा (Anja) वर०, 'शरीफा, सीताफल',
आत-दि० । Custard apple (Anona
a namosa ।

अणुनी (Anuni)-पर्ण०, रासन, अणुनील शामी
Inula Helonium, Linn । फा० इ०
२ भ० ।

अणुत्तरक (Anurak)-पं० छद्दीला-दि० ।
See-Oblarila

अणु (An) वत्स०, 'अणु' [Ovam] । 'गर्भ'
(Embryo)

अणु (An) } वर०, (ए० व०) 'कम्ब'-दि०
। Bu b or
अणु (U) } Tuber । ए० फा० इ० ।

अणुमियाआ (Anumya a) वर०, (ए० व०)
अमियाआ (Umia a) कम्ब दि० । Bul-
bs, Tubers इ० । ए० फा० इ० ।

अणुतुमती (Anitumati) सं० स्त्री० अणु
प्रावमती, रजालोपा, अनासयमती (Unw
enstruating woman) ।

अणुगरवल्ली (Aogar va'lli) ता०, 'घारक
रेता-दि० । Momrdico Dioion, Boxb
से० । इ० मे० मे० ।

अणुदकुल सीमिषेट्टु (Aedskul Riti Oh
citu) वे०, 'छातिम', सतपण, छतिबन्-दि०
Alstonia Scholaris से० । इ० मे० मे० ।

अणु (Aedu)-ता०, कना०, भेड़, सेप-दि० ।
Ship । इ० मे० मे० ।

अणु (Aendu)-ता०, 'अकवट्ट', पमाड-दि०
(Onasia Tora) इ० मे० मे० ।

अणुरिलम्पाल (Aerilampal)-मल०, सत

पण, 'छातिम' Alstonia Scholaris से०
इ० मे० मे० ।

अणुलि सत्पावई (Aeli lappalai) ता०
सतपण, 'छातिम' (Alstonia Schol aris)
इ० मे० मे० ।

अणु (Anshu) सं० पु०, अंस, स्कन्ध, भुजशि-
र (Shoulder) भाग, बाँट, प्रथक, दिन मू
परिधि का इ० वाँ भाग, पिभाग, दर्जा,
अंश । डिग्री (degree)-इ० । इसका संकेत
चिह्न इसमकार (०) है ।

अणुकूट (Ansh kut) सं० पु०, अंसकूट,
स्कन्धफलक । (Acromion process) ।
वा० शा० ४ अ० ।

अणुमर्म (Ansh marmma)-सं०, स्त्री०
स्कन्ध सन्धिस्थ मर्म, स्कंध मर्म । सु० शा०
३ अ० ।

अणुश (Anshalsh)-सं० भि०, मांसल,
स्वूल । कॉर्पुलेण्ट (Corpulent) इ० ।-

अणुवान् (Ansh van) सं० पु०, सोमजता ।
The moonplant or Acid Sarcoste
ma (S Viminalis) । वे०, 'सोम' । सु०
शि० २६ अ० ।

अणुश (Anshansh)-दि० पु०, भाग का
भाग ।

अणु (Anshi)-दि० पु०, भागी, बाँटने वाला
अणु (Anshu) सं० पु०, सप्या, सूर्य किरण-
रश्मि, तेज । मे० शक्ति ।

अणुक (Anshuk)-दि० पु०, रेशमीपत्र, र-
शिमसमुदाय ।

अशसाये जहरियह (Asabe-Zahriy
yah) اعصاب طعمه अ०, अशसाये पुस्त-फा०
पृष्ठ नाडियाँ-दि० । [Dorsal nerves]

अशसाये दिमागियह (Asabe-dima
ghiyah) اعصاب دماغه अ०, मास्तिष्क
नाडियाँ-दि० । [Cranial nerves]

अशसाये नुखाहियह (Asabe nukhan-
iyah) اعصاب نخاعيه अ०, सौपुल नाडियाँ-
दि० । (Spinal nerves)

अशसाये मुरककह (Asabe murakka
bah) اعصاب مركبه अ०, मिश्र नाडियाँ-दि० ।
मिश्र नर्वज (mixed nerves)-दि० ।

अशसाये शिकियह (Asabe shirkiy
yah) اعصاب شريكه अ०, अशसाये शिकी,
अशसाये समुत्थी । विगल नाडियाँ दि० । Sy
mpathetic nerves-दि० ।

अशसाये हकती (Asabe harkat)
حركات اعصاب अ०, हकती-अशसाह । जालक
। नाडियाँ, चेष्टायहा नाडियाँ, गतिसम्यन्धी
नाडियाँ-दि० । (Motor nerves)

अशसाये हास्सह (Asabe-hassah)
احساس اعصاب अ०, विशेष चेतना सम्बन्धी
नाडियाँ-दि० । Special senses nerves

अशसाये हिस्स (Asabe hiss) حس
اعصاب अ०, हिस्स के पुहे स० । सांवेदनिक
नाडियाँ, चेतना सम्बन्धी नाडियाँ-योग अ
थवा ज्ञान समुत्थी दि० । Sensory nerves दि०

अशमिनी (Agrimonia)-फ्रा०, अज
सुल-परागीस-स० । Agrimonia Eup-

atorium, Linn-ले० । फा० ई १ मा० ।
अहता (Aita)-गो०, मरौडफली-दि० । Holo-
tores isora, Linn -ले० ।

अहदा (Aida)-अ०, हीराकोष्ठी-दि० । द-
मुल अरबैन-अ०, हि०, बाजा० । Draoac-
na oinnabari, Balif ले० । फा० ई०
इ मा० ।

अईचा (Aindha)-उ० प० सू० । हरपू
चदला । अजहार भासा० । Lagerstroemia
Flos-reginae, Roxb-ले० ।

| | |
|------------------|---|
| अइन (Ain)-मह० | } आसनपृष्ठ, साज, स- वरी-दि० । पियासाल-स० । Te- rminalia Tome- ntosa ले० । ई० मे० मे० । मेमो० । |
| अइनी (Aini) कना० | |

अहर (Air) हि०, फरीदपूटी । I arsetra-
Aegyptia ले० ।

अहरन (Airan)-यम्ब अरनी, उरिन, पिरम
हि० । Clerodendron Phlomoidea ले०
ई० मे० मे० ।

अहरन मूल (Airanmul) यम्ब, 'अरणी'
अक्षिमण्य । Promna Integrifolia ले० ।
ई० मे० मे० ।

अहरसा (Airasa) अ०, पुष्करमूल, पञ्चपुष्कर
सं० । ईरसा (Irasa)-हि० । Iris Flor-
ontina ले० । Orris root ई० ।

अईल (All) अय०, हि०, 'सावला' । सीकी (के)
फाई-स० । कोसै-स० । Aonola Conoinn-
D. C. ले० । ई० मे० फ्रा०, फा० ई० १ म० ।

अउजा (Auja) वर०, 'शरीफा, सीताफल,
आत-दि० । Custard apple (Anona
s uamosa) ।

अउनी (Aunee) फ्रां०, रासन, जञ्जरील शामी
Inula Helenium, Linn । फा० इ०
२ न० ।

अउसरक (Ansarak)-पं० छड़ीला-दि० ।
See-Chharila

अऊ (Au)-पत्य०, 'अण्डा' (Ovum) । 'गर्भ'
(Embryo)

अऊ (Au) } वर०, (पं० व०) 'कम्ब'-दि०
। Bu'b or
ऊ (U) } Taber । स० फा० इ० ।

अऊमियाआ (Aumiyaa) वर०, (पं० व०)
ऊमियाआ (Umiyaa) वर० दि० । Bul
bs, Tubers इ० । स० फा० इ० ।

अशतुमती (Aritumati) सं० स्त्री० अश
प्रातवमती, रजोशोषा, अमाशयमती (Unw
enstruating woman) ।

अएगरवल्ली (Aegar va'li) ता०, 'घारक
रेला-दि० । Momrdico Dioica, Roxb
ले० । इ० मे० मे० ।

अएककुल रीतिखेदु (Aedakul Riti Ch
ettu) पे०, 'छातिम', ससपण, छातिवन, -दि०
Alstonia Scholaris ले० । इ० मे० मे० ।

अएडु (Aodu)-ता०, कना०, मँड्र, मेप-दि० ।
Sheep । इ० मे० मे० ।

अएण्डु (Aenda)-ता०, 'अण्ड', पमाडु-दि०
(Ovum Tori) इ० मे० मे० ।

अएरिलम्पाक (Aerilampal)-मत०, सस-

पण, 'छातिम' Alstonia Scholaris ले०
इ० मे० मे० ।

अएलि लप्पालई (Aeli lappal) ता०
ससपण, 'छातिम' (alstonia Schol'aris)
इ० मे० मे० ।

अंश- (Ansh) सं० पु०, अंस, स्कन्ध, मुजशि-
र (Shoulder) भाग, बाँट, प्रथक, दिन, भू
परिधि का ३६० वाँ भाग, विभाग, दर्ज, अंश
अंश । डिग्री (degree)-इ० । इसका संकेत
सिंह इसमकार (°) है ।

अंशकूट (Ansh kut)-सं० पु०, अंसकूट,
स्कन्धफलक । (Acromion process) ।
वा० शा० ४ न० ।

अशमर्म (Ansh marmma)-सं०, ऊर्ध्व
स्कन्ध सन्धिस्थ मर्म, स्कन्ध मर्म । सु० शा०
१ न० ।

अशल (Anshalak)-सं० भि०, मांसल,
स्यूल । कॉर्पुलेण्ट (Corpulent) इ० ।

अशवान् (Ansh van) सं० पु०, सोमलता ।
The moonplant or Acid Sarcoste
ma (S Viminalis) । देको, सोमा । सु०
शि० २६ न० ।

अशाश (Anshansh)-दि० पु०, भाग का
भाग ।

अशी (Anshi)-दि० पु०, मागी, बाँटने वाला

अशु (Anshu) सं० पु०, तुम्हा, सूर्य किरण-
परिम तेज । मे० शक्ति ।

अशुक (Anshuk)-दि० पु०, रेणुमीयक, र-
विमनमुदाय ।

अंशुकम् (Anshukam) सं० क्ली०, तेजपात-
तज-हिं० । दालचीनी म० । Cinnamon
Tamal (The leaf of Laurus Ossia
ले० । गुणधर्म-जघ्नु, मधुर, पिच्छिल, किंचित्
तीक्ष्ण, उष्ण तथा कफ घात, अग्नि, दृक्सास, अ-
स्थि और पीनस को मष्ट करता है । भा० पू०
१ भा० । विपन्न, वल्लिशूलप्र तथा मुख्य और
मस्तक का शाधन करने वाला है । रा० नि०
घ० ६ । अत्रशयस्त्र । मे० फथिक ।

अशुकायः (Anshu kayah) सं० पु०, प्रवाल
आदि । (Oral (Corallium Rubrum) ।

अशुजाल (Anshujal) -हिं० पु०, रश्मि स-
मुदाय ।

अशुधर (anshudhar) हिं०, पु०, सूर्य, अग्नि,
चन्द्रमा, वीपक, देवता, ब्रह्मा मनापी ।

अशुपर्णिका (anshuparnika) } सं० स्त्री०
शालपर्णी ।
अशुपर्णी (anshu parni) } ganga-
t-
icium ले०
श० १० ।
देखो अंशु-
मती ।

अंशुमती (anshumati) -सं० स्त्री०, शालपर्णी
सारियण हिं० । (Medysarum gangeticum
शालपाणि, दालानी-सं० । साक्षयण, भूशोयगा
म० । सत्पाङ्गपोष, उत्शापलि-ते० । गुणधर्म
वासमी, प्रादिशी और कफ पिच्छी । ख० द०
गुरु, रस में तिक्त यातन तथा विपन्नघ्न, प्र-
मेह, अशु, शोक (सूजन) और सन्नापहर ।
र० नि० घ० ४ । गुरु तथा यमन, उपर, श्वास

और अतिसार नाशक एवं शोष और घात-
पिच्छ तथा कफ प्रभृति दोष त्रय को हरण क-
रने वाली तथा रसायन है । मद० घ० १ ।
भावभिध ने इसे घातुवर्धक लिखा है । भा०
पू० गु० घ० । "मेचकं चांशुमायाः" । वि० क०
क० वल्ली । देखो, तेजपात ।

अशुमतीफला (anshu mati phala) -सं०
स्त्री०, कदलीवृक्ष, केला हिं० । Musa Sa-
pientum । भा० पू० १ भा० क० घ० ।

अशुमत्फला (anshumatphala) -स०
स्त्री०, कदलीवृक्ष, केला । Musa Sapient-
um । रा० नि० घ० ११ ।

अशुमान् (anshu man) सं० पु०, सूर्य
चन्द्रमा । सोमवत् गुण के कारण 'सोमलता'
(The moonplant) विशेष को कहते हैं ।
देखो-सोम । और एक राजा का नाम है ।

अशुमाली (Anshumali) -हिं० पु०, सूर्य, चं-
द्रमा, अग्नि, वीपक ।

अंशुदकम् (Anshudakam) -सं० क्ली०, हंसो-
वक, जिस जलाशय के ऊपर सम्पूर्ण दिवस
सूर्य की किरणें तथा रात्रि में चन्द्रमा की कि-
रणें पड़ती हैं उस जलाशय के जल को अंशु-
दक अथवा "हंसोदक" कहते हैं । उक्त जल
एवं नादय जल शरदः ऋतुमें विशेष रूपसे हित
कारी होते हैं । अंशुदक जल स्निग्ध, विशेष ना-
शक अभिष्यन्दी नहीं मित्रोप अन्तरिक्ष जल के
सदृश, बलकारक रसायन रूप में घा की हित-
कारी, शीतल, हलपा और ऋतुके सदृश है ।
सु० सु० ४६ अ० धारि० घ० । भा० पू० १ म० ।
मद० ८ द० । रुमनाशक, दिप्त, रमी, दाह,

अहस (anhas) सं०, पु०, पाप, स्वयमंत्याग,
अपराध, पातक । Sin, fault, crime ।

अक्षिः (anhnih)-सं० पु०, पाद, तरुमूल,
जड़ । (Root) अम० ।

अक्षिपः (anhnipah) सं० पु०, वृक्ष, पेड़
(Tree) । इत्त० ।

अक्षि स्कन्धः (anhn skandhah) सं०
पु०, गुल्फ, गट्टा । (Malleolus) पायेर
गुल्फे, गुल्फमुद्गो-वं० । हे० च० ।

अकथक (aqanq) عاقق अ०, मधुना पत्ती,
एक प्रति रू पत्ती है । असकथ, काशलाह-फा०

अकथः (aknolah) सं० शि०, केय शुभ्य,
बाज रहित-दि० । बाल्ड (Bald) इ० । आर
माथा नेडा-वं० ।

अकज (ahaj) झमकर और बकौल अन्नकत
का नाम ।

अकटा (akata)-दि०, पु०, चट्टर । प्रेवल
(Gravel) इ० ।

अकतना अकतनस (aqtana aqtanas)

अकतना अफलास (aqtana aflas)
यु०, 'झमकर' इत्त० ।

अकतनार अनीकी (aqtanar aniqi)

अकतना लूकी (aqtana luqi यु०, शुकाई ।
Shukai)

(२) वादावर्द (Volutorella Liva
rionta, Benth) ।

अकत्मास [aqatmas] عاقق अ०, शराय
या अंगूर का पानी ।

अकत्मारुन [aqat marun] यु०, सुरिखान
Hermodactylus [Hermodactyl]

अकताकूनी [aqataluni] यु०, 'वादावर्द'
(Volutorella L varicata Benth)

अकती (aqati)-यु०, खमान कबीर ।

अकतीखस (aqtisus) यु०, 'उंगलो मूली'
(The wild Radish)

अक्त (akta)-सं०, मालिच ।

अकती (akatti) ता०, मल०, अगस्त्य,
'अगस्तिया' दि० agati Grandiflora ।
इ० मे० मे०

अकतुल मलिक (aqatal malik) पन्थ०,
इफलीलुल मलिक अ० । नय, 'नाम्बूना' दि० ।
Trigonella Uncata, Boiss Conmar-
inum

अकदह (aqadah) मिश्र, जरिरककी लकड़ी
दारुदरही, दि० Berberis asiatica D O
wood

अकदूनिया (aqaduniya) यु०, जीहरी
जवाहन, किरमाला, अफुलशीतुल पदर, दर
मनह Wormseed

अकन (akan) الك दि०, आक, मदार,
अकौद, Calotropis Gigantea Procera
R Br सं० फा० इ० ।

अकन (aqan)-अ०, बद्ध, बगल-फा० ।
कलाहलि, कलकुगन्धि, दि० । यह व्यति
मिलके कल से दुर्गन्ध आती हो ।

अकनक [akanak] الك अ०, सुरिखान
कडुमा । Hermodactylus 'bitter'

अकनादि (akanadi)-वं०, पाठा, अन्वष्ट
Ossampolbs Pereira

अकनुस- (Aqnu) यु०, नासपाती (Pyrus Communis)।

अकन्द्रा (-Akanda) हि०, मदार, आक (Orotropis Gigantea B. Br)

अकफ (Aqaf) ملك अ०, गिन्जुलमिन्द, मिस्मार पेनुसमकह कुर्म। शगर, अहन, गहुह, टेंड, यह एक प्रकार का चर्म रोग है जिसमें साधारणतः पाँवके अँगूठेकी संधि अथवा छुगुनीकी सन्धि की खचा फटार और स्पूल हो जाती है और अना पहिन कर चलते समय ब्यथा होती है। कान (Corn), क्लेस (Olarus)-इ०।

अकब (Aqab) كلب अ०, पै, ठाँठ, नस जिससे घट्टय का चिह्ला बनाते है।

अकबर (Akabar) عسبر अ०, मोम मेह।
A kind of beeswax

अकबरुस (akabarus)-यु०, कमी और हिन्दी मेइसे यह वृक्षो प्रकारका होता है। इनमें से कमी को अकबरुस अर्थात् "गोध कहरपा का वृष" कहते हैं।

अकम [Aqam] عقم अ०, बन्ध्या अर्थात् धर्म होना। गर्भ स्थिर न होना। Sterile

अकमाउर्रमान (-Aqmaurraman-) البهار امان अ०, अमार की छाल या अमार वृक्ष की कली जिसमें फल लगता है। Pomogranate bark or bud

अकमाउर्रमानुख हिन्दी (Aqmaurramanul-hindi) البهار امان العلى अ०, मागकेसर-दि० (Mesua Ferrea)।

अकपाकैकून (Aqavaqailun)-रु०, खिप यता। Chirata

अकयान (Aqayan) اقاان अ०, शुख स्वर्ण।
प्योर गोल्ड Pure gold इ०।

अकयास (Aqayas)-यु०, इन्दरसारुन।

अकयूस (Aqayus)-यु०, अमरुद (Guava)

(२) नासपाती (Pyrus communis)।

अकर (Aqar) الر अ०, तिलछद्, तैल कीट।

रसाव, दुब, गाद, गदनापन, तैल आदि की गाद। सेडिमेण्ट [Sediment] इ०।

अकरकपेटकी (Akarkantak)-यम्ब०, डेरा, अङ्गोल। Alangium Decapetalum

अकरकपेटा (Akarkanta) (Alangium decapetalum इ० मे० मे०। यम्ब० डेरा, अङ्गोल,

अङ्गोल,

अकरकरतून (Aqarqartun)-मु० गिले

अकरतिस, [एक प्रकार की मिट्टी है]।

१-अकरकरम (Akarkarabh)-रु० यु०,

अकरकरा। See Akarkara

२-अकरकरमादि पूर्ण-अकरकरा, सोंठ, कं-

कोल, केरुद, पीपर, जायफल, लौंग तथा श्वेत

चन्दन इन्हे कर्प २ मरजे, पूर्णकर कपडु छान

कर, पश्चात् अहिफेन शुद्ध १ पल मिश्री

(सिता०) सष तुल्य मिला पूर्णकर रक्षते।

माभा १ रवी शब्द के साथ यमि को कामी

पुरुष बाटे तो धीर्ष्व स्वस्मन हो। शा० सु०

म० ल० आ० ६, इतो० ४४।

अकरकरही (Aqarqarha) اكارقارح ا०,

(Pyrethri Radix) अकरकरा

अकरकरा (akarkara)-हि०, अकलकप।

अकलकोरो-रु०। आकारकरम अकलक

अकलकर, तीबलमूल और तीबलकीलक मधुति

पर्य इसके अनेक अन्य कल्पित संस्कृत

हीर शार्ङ्गधर प्रभृति ने जपमो पुस्तकों में इसका वर्णन किया है। अतः ग्रेको (शार्ङ्गं अनापादि, चू० १ अ०, भा० म० १ म० जय यमोयदो और पै० निघ०)। इसमें स्पष्ट बात बताता है कि भारतवासी वा इसका ज्ञान इस्लामी हकीमों से हुआ जिन्होंने स्वयं अपने ज्ञान यूनानवालों से प्राप्त किया। यूनानी हकीम दी स्कुरीदस (Dioscorides) ने पायरीथ्रम नाम से जिसमें पारसीय शब्द व्युत्पन्न है (और जिसको मुहाल अन्नम में "प्रेरियून" लिखा है) उक्त औषधि का वर्णन किया है। किन्तु, मधुसूतलु अहृषियद् के लेखक हकीम मुहम्मद हुसेन प यनातुसार इसका अरबी में "अहुलुहं जिम्ली" कहते हैं और यह सीरिया में बहामात के साथ पैदा होता है तथा अकरका के बहुशः गुणधर्म रखता है। इसका प्रमाण हेतु ये हकीम अन्ताकी का य चन उद्घृत कर कहते हैं, कि अकरका को प्रकार का होता है, प्रथम सीरियन (शामी) जिसका वर्णन दीस्कुरीदस ने किया है, और द्वितीय पार्श्वस्थ जो अफरीका और पार्श्वस्थ देशों में उत्पन्न होता है। उक्त यन्त्रस्थिति की आकृति, पत्र, शाखा और पुष्प स्थितपुष्पीय बाष्पा कपोर के समान होते हैं, पर, उसके (अकरका के) पुष्प पीतवर्ण के होते हैं। इसी की जड़ को अकरका और फारसी में 'पर्यतीय तखून' कहते हैं। हकीम अन्ताकी का उक्त वर्णन विद्यमान सत्य है क्योंकि पश्चिमी अकरका वास्तव में स्थानीय बाष्पी की जड़ है जिसका वैज्ञानिक नाम प्यथ्रेमिस पारसीय [*anthemis pyrethrum*] का

धातु प्राग्नेय बाष्पा या स्पेनिश कैमोमाइल (Spanish Chamomile) अर्थात् स्थानीय बाष्पा है जो इसी की जड़ हमारा उपयोग अकरका है जिसका वर्णन हो रहा है।

पानस्पतिक विवरण—यह अथर्व और भारतपर्य की मरिचि बूटी है [यह भंग ल और मिथमें भी उत्पन्न होती है] इसके छाटे २ छुप चातुर्मास को पहली घटा होते ही पर्यती भूमि में उत्पन्न होते हैं। इसकी शाखाएँ, पत्र और पुष्प सफेद बाष्प के सदृश होते हैं। किन्तु, बंडल पोती होती है। गुणरात और महाराष्ट्र देश में इस बंडी का अचार और लाग यनाते हैं। इसमें खोआके सदृश योज भाते हैं। डाली रोगदेवार और पृष्णों पर फैली हुई तथा एक जड़ में से निकल कर कई हो जाती हैं। उस डाली के ऊपर गोल गुच्छेदार छत्री के आकार का, किन्तु बाष्प से विपरीत पीले रंग का फूल होता है। डाली जड़ी २ और पुष्प प टल (Petals) सुफेद होते हैं। इसकी जड़ औषधि काय में आती है। ये खाँचे २ टुकड़े जिन पर कोई रेशा नहीं लगा होता, १-४ इ० (सन्धे अर्थात् एक यासिस्त) और भाँचे से १ इ० मोटे घेसनाकार गोल होते हैं। ऊपरके किनारे पर प्रायः ये रंग चर्मों की एक बोटी सी होती है। बाँध भाग घूसर वर्ण का तथा ऊर्ध्वदार होता है। इसको अर्धा से चौड़ा बर्तों से ढूँट आती है। गंध-विशेष प्रकार की। स्वाद—इस जड़ के जामे से गरमों मालूम होती है तथा अरबी और जिह्र अजने लगती है गोया यही इसकी मुख्य दवा है। इस की

चवाने से मुँह से लालाघ्रात होने लगता है और संपूर्ण मुँह पर्यं कंठ में छुनसुनाहट और कंठ से खुगले साधम होखे हैं। इसकी जड़ भारी (वजनदार) और तोड़ने पर भी तर से छुकेव होती है। इसमें शीघ्र कीड़े लग जाया करते हैं। परीक्षा-अकरकरा जड़ली कासनी की अड़ के सदृश होता है, किन्तु यह तिक एवं काखे रा की होती है।

रसायनिक संघटन-इसमें [१] एक स्फटिकयुक्त अलकलाइड [क्षारीय सत्व] अर्थात् पिरैथ्रिन (Pyrethrin), [२] एक रेजिन [राल] और [३] दो स्फार् सेल (Fixed oils) होते हैं।

प्रभाष-सद्यक लालानिस्सारक, प्रदाह जनक और फामोडीपक।

औषधि निर्माण-योगिक चूर्ण, पट्टिकायें और क्लक।

(१) अकरकरा ४ भाग, इन्द्रायन ३ भाग, नीसवार ३ भाग, छप्पजीरक २ भाग, कुटकी ४ भाग, और काळोमिर्च ४ भाग, इन सब को मिखा चूर्ण प्रस्तुत करें। अणुस्मार में इसको नस्य रूप से व्यवहार में लावे।

(२) अकरकरा ४ भाग, अणुफल ३ भाग, खौंग ३ भाग, दालचीनी ३ भाग, पिप्पलीमूल, फेयूर ३ भाग, अफीम १ भाग, मूंग ४ भाग, मुलेठी ४ भाग, मूशर, मूल त्वचा ४ भाग, शोयविडंग ३ भाग, और शबड ५ भाग, सब को चूर्णकर पट्टिका प्रस्तुत करें। मात्रा—आधी से २० रसी।

वृष्य-यथा क विह्विधायन, अगिना, संवे-

दमा दंतोन्नोद, अतीसार, उदरगल तथा घमन के लिये गुण धायक है।

आफिशल प्रियेपरेथज (ए० मे० मे०) टिङ्कचूरा पाहरीधूर्ई (Tinctura pyrethri) ले०। टिङ्कचर आंज पाहरीधूम (Tincturo of Pgrothrum) इ०।

निर्माणविधि-पाहरीधूम की अड़ का ४० न० का चूर्ण ४ आउंस, अलकुहाल (७०%) अवश्यवताहूसार। चूर्ण को ३ छुकर आउंस अलकुहाल में तर करके पके लियेन द्वारा एक पाईट टिङ्कचर तय्यार कर लेवें।

प्रयोग-यह वृत्त के वृष, गठिया, अणुस्मार, पक्षाघात, कफघात, तोतलापन और ज्वर, तथा अनेक अन्य रोगों में लाभ पहुँचाता है।

गुणधर्म तथा उपयोग-

अकरकरा-अकरकरा को चवाने से प्रथम दाह प्रतीत होता है। तत्पश्चात् शीघ्र छुनसुनाहट एवं सगसनाहट का घन होता है तथा अधिक मात्रा लाला की उत्पत्ति होती है, क्योंकि मौखिकी घमनी, यौधतगु तथा लाला प्रंधि पर इसका उच्छेजक प्रभाव होता है, पर थोड़ी देर पश्चात् माङ्गिणी शिथिल हो जाती है। अस्तु यह एक सद्यक लालानिस्सारक (पावर्कुल स्यालेगंग) तथा किञ्चित् अणुसभता अलक (अनस्येदिक) है। एक प्रभावों के कारण इसको प्रव पीडा, कव्वा घटफले (पीप्लिकस प्रयुक्ता) में और कंठयोध (घोर प्रोड) में मंजन, गुणदूर प्रसुति रूप से व्यवहार में लाते हैं। वृषपीडा में अकरकरा को पिच्छव वृत्त के नीचे रखने तथा चवाने से अ

धया इसका टिकघर तथा टिकघर आयोडीन दोनों समभाग सम्मिश्रित कर इसमें जरा सी कड़वा करके इसको थोखले पीड़ा युक्त दंत में रखने से वेदना शमन होती है। दो आउंस (१ ८०) जल में एक ड्राम (३॥ मा०) इसका टिकघर तैय्य कर इसका गंधुय कराते हैं। डाक्टर राय इसका योवाल्प्मार (ग्लोपस डिस्टेरिकस) में गुणदायी बताते हैं। (२० मे० मे०)

यूनानी अथकार—इसे तीसरी कक्षा के अन्त में और चतुर्थ कक्षा तक रखे मानते हैं। परन्तु, किसी २ मत से तीसरी और चतुर्थ कक्षा में शीतल मानते हैं।

वेद में जो सुहा (रुधिर आदि की गांठ ही) पड़ जाती है उसको थोखता, मस्तक को दुष्ट मल से शुद्ध करता तथा मस्तक के अवयव तथा कफ आदि को निस्संवेदु खमक (मिला) देने वाला है। अरिस्त (लक्ष्मा), पक्षाघात, कफवात पीड़ा के साथ गर्दन का लकड़ जाना, जोड़ों का ढीला होना, पित्तका पुन छाती, व्रत और सृष्टि वेदना, सूक्ष्मी, बर्तपर, शीतल, मरुति वाले की इन्फ्लू का शक्ति का, सुलकर पेशाब जाने को, अरिस्त के आतंय को तथा स्तनों में सूज, पसीने और पुर इन्सुख रोगों को पतल तथा सुहा सेर करने से काम पड़ेगा, है। मस्तक रोग, सृष्टि के रोग, वातवात (पुष्टे) के, मुख के और छाती के रोग में अकरकरा को अतुन तक में पीसकर मर्दन करने से काम होता है और इससे कुष्माण्ड, सुजवात, या बसिपन को,

अवयवों के पुराने रोगों को भी पूर्णक उप पांग गुणदायक होता है।

यदि अकरकरा के प्साथ को गरम २ मतस्क पर लेप और ताह २२ मर्दन करे तो मस्तक को गरम कर नजले को नष्ट करता है और यदि इसे मस्तगी या फसैली पस्तु क साथ चबाये तो जो मूगी रोग दूषित दोषों से प्रकट हुआ है वह नष्ट होता है। शहत के साथ अकरकरा सूख को खाटने से मूगी, शंघकार आना और पक्षाघात प्रभृति रोग नष्ट होते हैं।

अकरकरेके कपडुइन किये हुये बारीक सूख को सू पाने से नाक रुकना अपाष् श्वासा-घरोप बुर होता है और यदि इसको सिरके में मिश्रण दाव के नीचे रखें तो वन्तयल्ल नष्ट होवे और चबाने या जिह्वा बुरकने से जीभ की आर्द्रता बुर होकर तूतकाना नष्ट होवे।

इसके काय को मुख में रखने से हिलते प्रांत मुजबूत होते हैं। उक्त काय में सिरका मिला कर गंधुय करने से गले का फोड़ा, काग- का इटक काग तथा जीभ के लटकने (जो कि कफ के कारण होने) को साथ पड़ेचता है।

पीसकर-मर्दन करने से पक्षिणा जाता है। केवल अकरकरा या अकरकरा और फावा मिश्रण दोनों को गले में-दोरे से बांध बंदकाये, तो बच्चे की मूगी का आना बुर होता है। यदि एक रंगे कावे कुष्ट के बालों को और अकरकरा दोनों को बालक के पांच देवे तो इन्फ्लू में शैतन्यता हो तथा आमारय के रोग और खर नष्ट होवे।

[मधुक वर्ग - N. O Sapotaceae]

उद्भव स्थान—पश्चिमी द्वीप तथा भारत
 वर्ग के अनेक भागों में इसकी कृषि होती है।
 इतिहास व प्रयोग, आदि—पश्चिमी कि-
 नारों तथा बंगाल में फल के लिये। इसके पृष्ठ
 लगाये जाते हैं और फल बाजारों में विक्रय हेतु
 लाये जाते हैं। भारत वर्ग के अन्य प्रस्तों
 में यह कम होता है। पश्चिमी द्वीप एवं
 अमरीका में इसका छाल चरम तथा ज्वर-
 ममाव के लिये प्रयोग में लाया जाता है। इ-
 सका बीज तीन रसों की मात्रा [अक्षि-प्र-
 माण में यह विषैला प्रभाव उत्पन्न करता है)
 में मूत्रक है। भारतीयों में इसके फल की ब-
 हुत प्रसिद्धि है। वनका कथन है कि यदि इ-
 सके फल को पिचले हुए मफजान में रात्रि-भर
 भिगी रक्ता जाय और प्रातःकाल इसको-
 सेवन किया जाय तो यह पिच एवं ज्वर
 संघर्षी आक्रमणों से सुरक्षित रखता है।
 विवरण—इसकी सच्चा रक्तवर्ण की होती है।
 ऊपरी भाग घुसूर वर्ण का होता है। 'स्वाद'
 तिक्त और अत्यन्त कसेला। 'फल' बाहर से
 जलदा और बड़ाकार मोतर से पीताभायुक्त
 श्वेत, नम और गूदादार और पकने पर इ-
 सका स्वाद सेव के समान होता है। बीज
 काले रस के चमकीले बड़ाकार और लम्बे
 होते हैं।

रसायनिक संघटन—[१] लो रेजिन [Re-
 sina] जिसमें से एक रस में घुल जाता है,
 [२] कृपकीत [Tannin] ११ = मति-
 यत कीट [३] एक शारीर, सख, सेपोलीन

[Sapotino] जा. ईयर, मधुसार कीट
 सम्मोहिनी [Chloroform] में घुल जाता
 है तथा एमोनिया द्वारा अनेक लवणों से मिश्र
 होकर तल्लियायी हो जाता है। [१० मे०,
 प्ल०, फा० ६० र-मा०]

अकरासुलमालिक [Akrasul-malik]
 اکراسولک انعام एक हिन्दी वृत्तों का नाम है।
 कोई २ रंगफल को कहते हैं

अकररि [Akari] हि०, Dunal (seeds of)
 अरुडी । [२] पुनीरके बीज हि० । कखी, पं०
 अणिय पु० Withania (Pancoria)
 Coagulans ले० । ६० मे० मे०, फा० ६० र
 मा० सं० फा० ६० ।

अकरीतस मातस [Akritis matas]-पु०
 गुलेकलीकुल कुपुस ।

अकरुजैत [Akaruzait] اکرازیت अ०
 वेक या जैतून रस की तिक्तकृ- । सेडिमेण्ट
 (Sediment) ६० ।

अकरुट [Akrut] पं०, अकरोट [Juglans
 regia walnut ले० ।

अकरुलबहर (Akul bahr) अ०, मीया के
 लक्ष्य एक अद्र है जिसको लैफुषपहर भी
 कहते हैं।

अकरुस [Akrus] पु०, अकरुस, मधेकक-
 अस्तीके नाम से प्रसिद्ध है।

अकरोट (Akrot)-६०, अकरोट Juglans
 अकरोट्ट (Akrotta) वा० regifur (ज
 indt)-ले०-

अकरोफस (Akarofas)-पु० हीजा कसी-
 (६०)

अक्राकरा [Akakarā]-हिं०, करैला, फाकरा
 (Momordica Charantia, Linn) ल० ।
अक्राका [Aqqa] मि० एक मिश्र देशीय पृथ-
 का फल है ।
अक्राकाजिस [Aqqalis]-यु० 'चाकू' [श] Cassia absus ल० । फ० इ० १ भा० ।
अक्राकिया—गुणवर्ष—यूननी प्रथकारों के मत से अक्राकिया बालों को काला करता है । क्योंकि यह बालों को तरो को बुर करता है । सर्पों के फटे हुए हस्तपाद के लिये गुणदायक है, क्योंकि अपनी संकोचनीय शक्ति के कारण यह अत्रयों के चिच्छिन्न भागों को संकुचि-
 त्त एव एतद्वि-
 त्त करना है, अत्रयव को बलवान बनाता और इसे फटने से रोक्ता है । शालस (अंगुलवेड़ा) के लिये लाभदायक है, क्योंकि इसमें उपद्रव पैदा करता तथा मादा को लौटाता है । इसी कारण अन्य शोथों का भी लाभप्रद है मुह के छत्तों को बुर करता है क्योंकि उन रूतों को शुष्क करदेता है जो छत्त को पुरित नहीं होने देती । अपनी शुष्कता के कारण सर्पियों की शिथिलता को लाभप्रद है । दृष्टि को यत्नेता और उसे सुदम एवं तीव्रबनाता है क्योंकि यह नेत्र को गाढ़ी रूतों को जो रूढ़ को गाढ़ी करने वाली है, अभिशापित कर लेता है । धर्म आने में लाभ एवं शान्ति प्रदान करता है, क्योंकि यह आच को और मनों के यहाव को रोक्ता है । और माह्ला (नेत्रस्थ रक्तविन्दु) की औपचिथों में बाधा जामा ।
 क्योंकि यह दृष्टि को शक्ति प्रदान और इसको चिकित्सा में ओषध, भद्रक [अक्राका] औपचिया

आती है उनका पीडा से नेत्र का सुरक्षित रखता है । पान, अतुलेपन तथा वस्त्रि [हु-कना] रूप से प्रयुक्त करने से यह फल पैदा करता है । प्रवाहिका, रक्तात्मानर और रक्त चाय का गुण करता है । निम्नो पुर बाँच [गुदघंश] का असत्ता दशा पर लौटाता एवं उसको शिथिलता का बुर करता है, क्योंकि इस में संकोचक शक्ति तथा कृत्ता विमान होती है । उक्त अभिमाय हेतु इसको खिलाते हैं अथवा इसे लप रूप से उपयाग में लाते हैं । (नफो०)

अक्राकिया [Aqqiya] क०, यह यु-
 नानी शब्द अक्राकिया (akhija) से भरवा
 घनाया गया है युनागी भाषा में अक्राकिया
 कीकर को कहते हैं, किन्तु प्रामाणिक एवं
 विश्वस्त भरवा तथा फुरसा तिद्वी धंधों के
 मतानुसार यह एक सत्य है जो फल [यह
 मिश्र के एक फलक युक्त बूझ का फल है
 जो कीकर का एक भेद है । कीकर को फलियों
 से जो सरव घनाया जाता है उससे भी ये ही
 प्रमाय प्रगट हाते हैं] के रस से सैवार किया
 जाता है । निर्माण विधि—इसके फल और
 पत्तोंको कूट कर रस निचाड़ लें । पुनः इ-
 सका छानकर मन्दाग्नि पर यहां तक पकायें
 कि यह गाढ़ा हो जाये ।

विचरण—यह मारी बद्ध तथा विपयंघयुक्त
 होता है छोटे टुकड़े मकाय के सामने
 के रंगके मालूम होते हैं,
 लम्बाई लिये द्ये होते हैं ।
 दीक पड़ते

है। स्वाद-मधुर, कसेला और सुग्राह्यदार होता है। शातक जल में डालने से यह लुआय रूप में परिणत हो जाता है और इसमें पातामायुक्त धूलरथी अथवा मृगपन लिये हुये हरे रंग के कुछ पदार्थ बैठते हुये प्रतीत होते हैं। खानने के पश्चात् लुआय का रंग वधूर गौड़ क समान होता है।

प्रकृति—३ कक्षा में (अशुद्ध)। ठण्डा और ऊष्ण है। हानिकर्ता—रोग उत्पादक है।

वपनाशक—रागुन वादाम। प्रतिनिधि—चन्दन और रसोत। मात्रा—३३ मा०।

अक्राकिया या अक्राकिया के प्रभाव तथा

प्रयोग—कफ निस्तारक, वृद्धि-व्यवस्था-वेदना शामक, संकोचक, रक्त-व्यापक, मृदुताजनक और बलकारक। अन्न, प्रशालीस्य फलाभ्रों तथा जननेन्द्रिय वा सूत्र, सन्ध्यायी अपयवों पर इसका सर्वोत्तम प्रभाव होता है और इसी कारण अनीसार, प्रवाहिका, सूजाक नासूर, मोरपुगलत वस्त्रि प्रशह प्रभृति पि कारों में यह अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हाया है। पथ्ये अफोम तथा इनके कुछ यौगिकों को अपेक्षा पर कम प्रभावजनक होता है, तथापि उक्त अवस्था में, जब कि यह अक्राका उपयोग में लाया जाये समस्त यानस्पतिक तथा जनिष्ठ सकारक औषधियों से अधिकतर प्रभावकारक प्रमाणित होता है। जलोत्तर के साथ जब अतिसार एवं प्रवाहिका होवे तो अफोम और इसके प्रौषिक प्रायः हानिकर होते हैं। क्योंकि जिस मात्रा में वे अतीसार प्रभृति को रोक्ते हैं उसी अतृपात में ये जलोत्तर की वृद्धि करते हैं। इसी कारण

“अक्राकिया” मात्र रोगों में अफोम तथा ई-सके अन्य यौगिकों की अपेक्षा सर्वोत्तम तथा लाभदायी औषधि है।

अक्राकिया मसूल [घोया हुआ]—इसकी विधि इस प्रकार है—अक्राकिया को पानी में सरल करके ऊपर का पानी निधार कर टपका लें, और इसी प्रकार तब तक करते रहें जब तक कि पानी स्वच्छ साफ न दिखाई देने लगे तथा इसका रंग धंखगा न पल्प हो जाये। पश्चात् इसको टिकिया बना लें। उपयोग में लाने से प्रथम उक्त विधि द्वारा इसके घौने से यह और उत्तम हो जाता है। स० क०, १०, १०० में ० प्ला०, फा०, १०२ मा० स० न०।

वेद्या—वधूर।

अक्राकिया [Akakira]—फि०, १०, स०, हि० याजा। अक्राकिया—कज का गाढ़ा किया हुआ स्वरस [उसारह], कीकर का रस, रइ

अक्राकीर (Aqquir) १०० स०, (५० ५०), अजगर (५० ५०)। अड़ी वृदियां। हर्ब Herb—१०।

अक्राका (Akakha)—स०, पपोटन, गुनीर (एक भारतीय वृदी है।), फरकतज। Withania (Puncera) coagulans Dunal हें०

अक्राम (Aqam) १०० स०, अफोम। परया १०० वा पुरुप। स्टेपेड Stépid—१०।

अकार (Aqar) १०० स०, रागय, मद्य। या इन Wine—१०।

अकार अर्तनीसा (Aqar artanisa) १०० स०, अजगरसुको, वायक, अजगर १०० Ojolamen Persicum; Müller।

अकार आदम (Anqar adam) مقار آدم
 अ०, मैदा लकड़ो-हि० । मगस, मगसे-हिन्दी
 अ० । किल्लु फ़ा० । Tetrantha Roxbur-
 ghis, Nees (Wood of)-ले० । मुशैप्पो-
 येदि, मैदा लकड़ि, पिथिन पद्धर ता० । मरमा-
 मिदि, मैदा-ते० । कुकुर चिता-बं० । स०
 फा० ६० ।

अकारकांटा (Akar kanta)-हि०, डेरा,
 अंकोल । Alangium Decapetalum,
 Lam-ले० ।

अकार कोहान (Anqar kohan) عكار كوهان
 (१) अकरकरा (Pyrethri Radix) ।
 (२) ऊदे सलीय, फ़रधानिया-फ़ा०, अ० । ऊदे
 सालप हि० । Paeonia officinalis, Lin-
 nn, P. Corallina, Linn (male var-
 iety)-ले० ।

अकारतलून (Akar talun)-रू०, फारस देश
 में होने वाले एक लंगली वृक्ष का वीज है ।
 इस वृक्ष का पुष्प अत्यन्त लाल तथा नीलम्
 एवं सुन्दर होता है । स्वाद-मधुर ।

अकारवा (Aqarava)-रू०येया, जीरा भेद ।
 A kind of oumin seed

अकार सौसीनाई (Anqar-sousinai)
 सूर ईरला-हि० । पुकरमूळ, पशुपुकर-सं० ।
 Iris Florentina । Oris root-ई० ।

अकारा-रः (Akara, rah)-हि०, अषामार्ग,
 -बिरबिता । Aobyranthes aspera; Li-
 nn । फा० ६० ।

अकाराअरून (Anqara aarun) عكارا اررون
 । खिर०, असपण [एक पापेरु चूर्ण है या कभी

२ आंघ द्वारा और कभी खुस्ता की जड़से व
 नाया जाता है ।]

अकारीकून (Akariquun)-अंगली जैतून का
 वीज । Wild Olive oil seed-ई० ।

अकारून (Aqarun)-रू०, वज अ० । वष
 दि० । Acorus calamus, Linn ।

अकाल (Akal)-हि० पु० [१] दुर्मिष्ट, Fa-
 mine (२) असमय । प्रिमेचर Promature,
 अएटाहन्ती Untimely-ई० ।

अकाल (Akalah)-अ०, अक्लान, दिक्कह,
 लारिश-फ़ा० । कएड, आज, लुजली, मुजाहद
 हि० । मुरारदिस Praritis-ई० ।

अकालकुष्माण्डः (Akal kushmandah)
 सं० पु०, असमयमें होने वाला कुष्माण्ड, अत
 के अतिरिक्त होने वाला कुम्हड़ा ।

अकालकुसुम (Akal kusum)-हि० पु०,
 वेसमय फूलने वाला, वेसमय का फूल ।

अकालजम् (Akalajam)-सं०त्रि०, (Uns-
 ensonable) वेसमय उत्पन्न हुआ, यथा—
 “अकालजम्सुधिरसं न धान्यं गुणवत्तरमूतम् ।”
 अर्थात् वेसमय उत्पन्न हुआ धान्य स्वाद
 रहित और गुणहीन होता है । राज० ।

अकालजलद (Akal jalad) सं० पु०, वेस
 मयका पादक ।

अकालपुष्प (Akal pushpa)-सं० पु०,
 अकाल कुसुम । ये मौसम का फूल ।

अकालभोजनम् (Akal-bhojanam)-सं०
 क्री०, असमय भोजन अर्थात् भोजन के समय
 से पहिले अथवा समय पिताकर भोजनकरना ।
 गुण्य-इससे शरीर असमर्थ हो जाता है और
 इसकारण शिर धर्द, यिसूचिका, अलसक

और पिनायिका आदि रोग उत्पन्न होते हैं।
और रोगों की वृद्धि होने पर मृत्युमी होजाती है, जैसे—

“अनासत्राजेमुद्धानो ह्यसमयतनुर्नरः ।
सांस्तान्मर्याधीनवामोति मरुत्वाधिगच्छति ॥”
भा० पू० १ भा० १५१ श्लो० ।

अकालमृत्यु (Akal mṛtyu)—हि० स्त्री०,
अपफ मृत्यु । कुसमय की मृत्यु (संस्कृत में मृत्यु
पुक्ति है) । अन्याहस्ती डेथ (Untimely
death)—ई० ।

अकालवृष्टि (Akal-vṛṣhti)—हि० स्त्री०,
असमय की वर्षा । Untimely rain ।

अकालशयनम् (Akal-shayanam)—स०
श्लो०, असमय का सोना, ये समय की निद्रा ।
गुण—अकालशयन से कफ कृपित होता है
और प्रतिश्याय, पीमस, क्षय, सूजन, शिरोरोग
तथा अग्निमांस प्रभृति रोग होते हैं । पा० सू०
८ अ० १ हा०, अग्निः १ श्याम २३ अ० ।

अकालीम (Aqalim)—अ०, (य० ब०),
इक्लीम (य० य०), देश, भाग, स्थान—हि० ।
कपूरी Country—ई० ।

अकाशदेवी, (akashdevi) ई० ।

अकाश (स) पवन (Akash-a pavan)
द०, अकाशवेत, अमरवेत—हि० । कसू-
स्य० । Ousouta Reflexa ई० । मे० मे० ।

अकाशपवर, -री (Akash bavar, -ri)—हि०,
अकाशवेत । Ousouta Reflexa ।

अकाशपल्ली (Akash balli)—सं०, स्त्री०,
अकाशवेत । Ousouta Reflexa ।

अकाश (-स) वेत (Akash's bol),
हि०, अकाशपर्वरी, अमर-वेत—हि०, अका-

शयल्ली, क्षयल्ली, अमरपल्ली—सं० । अकाशवेत,
असोक्तता, अलुग्नी, वरी अलुगुलीकता-
य० । अफतोमूने० । हिन्दी पु०, अ० । कसू-
हिन्दी फ़० । कस्पुटा रिफ्लेक्सा (Ousouta
Reflexa,), केस्त्रिया फिलिफ़ोर्मिस (Cassytha
Fill-formis, Linn) ले० । डोडर
(Dodder)—ई० । कोशाम, इन्दिरायल्ली, नाम्दे
ता० । इन्द्रजाल, पाक्षीतिगे, पञ्चविगा—ते०,
सेल० । आकाशपल्ली—मल० । वेल्डुपल्लि, नेलमु-
वपल्लि, श यिगे श्लि, अमरवल्ली, कना०, कर्ना० ।
अमरवेत, अमरवेत सोनवेत, अंगरोइल्का
मह० । अमरवेत—गु० । कोतम—द० । अन्ना
अङ्गी—सन्ता । मेरुमुदयल्ली—का० । अमरवेत—
क० । शियून—सु० । (कताधग, N O Con-
volvulaceae)

उद्भवस्थान—प्रायः समस्त भारतपय ।

विचरण—अकाशवेत सर्वथा एक पराश्रयी
कृता है जो डोरे को समान कीकर, घेर, अङ्गुले
हरयादि पृष्ठों पर आल की तरह फैली हुई
होती है । इसका तना गहरे हरित वर्ण का
होता है जिसपर लम्बाई के रूप पीली २ घा-
रियां पड़ी होती हैं । अंकुर से पतली अङ्गु-
निकल कर भूमि में प्रविष्ट होती है और तना
शीघ्र २ बढ़ने लगता है । इससे चोपकसूत्र (Su-
okora) निकलकर गिन्दस्य पृष्ठ की आलियों
में निश्च आहार हेतु मार्ग बनाते हैं और उक्त
पृष्ठ से आहार सम्बन्धी आश्रयकल्प, जैसे—
अन्न तथा लक्षण जो पृष्ठ में विद्यमान होता है
प्राप्त करते हैं । इसप्रकार की व्यवस्था होजाने
पर अङ्ग सूख जाती है और पुनः कृताका भूमि
से कोई भी सम्बन्ध नहीं रहजाया (ऐसे भी

इसक टुकड़े करके घुलौंपरुं टाज, दूने से यह उसपर बढने लगता है। यदि अकुर, को काइ उपयुक्त आचार न मिला तो भी यह सूज जाता है। सूक्ष्म परतों के अतिरिक्त इसमें पत्ते नहीं होते और नही इनसे उनका कोई लाभ ही है। तनेको काटकर देखने पर घाहर मजबूत नाली वार जेशे और मध्यमें मृदुगुदा दीख पड़ता है। पुष्प ज्येष्ठ रग के आते हैं। पुष्प, पाहायण (Sepala) को हटाने पर शीघ्र ने मटर के आकार के गालाकार बीज, निकलते हैं। वर्षा काल में इसकी बेल उगती है तथा एक ही वृक्ष पर प्रतिवर्ष पुनः नवीन हाती है। इन्ही कारण इसका "अमुरखेल" (Immorta) कहते हैं तथा यह वृक्षों के रूप हाती है और इसका मूमि से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। इसकारण इसको आकाशवेक आदि जाम से पुकारते हैं। इसका लटिन नाम - कस्युटा (Cuscuta) कसू से, आ अप्सीमून (अकास बेल बिलायती) का अरथो पर्याय है, प्यु रूप है। देजो—अप्सीमून। उपरुक्त दामों लटिन पर्यायों में से प्रथम अर्थात् कस्युटा 'बान्धाक्युलेसीई' यगका तथा द्वितीय अर्थात् कैस्त्रिया "लारेसीई" (Lauraceno) यग का बीजा है। छोटी २ भेदों के कारण इसको बहुत सी जातियाँ हो गई हैं। अतः इसमें से किसी के बँडल पीले और किसी के लाल होते हैं, किसी के फल पड़े और किसी के छोटे होते हैं। इसी प्रकार और अनेक भेद प्रमेदकी पाते हैं। युनानी-डकीम क्रिस् औपधि को काम में लाते हैं यह अप्सीमून नामसे, फारस प्रभृति देशों से, भारतवर्ष में आया है।

प्रयोगांग—सम्पूर्ण बीजा, बीज (तुमैरसूस) और तना।

रसायनिक संघटन—कसुटान (Quercetin), राल और एक प्रकारका कारोय सल्फ्यूसीन या कसुटान (Cuscutin) जो शुक्तिक तथा ईथर और क्लोराफम में घुलनशील हाता है।

प्रभाव—अकासबेल को जो गुण वैद्यक प्रयोगों में मिलते हैं अप्सीमून व प्रायः वे ही गुण युक्त। ग्रंथोंमें पायेजाते हैं। यद्यपि यद्यो प्रसिद्ध युनानी निघण्टु "मन्त्रजुल्लु अश्विपत्र" के लेखक मोसुहम्मदकुसन ने तो इसके गुण अप्सीमून सहज ही बखन किये हैं। अतः सब सम्मत

इसके मुख्य २ गुण धम निम्न प्रकार हैं—वर्धक, पित्त, कफ, तथा आमनाशक अर्थो मस्तिष्कविकार तथा-उन्माद, मूच्छा आदि अलाम्बायक रक्तशोथक हृदयका हितकारी शुष्कक नेत्र रोग नाशक, अग्निारण, पित्तिलुघु घ्राही, घनकारक, संसाधन और दिव्योपवी है। इसका पञ्चमयाण (पुष्टिरूप में स्थानीय वेदनाशोक तथा कषुद्र है।

स्वाद—मधुर, कड़वा, कटिना और खरपरत औपधि निर्माण—शोथकपाय, कोष, सू और पुनर्दिस। मात्रा—४ रत्नी से १० तक तक। अर्पनाशक-लेप, कटीप, यार्दामरोगन प्रतिनिधि—कालो नियोग या विशफायक

अकासबेल बिलायती (Akas-bel-vilayati), दि०, अकाशतेह भेद। अप्सीमून अ० [Oasuta Reflexa]

अकासमुषी (Akas-mugri) को, सपपाय

रुष्यकली, गुल-अम्बाल-फ़ा० । Mirabilis Jalappa, Linn. से० । Four o' clock flower इ० । इ० में० में० ।

अकाहुली (Akahuli)-हि० अंधाहुली, अंध पुष्पी । Triohodesma Indicum-से० ।

अकिल (Aqit) الحظاء, ठस पत्तीरका कहते हैं आ बही का पानी टूटाने क पखास रोन रहता है उसमें जवख मिलाकर शुष्क कर लेते हैं ।

अकितान (Aqitan) القطن यु० या यम०, मूग हि० । Phaseolus Mungo-से० ।

अकितमाकिन (akitamait) الحنظل अ० सिंद, कच्छुवा, करबजो, कटकरख-हि० । कुयेराहा फबम्-स० । ख पदे-इन्डीस-फ़ा । Cassia inin (gmelandina) bonduollina, Jinn [Nut of Bonduo nut] । स० फा० इ०, फा० इ० ।

अकिय (naqib) الناب अ०, (१) 'पापिह' पड़ी हि० । पारसह-परा० । Calais, Heol । (२) 'सधियमन' स्नायुजम्-हि० । रियात, طر अ० [Ligament] इ० ।

अकीक [aqiq] الحنظل अ०-अगोट agate इ० यह एक प्रकार का खनिज पत्थर है आ कई प्रकार का होता है । इनमें पगनी पीसायायुक्त एक शरीय, इसके पश्चात् पीत पुन र्धेन व शीय सर्वोत्तम हाता है । किसी २ इकीम के विचार में यद्मन के रंग का अर्थात् लोहित पर्ययावा सर्वोत्तम होता है ।

शुष्कधर्म-अङ्गक हृद्य और मूर्च्छा, शोक, रक्तसाय, प्लोदा नीर यद्मन क सुदौ तथा

अश्वरी को मष्ट करन वाला है । इन्में नेत्र में लगाने से नेत्र ज्योति की वृद्धि होती है । 'इसकी मसम' अश्वरोक रागों क अतिरिक्त उषमाज्ञो को बलप्रद, कामाक्षोपक और शुष्क को गाढ़ा करती है । उबरी में इसका उपयोग कामदायी सिद्ध होता है । पुष्पतन सूत्राफ तथा मणों का पुरिन करता है ।

नोट-चूं कि यह एक अत्यन्त कठोर पत्थर है अस्तु इसके मसमोकरण में यह प्रयत्न करें, जिससे यह बिलकुल आटे की तरह बारीक पिस जाय और इसमें करकपहट अथशेय न रह । उक्त अभिप्राय हतु इसको धूरियों क अल में देर तक धरल करं तिलकाभि देत रहे ।

अकीकह [aqiqah] الحنظل अ०, मधुआ तथियु के शिर् का याल ।

अकीकूल पहार - Aqiqul bahar] الحنظل अ०, जियापुष्प ।

अकीक्य [akikhi] الحنظل अ०, राद, 'अँध', -सांत । [Intestines] ।

अकीकुलु अनय [Anqidula nab] الحنظل अ०, मद्यमेव-हि० । मैज्जम-श० k (a kind of wine)

अकीदून [Akidun]-ऊ०, सुम, सुर । हृन् a [Cloven]-hoof-इ० ।

अकीम [aqim] الحنظل अ०, यक्ष्या, बाँक, बाड़े पुत्र्य हा अयया खो । स्टेराइल [Sterilo]-इ० ।

नोट-बाँक पुत्र्य वट है जिसके पीप में गर्मोत्पादक शक्ति न हो और यक्ष्या खो वट है जिसमें गर्म न ठहरे । अकीम शब्द यद्यपि

पुष्पिण वा स्त्रीलिङ्ग दोनों के लिये प्रयोग में लाया जाता है, तथापि कमी स्त्रीलिङ्ग के लिये अक्रोमह् शब्द को उपयोग में लाते हैं।

अक्रोमह् (Anqumah) ۱۰۰۰ अ०, अक्रोमह् स्त्री।
स्टेराइल वुमन (Sterile woman) १०।

अक्रोमूज (akimuz) ۱۰۰۰ अ०, अक्रोमूज।
यह शब्द एकिमोसिस (Echymosis) से व्युत्पन्न है, जिसके माने वे घिड़ हैं जो खोट प्रभृति के कारण अंगों तथा में रक्त के जमने से एक अथवा नीलवर्ण के पड़ जाते हैं, जैसे-नेत्र का लाल बिन्दु।

अकीर (Aqir) ۱۰۰ अ०, तिक्ततम, अत्यन्त कटु (कटुशुभा)। वी मास्ट बिटर 'The most bitter' १०।

अ (ए) कीरैन्थीस आक्टर्निफोलिया (achyranthes alternifolia) -ले०।
अक्रान्ठनी, गंगादी (तिया), 'उतरन'-हि०।
१० हैं, गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस आक्टर्नैट लीव्ड (achyranthes alternato leaved) १०, गंगादी, 'उतरन'-हि०। १० हैं गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस आक्ट्युजी फोलिया (achyranthes obtusifolia, Lamb) -ले०, 'अपामार्ग'-हि०। The prickly chaff flower-१०। १० में प्ला०।

अ (ए) कीरैन्थीस इण्डिका (achyranthes Indica, Roxb) -ले०, अपामार्ग-हि०। १० में प्ला०।

अ (ए) कीरैन्थीस एस्परा (achyranthes aspera, Lind) -ले०, अपामार्ग, सटजीरा-

हि०। स० फा० १०, १० से० से०, १० में० प्ला०, मेमा०, १० हैं० गा०, फा० १० २ मा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, क्लाइम्बिंग (achyranthes, climbing) -१०, नूरिया (Scandens, Roxb) १० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, ट्रायेंड्रा [achyranthes, triandra, Roxb] -ले०, सांघी, शालग्रह्। १० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, थ्री स्टैमेण्ड [achyranthes, three stamened] -१०, सांघी शालग्रह्। १० हैं० गा०।

अ [ए] कीरैन्थीस, रफ [achyranthes, rough] -१० अपामार्ग, अगाय (-री), हलीम, महुड। १० हैं० गा०।

अ [ए] कीरैन्थीस लै नेटा [achyranthes lanata, Roxb] -ले०, चाया। १० हैं० गा०।

अ [ए] कीरैन्थीस लेपेरिया (achyranthes Laparia) -ले०, रकापामार्ग, लाल श्लोमा।

अ [ए] कीरैन्थीस वूली (achyranthes, wooly), १०, चाया। १० हैं० गा०।

अ [ए] कीरैन्थीस स्पिकेटा (achyranthes Spicata, Burm) -ले०, अपामार्ग। The prickly chaff flower-१०। १० में० मा०।

अकीला (aqila) ۱۰۰॰ गोरह्।

अकीलिया कस्पिडेटा [achillea cuspidata, D O] -ले०, अश्रुकिण-बद्ध, हि० बाज़ा। रोज़मरी-बन्ध०। १० में० प्ला०।

अकीलिया टर्मिका (achillea Termica)

ले०, कृमिस गु०। जुम्बेदस्तर, [Castoreum]।

अकीलिया मास्केटा (achillea moschata)

ले०, यह आल्पपार्यन्तीय पौधा है जिसमें कस्तूरीबन्ध गन्ध होता है। इसमें उष्ण स्वेदक मक् तथा आरोग्य कारक प्रभाव होता है। फा० इ० २ भा०।

अकीलिया मिलीफॉलियम (achillea millefolium, L. na.)

ले०, बरिजासिफ, सूये-मादपान-फा०। मोमाद्व-ओपश्लिपा-काश०। परपर-मि०। स्त्र्युषर्त महोदय के कथमातृ सार यह बाजार में बिकने वाला एक पौधा है इसके पुष्प और पत्र औषधि कार्योंमें आते हैं। इ० मे० मी०, फा० इ० २ भा०, मेमो०।

अकीलिया सैन्टोलीना (achillea santolina, Linn)

ले०, बरिजासिफ-फा०। फा० इ० २ भा०।

अकीलीइक एसिड (achilleic acid)

इ०, बरिजासिफ या विष का तेजाय (aconitic acid) इ०। फा० इ० २ भा०।

अकीलीन (achillein)

इ०, यह अ० 'मॉस्केटा' द्वारा निर्मित एक क्षारीय सत्व है। फा० इ० २ भा०।

अकीलीन (Achilloin)

इ०, रक्तमायुक धूसर वर्ण का सत्व जो बरिजासिफ द्वारा प्राप्त होता है। फा० इ० २ भा०।

अकीलीस (squills)

गु० फरमिभिक, रोम तुलसी, अम्यल, (Ocimum gratissimum) ले०।

अकीसून (aqisun)

गु०, एक अपसिद्ध कष्टकमय वृद्धि है जो बादाधर्द के सदृश होती है और इस्पान (Spain) में उत्पन्न होती है।

अकुजीमडु (akuji madu)

ले०, यूकर, सेंडु। Buphorbia Nerifolia-ले०। इ० मे० मे०।

अकुप (akup)

फा०, मुकके मीतर, मुक की माली (Oesophagus)।

अकुप्यम् (akupyam)

सं० झी०, स्वर्ण, सोना। aurum। हला०।

अकु [कू] माली (aqu qu mali)

अ०, मादक अस्त्र। शहदजल, शहद का पानी या अन्य पदार्थ जिसमें शहद हल करके ओश नहीं दिया जाता। हनीवाटर Honey water इ०।

अकुरु (akuru)

सिगा०, गुड़ हि०। कम्ब फा०। गुड़-इ०। जैगरी Jaggery-(of sugar cane)-इ०। सं० फा० इ०।

अकुरु अरक (akuru-arak)

सिगा०, गुड़की शराब-हि०। गुड़की दाक, गुड़की शराब-इ०। Liqueur of Jaggery-इ०। सं० फा० इ०।

अकुला (akulah)

सं० पि०, निरसिप द्रव्य, बीजशय्य। अ० पि० २ अ०। लम्प कर्णहीन मध्यम अर्ध, यथा—"लम्बकर्णोऽजटश्लेष अकुलापरिकीर्तितः"। अ० ६ अ०।

अकुलबालसा (aquilla balsam)

अ०, रोमने बलसा-फा०। बलसाका तेल-हि०, ए०। Balsanum, var of (Balsam of Mecca or Balm of Gilead)-ले०।

अकुवोपलीसम् (agoroyala-samun)

अमृतं, अमृतं, दाह्युत्तु पल्लवो, रोगने पल्लवो-
फा० । पल्लव-का तेल-दि०, व० । Balsam
um । नौद-ययि उप्राक्त, शर पस्तुतः
शालसम आफ मफा (Balsam of Mecca),
के पर्याय है पर ये भारतीय शाल आफ को-
पेवा (Oil of Copaiva in India), के
लिये भी प्रयुक्त होते हैं । सं० फा० ३१ ।

अकूटः (- akūṭah) - सं० पु०, फलपुष्प विशेष,
आगर । रत्ना० ।

अकूनैवस (aquanaitas) - यु०, अग्निपुष्प
नमिर-म० । धिप, 'मीठा जहर' । aconitum,
(Napellus) ।

अफुनोस्यून (aquosoyun) - यु०, रसयुक्त-
अम्ल । एक वृत्ती है जिसके लक्षण में मत्त
मेद है ।

अकूपारः (akuparah) - सं०, पु०, कच्छप,
कछुआ । Tortoise । सि० का० ।

अकूमार्शुन (aquumarshun) - यु०, जंगला
सौंफ । Wild anise-इ० ।

अकूरुन (aquran) - यु०, वज, 'वच' (Aoo
rus calamus, Linn) ।

अकूल (aqul) - सं०, बुद्धिमान मनुष्य ।
(Idem) - इ० ।

अकूषक औषधि । (astringent
Medicine) इ० ।

अकूतलियून [aqusaliyun] पु०, कृष्ण-
नदी जो कि पागी से बड़ा होता है ।

अकूतलक्ष्य युग्म [akūta kṣya yugāh]
सं० पु०, लक्ष्य, स्नेह, कटु, आदि, पदार्थ, व
(वि० वृत्त) पर लक्ष्य होता है । (सि०, नि०) ।

अकूथित चीरुम् [akūthit-keṣhram]
सं० शी०, कषा दुग्ध । यद् कफ कुण्ठि क-
रता है और भारी होता है । ये० नि० ।

अकून्थसु इक्षिसिकोक्षिआ घस [Aconth-
us, Illic foliosus] - ले०, 'हरकृष्ण कांटा'-दि०,
य०, लक्षिकृपा-सं० । मोंदेना-गो० । मारुटी-
मूह० । पेना स्कुलोम मल । Holly, ly leav
ed nonanthus-इ० । इ० मे० मे०, इ० ही०
गा०, फा०, इ० ३ भा० । -

अकून्थसु सप्तली लीवहड [nonanthus Hol
ly leaved] - इ 'करकच कांटा'-दि०, य० ।
इ०, मे० मे०, इ० ही० गा०, फा० इ० ३ भा० ।

अकून्थेसीई [nonanthocono], ले०, 'अदसा
घग' अकूसे के घग की औषधि । The
andus order [nonanthad's] इ० ।

अकूम्पे पेपिलोसा (nonampo papillosa,
Lindl) - ले०, इसको अङ्ग औषधि कार्य में
आती है । मेमो० ।

अकूलचांग गुल [kela ohang gul] -
ले०, 'बुझा बुट्टा, कौरवा' । (Halarrhena
antidysentorica)

अकूशा (akusha) - सं०, 'जयन्ता' खासन,
जैत-दि० । Salsania Aegyptiaca

अकूशियु (aqousia) - सं०, फलोपर (Legum,
inosae), के मासमोसी (Maimoson) -
उपवर्ग की औषधि ; सिन्धो-समुद्रभागी
प्राप्त होता है । समुद्र-अरबी, 'पक्ष का गोचर'
(Gam arabia) इ० ।
मोट - माचीन अमेज़ी में इसका ब्याप्य

अकाशिया या शकामिया का, किंतु अर्थात्तः
रुमेजी में, यह "अकेशिया" है।

अकेशिया अरोबिका (Acacia Arabica
Willd.)-ले०, पत्तल (२), बीबर-दि०।
Babool tree-दि०। इ० मे० प्ला०, सब
पा० इ०।

अकेशिया इन्डालिया (Acacia Intsia, Wi
lld.)-ले०, अरब का पेज-सत। कर्तारपुमा
कोष्ठक लुप्त-सम्ता०। कुम्बुक-कोल०। हरोरी-
ने। प विरिक्त, उम्राच्चिह लेप०। कारिफ्टा, कोरे
पद्म-ले०। चिन्दापी-मूठ०। मारमोसा इयदे
सिया (Mimosa Intsia, Linn, Ro
xb.)-ले०।

पा० य०, अयोषी या खड्डक यर्ग (Legumi
nosae)
उद्भवस्थान-द्विआसय के उष्ण प्रदेश, पूर्वी
और पश्चिमी प्रायद्वीप। गुणधर्म-संज्ञा की
विषय अनियमित अणु (Doranged'our
soa) में इसके पुष्प को उपयोग में लायी है।
इ० मे० प्रा०। इसके छाल तथा पत्र रोग के
काम में आते हैं। मेमो०।

अकेशिया कॉन्सिमा (Acacia Concin
na, D. C.)-ले०, सातला, अरिस्तोलेस दि०,
अय०। शातला, सतला, अरिस्तोलेस दि०। फली
या फुमीके नाम (The Pods)-सीकी (-के)
काहे-इ०। शीका, शीकाकाहे-ता०। शीकाय,
शीकाय, योगु-ले०। सीनिक-कीय-मेल०।
शीके-कापि-कता०।। कोषे, केशिका-य०।
शीका, शीका-सहा-महा०। केमीन-सी, केमान-
पेडाक, केमान वि-य०। अरिस्तोलेस (अरिस्तोलेस)

in Rugata)-ले०। सठ काहे इ०। इ०
मे० प्रा०।

अकेशिया कॉर्टेक्स (Acacia Cortex) ले०,
खूर खसा; पत्तल की छाल-दि०। Acacia
bark-दि०। इ० मे० प्रा०।

अकेशिया केकाउ (Acacia Catechu)-फा०,
खैर वृक्ष; खिर वृक्ष; कथा का पेड़-दि०।
Acacia Catechu, Willd.-ले०। फु० इ०
१ मा०।

अकेशिया कैटेशु-प्यू (Acacia Catechu,
Willd.) ले०, खिर वृक्ष, खैर का पेड़, खैर,
कथा खैर, खैर वृक्ष-दि०। Catechu tree
-Outoh, इ०। इ० मे० प्रा०। फु० इ० १ मी०
स० फा० इ०।

अकेशिया गम (Acacia Gum)-इ०-समने
अरबी, पत्तल का गोंद। Gum Acacia-दि०।
इ० मे० मे०।

अकेशिया जैकीमापिटियाई (Acacia Jac
quemontii, Bonpl.)-ले०, कीकर, वडुब,
बसुब, चम्बल-पे०। हफ्त-अफ्त०। खैरबी-
गु०। मेमो०।

अकेशिया डी अरबी (Acacia d'Arabie)-
प्रा०, वडुब, फा० इ० इ०। अरिस्तोलेस-
पिका-इ०।

अकेशिया डीकरेन्स (Acacia decurrens,
Willd.)-ले०, इसका छाल रोग के काम में
आता है। मेमो०।

अकेशिया नाइसोटिका (Acacia Nilotica,
Dalla) ले०, अरबी वृक्ष। फु० इ० १ मी०।

अकेशिया पाइएनेन्या (*acacia pyonantha*, Bth)-ले०, आरि। ई० मे० प्रा०।

अकेशिया पॉलीअकेशिया (*acacia Polyacantha*,) ले०, खदिर वृक्ष। *Catechu tree*-ई०। ई० मे० मे०।

अकेशिया पिनेटा (*acacia Pennata*, Willd.)-ले०, आरि, बिसवूल-ई०। *Mimosa Pennata*-ले०। ई० मे० प्रा०।

अकेशिया फार्नेशियाना (*acacia Farnesiana*, Willd.)-ले०, (अ) हरिमेर, दुर्गन्ध-खैर, गूहकीकर (*Mimosa Farnesiana* Linn, Roxb)-ले०। ई० मे० प्रा०।

अकेशिया फेरुंगीनिआ (*acacia ferruginea*, D C)-ले०, खौर-नेया०। अनस एडू, अनघमर और बुनि-ते०। शीमी-वेलवेल, वेलवीलम-ता०। मोट-वेलगुमाम "बुनि" तामिल "धभि" के साथ मिलाकर प्रायः अम कारक बना दिया जाता है, जो वस्तुतः समी (*Prosopis spicigera* का) नाम है। वेबो-ववूल। सं० फा० ई०।

अकेशियाबार्क (*acacia bark*)-ई०, बवूलका छाल-ई०। *acacia Cortex*।

अकेशियामॉडेस्टा (*acacia modesta*, Wall) -ले०, पबोस-अफ। कुसही० पं०। मेमो० काम्बोसूरियो-गु०।

उत्पत्त्यान-परिचमी और मध्यहिमाचल मुख्य प्रयोगस्थ-गो०। वेबो-ववूल।

अकेशियामॉलिस (*Acacia Mollis*)-ले०, खानी-ई०, *acacia Soft*-ई०। • ई० गा

अकेशिया रयुगेटा (*acacia rugata*)-ले०-सातला-ई०। *acacia Coninna*, D O। ई० मे० मे०।

अकेशिया लेण्टिक्युलेरिस (*acacia lenticularis*, Ham)-ले०, खिन-धर्मा, कुमा। मेमो०।

अकेशिया लेट्रोनिम (*acacia latronum*, Willd.)-ले०, मेप-ई०। पाकीमुम्म-ते० मेमो०।

अकेशिया ल्युकोफ्लोआ (*acacia leucophloea*, Willd.)-ले०, रीवां, सुफेद-कीकर-ई०। श्वेत बबूर वृक्ष-सं०। उज्ज्वली कीकर, पट्टे की कीकर, शराब की कीकर-व०। स फेद बाबूल-सं०। घेल-घेल, घेल-घेलम्-ता०। तेज-मुम्म-ते०। वेज-वेजम्-मला०। बिबि जाबि मरा-कना०। हेबुद, पांवर, पांपरिया, बामलिके झाड, बाब्लीच झाड-मह०। सफेद बाबूल-गु०। मन्सौनकियिऊ-अफियु, तमोह-बर०। अरिह-राज०।

उद्भयस्थान-पञ्जापके मैदान मध्य तथा दक्षिण भारत और राजपुताना। प्रयोगस्थ-त्वचा देखो-"बवूल"।

अकेशियावरा (*acacia vera*, Willd.)-ले०, करुण वृक्ष। फा० ई० १ मा०। शीकुल-मरुह शीकुल-पञ्चरापियह-शीकुल-मिधियह अ०। मोट-अस्तिम तीम नाम मिथ तथा अरुप में पाये जाने वाले बबूर वृक्ष के फूल अन्यदेशों के लिये भी प्रयोग में लाये जाते हैं फा० ई० १ मा०। सं० फा० ई०।

अकेशिया वेल्लीयाना (*acacia Wallis*)

liana)-ले०, बरया का पेड़, खदिर ईल ।
aocia Catechu । ई० मे० मे० ।

अकेशियासमा (aocia suma)-ले०, स
(श) मो, झोकरा । सर्द-घ० । Prosopis
Spiogora-ले० । White Mimosa-ई० ।
फा० ई० ३ मा० ।

अकेशिया साफ्ट (aocia Soft)-ई०,
झाकी । ई० ई० गा० ।

अकेशिया सेनेगल (Aocia Senegal,
Will)-ले०, जोर-सिध । कुन्दा-पञ्चपु० ।
उज्जय स्थान-यह एक कष्टकमय छोटा वृक्ष
है जो सिध और अजमेर में उत्पन्न होता है ।

नोट—यह अफरीका के सेनेगल प्रांत में
होने वाला "यबूल" ही है । प्रयोगांश-
निर्यास ।

अकेशिया सयझा (Aocia Sandra, D O)-
ले०, नला संझा-ले० । इसका गौद काम में
आता है । मे० मे० ।

अकेशिया स्पेसीभोजा (aocia Speciosa
Will)-ले०, 'सिरस का' पेड़-हि० । शि
वीय-सं० । सिरिज का झाड़, सिरिज का झाड़
ह० । (albixia Lebbock)-ले० । ई० मे० मे० ।

अकोटा (akota)-सं० पु०-'सुपारी' (areca
Oateshu) ।

अकोटा (akota)-कना, जोसम, गोसम, -ई०,
हि० । (Scholechora Trijuga, Will
ले० । ई० में प्वा० ।

अकोड (akod)-सं०, अजरोट । Juglan
regin ।

अकोडगंध (akond gandh)-ई०, हीन,
दिय, पमडम । assafoetida ।

अकोद (akond) हि०, मदार, 'आक' (Cal-
otropis gigantea, R Br (Mudar)-
ले० । स० फा० ३० ।

अकोरा (akora)-यु०, चाँदी, रजत । (argen-
tum)-ले० ।

अकोरिया (akoriya)-उ० प० सू० भनियून
अकोरिटीन (acoretine)-ई०, यक्षीन यक्ष

सत्व, कोलीन (Choline)-ई० । यह मधु
सह्य तरल ग्लूकोसाइड (Glucoside)
है जो अत्यन्त तिक्त और सुगन्धित होता है
तथा मद्यसार (alcohol), इन्सुलिन और
ईथर में घुल जाता है और शर्करा तथा उड़न
शील तैल रूप में पृथक हो जाता है । ई०
मे० मे० ।

अकोरीन (acorin)-ई०, यह एक उड़नशील
तेल है जो यक्ष में वर्तमान होता है । दे०-
यक्ष । ई० मे० मे० ।

अकोल (akol)-ई०, हि० काळा अकोला, देरा
मेद । (alangium Hexapetalum,
Lam)-ले०, स० फा० ३० । दे०-अकोल ।

अकोला (akola)-हि०, द, अकोल, देरा
(alangium Eocspetalum, Lam)-
ले० । स० फा० ३० ।

अकोभा (akoua) } हि०, मदार, आक ।
अकोन्दा (akounda) } Calotropis gi-
gantes, R Br ।

अकोल-ला (akoul-la)-हि०, देरा, अकोल ।
'alangium' Decapetalum, Lam-ले० ।

अकीसे (angous) - انجوس, गुल्म, बुब्बल,
 जिसका पृष्ठ पादर निकल आया हो। दृश्य
 पैकेट Houch backed इ०।
 अकअम (akarab) - اكرب, (५० ५०) पशुपद
 (५० ५०) - टखने दि०। यह स्थाने जर्हापर
 पैर सामने की और पीछे की मुड़ सकता है।
 ankles

अकअम (aqam) - اقم, सपाट चिपटी
 नासिका घाला (flat nosed) इ०।

अकअस (aqnas) - انقس, उग्रतोरुदर यातीय
 अर्थात् यह जिसका पक्षःस्थान पादर को नि
 पक्षा हो और पृष्ठ भीतर को घुमा हो।
 मोट-अहृदय और अकअस का भेद अहृदय
 में देखो।

अ (इ) कअद (afqad) - افق, लुजा
 पन लंगड़ापन अथवा अयययोंका ऐसा विकार
 जो ब्रेत्रे को बाध करे। Lambdask

अकऊम (aqum) - اقوم, अकूमा। एक
 प्रकार का चतुस्रत वियोग। यह कठिनता
 पूर्णक अवस्था होता है। यह पपड़ी के समान
 धावा तथा मिल्की को, सा जाता और नेत्र
 को घिनष्ट कर देता है।

अककह (ankka) - انكك, फा०, अककक (मा
 हुका पदी)।

अककत (ankkat) - انكك, यह उष्ण रात्रि
 जिसमें वायु सयथाः वाक हो। मोट-गुम्मा,
 एन्जुम् सफरत और इहत्विगम। इसमें से
 अकक वायु को निकले और उष्णता विषय को
 कहते हैं। गुम्मा का अर्थ कठिन गोमी है और
 सफरत तथा इहत्विगम इसके पत्रों को
 कहते हैं, जिससे ककरी आदि भी उक्त वते।

अकककर (ankkal-kura) - انكك, अक
 अकलाकरे (akkal-karo) - انكك, अक
 अकलाकरी (akala-kari) - انكك, अक
 hri Radix से०। फा० इ०, स० फा० इ०।

अककार (anqkar) - انق, अ०, (५० ५०)
 अककीर (५० ५०) जड़ी पृटी-दि०।
 Herb स० फा० इ०।

अककीरकारम (akkar-karam) - انكك, अक
 अकरकरा-दि०। Pyrothri Radix से०
 फा० इ०।

अककाल (akkal) - انكك, इसका आभिर
 अर्थ मर्षक अर्थात् जो जाने वाला है, किन्तु
 आयुर्वेद की परम्परा में उस औषधि का क-
 हते हैं जो अपने तीव्र अर्थ में एक गुण की अति
 कता के कारण अयययों के सार अर्थों को नष्ट
 कर देवे। यह औषधि जो सारकारक एवं ग-
 लाने वाली गुण के कारण माल की सा जीव
 और उसके सार भाग को क्षीण कर देवे, यथा
 चूना और हडताल। कर्षेसिध Corrosivo,
 एंस्केरोसिक Escharotico-इ०।

अकिकरुका (akkikaruka) मला० अक

अकिकरीकारम् (akkikarakaram) मला० अक

अकिलाकारम् [akkilakarum] मला० दि०।
 Pyrothri-Radix से० फा० इ०, फा० इ०।

अककी (akki) - انكك, चावल दि०, Riou।
 स० फा० इ०।

अककीसारायि (akkisaraayi) - انكك, चावल
 की दार-व। चावल की शराव-दि। अदि-
 शाशायम-ता०। विषयु (सारायि-से०) और
 चायम मला०। सारकार अक परस (Liq-
 lib of Libo) इ०। स० फा० इ०।

कजस (akzaz) - كزك اس, कोताहोपीनी;
जिसकी ससिका छाटी हो।

मकजाज (akzaz) - كزك اس, कठिन शीत जे
गता, हम्पत।

मकनार (nqzar) - كزك اس, (यं यं) कज
अं (यं यं) कसाफत, मिजासत, मद्गी
फां। मैला पन, अशुद्धि हिं। फिलज I)
Itis हं।

अकनअ (aktna) - كزك اس, जिसकी अंशु
विषां हथेली की ओर फिरो हुई हो।

अकनअ (aqtna) - كزك اس, सेवित हस्त,
कटा हुआ हाथ।

अकनअ (aqtna) - كزك اس, सेवित हस्त,
कटा हुआ हाथ।

अकनअ (aktna) - كزك اس, जिसकी अंशु
विषां हथेली की ओर फिरो हुई हो।

अकनअ (aqtna) - كزك اس, सेवित हस्त,
कटा हुआ हाथ।

अकनअ (aqtna) - كزك اس, सेवित हस्त,
कटा हुआ हाथ।

अकनअ (aqtna) - كزك اس, सेवित हस्त,
कटा हुआ हाथ।

अकनअ (aqtna) - كزك اس, सेवित हस्त,
कटा हुआ हाथ।

अकनअ (aqtna) - كزك اس, सेवित हस्त,
कटा हुआ हाथ।

Shoulders हं।

अकतार (akter) - كزك اس, कुतर
[यं यं] अं। शारीरिक वृष्टि,
व्यास,

अकतार शायमीतर्ज (Diameters) हं।

अकतार शार्जियय [aqtar Khariyyah]
كزك اس, शरीर की बाह्य वृष्टि,
अंतर। Exterol, Diameters।

अकतार द्वाखिलियय [aqtar dukhaliyyah]
كزك اس, शरीर की आन्तरिक
वृष्टि, अंतर, पारसले, Interpal Dia-
meters हं।

अकतार सलास - (aqtar Silasah)
كزك اس, शरीर की, वृष्टि, चतुष्पाद
अर्थात् सन्वाह, चौड़ाई व गहराई।

अकतार सलास (aqtar silasah) - كزك اس, शरीर की, वृष्टि, चतुष्पाद
अर्थात् सन्वाह, चौड़ाई व गहराई।

अकतार (aqtd) - كزك اس, शरीर की, वृष्टि, चतुष्पाद
अर्थात् सन्वाह, चौड़ाई व गहराई।

अकतार (aqtd) - كزक اس, शरीर की, वृष्टि, चतुष्पाद
अर्थात् सन्वाह, चौड़ाई व गहराई।

(Stammering) पलव्युशीअ (Balbuties) ई० ।

अकूदह (ankdah) عكده अ० । पीछे ज़ुवान फा० । जिह्वाभूल, ज़ुवान की अड़ दि० । २-हृदय भूल अथवा हादिक नियम ३-मध्य हृदय ।

अकूदीवूस (aqddius) اندیدرس अ० । देखो 'अगरीवूस' ।

अकन (akbn) عكن अ० । खीन, शिथल फ० । कुर्ने पड़ना, सिबुइन, यखो जो मेदावी होने के कारण उदर पर पड़ आय । यलिः सं० । रिङ्गिज (Wrinkle) ई० ।

अकूनफ (aqnaaf) الكف अ० । लघुकर्ण वाला छोटे २ कान वाला, दि० । Small eared । ई० ।

अकूनह (aknah) अ० । 'एरिडजान' (Hermodaetylus) खे० । सं० फा० ई० ।

अकूनह (aknah) الكله सवूलधिनयह لهله صفا दुहनिव्यह لهله और हबुससबा صفا حبها अ० । कील, मुहासे जो अवाली के आरम में मुख मंडल पर बिकलते हैं । एली [aeno] ई० ।

नोट—जो युवा ली पुरुष मध्य मार्ग का अथ लम्बन न कर स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन करते हैं, उनको सामान्यतः यह बि कार हो आया करता है ।

अकूनार [aqnar] الكار अ० । घुराही में मु'ह लगाकर जल पीना अथवा मद्यपान करना ।

अकफअ [aqfaa] الكف अ० । जिसके पाँच कों अंगुलियाँ फिरी हुई हैं ।

अकफस [akfas] الكس अ० । जिसका पैर टेढ़ा हो और यह अपने पैर की छोटी अंगुली पर सहारा देकर चले ।

अकफह [akfah] الكف अ० । श्याम, काला दि० । रबैक Black ई० ।

अकफद [akfad] الكفد अ० । यकृत रोगी, यह रोगी जिसका यकृत बढ़ा हुआ हो, बढ़े हुए यकृत वाला । एम लाज़ंड लिवर [Enlarged liver] ई ।

अकवस [akbas] الكس अ० । जिसके शिर क भागा निकला हुआ और ललाट चंसा हुआ हो ।

अकयाद [akbad] य० य०, कविद ए० य०] अ० यकृत, जिगर, कलेत्रा । Livor ई० ।

अकबीस [akbis] الكيس अ० । रसूलिया जिसका शिरमात्र [मणि, मुएह] कतला से पहिले शिरमात्र खन्ना से बाहर निकलवा ह' ।

अकमअ [aqmaa] الكع اء अ० । जिसके नेत्र से जल आय हो ।

अकमस [akmas] الكوس अ० । जो काठिनता पूर्वक देख सके ।

अकमह [akmah] الكفة अ० । कोरमादरआइ फा० । जन्माय, सदजाय दि० । यार्न ब्लाइण्ड Born Blind ई० ।

अकमाक [akmak] الكك फा० । घमन, छुर्दि, मतली । वॉमिटिङ Vomiting, नाशिया Nausea ई० ।

अकमाल [aqmal] الكمال य० य०] कम्ब ल [ए० य०] अ० । जुझो [डीठो] के अण्डे बच्चे अर्थात् बीज, मिट Nit, The egg of a louse ।

अकमावस [aqmasas] القماص अ० । एक
दैनिक उबरा, पर दिन का ज्वर । गुग्गामुम
القماص अ० । तप यकरोजह ۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰ फा०
फ्रेडिकुला Febricula इ० ।

अकमाघास [akroglias] हि अगिया ।
Lemon grass स फा इ० ।

अक्या घास का इत्र [akya-glias ka itra]
इ० । अक्याघास का तैल स० । अक्याघास तैल
स० । Lemon Grass oil इ० । स० फ्रां०
इ० ।

अकरथ (Aqran) اقرا अ० । फल, गन्ना,
जिसके त्रिरक राम गिर गये हों, फेराहीन,
धन्ना, पादक Bald इ० ।

अकरान (Aqran) अ०, वैषस्तह अथक फा० ।
जिसकी दो नों मीं मिली हों ।

अकरफ (aqraf) अ० अत्यन्त रक्तवर्ण गन्मीर
रक्तवर्ण हि । डारकरेड Darkred इ० ।

अकरपी (aqraabi) फा० दूधमज्ज अकरपी ।
Doonium Pardalitancheba, Linn फा०
इ० २ मा० ।

अकरा (aqra) अ, १० व० । कु (कुं) रक्त
ए व रसोक्ताल, आरुष काल, मासिक घम
का समय । Period of the menses इ० ।

अक्रानीकी (Akraniki) यु०, शरारत-पाक ।
बादावर्ष । Shuka: । फा० इ० ३ मा० ।

अक्रान्ता (Akranta) -स०, यु०, कटेटी, भट
करार, घृहती । घृहती कुप-स० । थिरति, व्या
हुड-स० । जोरली, पांडतो, बनमण्डी-ग०, क०
अन्तति उ स० । आक्रुव केइ-ते० । २० मा० ।
गुणधर्म—उष्णवीय, पाचन और संप्रादी ।
अक० व० । रात्र० । यह उष्णवीय, रसमें कटु

विक, जघु, पाचनाशक, ज्वरनाशक, शरीरक,
धाम व कासनाशक तथा श्यास और इद्रोग
नाशक है । रा० नि० घ० ४ ।

अक्रावाजीन (Aqrabazin) القرازين
अ०, कफयादीन । किताबे अद्विधियद् मुर
कयह-फ० । याग सन्ध्या प्रथम, योग शास्त्र
-हि० । यह प्रथम जिनमें यौगिक औषधि एवं
उसके योग लिखे हों । फार्माकोपिया Phar
macopocia, डिस्पेन्सेटरी Dispensatory
इ० ।

अकरायादीन (Aqrabadin) القرايادين अ०,
अकृग बाजीन । Pharmacopocia ।

अकरास (aqras) -اقراس अ०, (५० व०), पुखें
(२० व०) -दिकिया, हि० । टेम्ब्लाट्स Ta
bloids

अक्रोसाइन (aohrosino) -इ०, अरंस्क
Not colouring । फा० इ० २ मा० १

अकृण (Akla) -الكل अ०, जाना, व्याभिमुख वि
ज्ञान की परिभाषामें उस औषधि को कहते हैं
जो अथर्वों के भास या स्वचा को-जा आय
अर्थात् उसे जप्ट करदेवे । कर्नेड Corrodo

अकृ (aqila) -الاقلا अ०, (२० व०) अकृ उ (५०
व०), जिद, क्षामाई-फा० । बुद्धि समक, बुद्ध
सूक्त, मनीषा, धी, धियण, धियेक शक्ति-इ० ।
इण्टेलिजेन्स Intelligencce-इ० । प्रकृति
में यह यह शक्ति अथवा अपाधिष सत्य है जि
-ससे बुरे मजे में धियेक किया जाता है ।

अकृफ (akklaf) -الكلف अ०, हराबीरक, श्यामा
भायुक रक्तवर्ण-हि० । प्राउनिश रूड Brown
ish rod

अकृजाफ (aqjaf) -الكلف अ०, यह व्यक्ति जिसका

खतना न हुआ हो । अनसकमसाइड Unco-
roumolsod ।

अक्लब (Aqlab) - अक्लब, जिसके औष्ठ
उसकेद्वये हैं ।

अक्लब व शुर्य (Akla va-Shurb) - अक्लब, शुर्य-
फा०, खुर्रब तोश-फा० । भव्य पर्व पेय अ
र्थात् खानेपाने के प्रदार्थ-हि० । Edible and
drinkable ।

अक्लह (aqlah) - अक्लह, फलह (अर्थात्
जिसके दांत मैले ही) का रोगी ।

अक्लह (Aklah) - अक्लह, एक बार खाना ।

अक्लाअ (Aklaa) - अक्लाअ, अयस्या यात्री उमर
को पूर्णता तथा अष्ट तक पहुँचाना ।

अक्लावोतस (Aqlabotas) - यु० अक्लवोतस
फा० । अक्लव-हि० ।

नोट - अक्लव, अक्लव और अक्लव प्रभृति
शब्द मूल से "केवाच" के लिये प्रयुक्त होते हैं
यस्तुतः केवाच से ये सर्वथा निर्र हैं । Bleph-
pharis Edulis, Pers.

अक्लारोतस (aqlarotas) - यु०, अक्ल-
हि० । फलह, फलवा-मरहौर-प० । Tam-
arix Gallia, Ling

अक्लिका (Aklika) - अक्लिका, खी०, नील,
नीलीपत्र । The Indigo plant, (Indigo-
fera tinctoria) । नीलीचे-फा०-मह० ।
नीली-फा० । नक्षत्रवेदके गेरिट पेठ नीलीचेद्वे
से० । नीली, महानीली मेरुसे यह दो प्रकारकी
हाती है । गुण - यह उष्णवीर्य, रस में तिक्त
और बटु तथा केशयुक्तक, कफ, कास और
आमनाशक, जघु तथा घात, विष विनाशक, उ-

दरपेग, गुल्म (प्रायुगोला) कृमि और ज्वर
नाशक है । रा० नि० ५-४ । रेशक, मोह, भ्रम,
आमवात तथा उन्मादका नाश करने वाली
है । भा० पू० १ म० । म० १ प० ।

अक्लिना वंशर्तु (Akliuna varitna) - सं०,
खी०, नेत्रघर्तु रोग विशेष । जिसमें घाय
हुये अथवा विना घोयेहुये पलक परस्पर घात
म्बार घिपक जायें और काये पक के पीपसे न
घिपकें उसे "अक्लिनायाम" नामक रोग कहते
हैं । इसी को वागमद जी "पित्तलाघय" नाम
से पुकारते हैं । सा० नि० ।

अक्लीका (Aklika) - सं०, खी०, नीलीपत्र,
नीलका पेड़-हि० । The Indigo plant
अक्लीकस (Aqlitakus) - सं०, कांदा, अ
अक्लीतून (Aqlitun) - गली विद्यास हि०
विद्यास के लक्ष्य एक प्रकारकी जड़ है । Soli-
lla Indica, Roxb ।

अक्लीमिया (Aqlimiya) यु० अक्लीमिया,
अक्लीमिया-अ० । घातुर्घा का मूल जो इनके
पिचकाने के बाद ऊपर नीचे मगन और तिक्त
छट के समान उत्पन्न हो जाता है । कैलेमीन
Calamine-र० ।

अक्लीजल (Aklijal) - सं०, खी०, नील,
नीलीपत्र । The Indigo plant, (Indigo-
fera tinctoria) । नीलीचे-फा०-मह० ।
नीली-फा० । नक्षत्रवेदके गेरिट पेठ नीलीचेद्वे
से० । नीली, महानीली मेरुसे यह दो प्रकारकी
हाती है । गुण - यह उष्णवीर्य, रस में तिक्त
और बटु तथा केशयुक्तक, कफ, कास और
आमनाशक, जघु तथा घात, विष विनाशक, उ-

अक्लीजलमलिक (Aklijal-malik) - अ०,
पामेयी-हि० । त्रिलोकिका-सं० । Trifolium
Indicum Melilotus Parvi flora,

Desf-ले० । ह० मे० मे० । ताखुगा दि० । वेंजो
 इकीसुल-मलिक ।
 अकवन (Akvan)-वि०, आक, आख, मशर
 दि० । Oalotropis Gigantea R Br
 अकवम (Akvain)-वि०, वलका अथोभाग ।
 अकवा (Akva)-दि०, आक, मशर एव
 Oalotropis Gigantea R Br
 अकवाअ (Akvan)-वि०, (व० व०),
 कुम ह० (व० व०), पहुँचे अर्थात् कलाई की
 हड्डियाँ । Rist bones ।
 अकवात (Iqvāt)-वि०, (व० व०),
 कुम्बत ह० (व० व०), भयपराय, गिजायें,
 अग्निह्वय । Edible-ई० ।
 अक्विबोरिया अगैलोक (Aquilaria Ag
 allocha, Roxb)-ले०, अग, अगुद । ऊद
 अग-अ० । Aegle wood ह० । ई० मे०
 मे० मे० ।
 अक्विबोरिया ओवेटा (Aquilaria ovata)
 ले०, अग । Aegle wood ह० । ई० मे० मे० ।
 मे० मे० ।
 अक्विबोरिया मलक्कासेन्सिस (Aquilaria
 Malaccensis, Lamk)-ले०, अग । Aegle
 wood । फा० ह० ३ अ० ।
 अकवेजान (Akvezan)-फ०, मटर मेव-कोई
 २ रतियुल हामम को कहते हैं ।
 अकवाथ (Aqshab)-वि०, (व० व०),
 सन्निपात, जहर, विष । क्रिय (व० व०)
 (deadly poison) घातक विषः (२)
 जहर, मुर्दा, कीट ।
 अकशी (Aqshi)-आसा, करकह-अ० । अ
 गरी-अ० ।

अकशरीयून (Aqshd riyun)-यु०, अय-
 सिख औपधि है ।
 अकसूस (Akasus)-वि०, आकसूस के
 बीज । तुफ्रे कसूस-फा० । Ousula Ref-
 lexa (seeds of)
 अकशोस (Akshos)-वि०, कसूस B
 आकाशवेज-दि० Ousula Reflexa ।
 अकसभ (Akasā)-वि०, यह व्यक्ति जि-
 सके मसूढ़े फूले हों ।
 अकसम (Akasam)-वि०, मेदासी मनुष्य,
 यह व्यक्ति जिसका मेद (तौव) बड़ा हो ।
 काव्युलेंट Corpulent, फटी Fatty-ई० ।
 अकसह (Akasāh)-वि०, अपाहिम, श्लेष्म
 जो अपने स्थानले दिक न सके । किरप्ल Or-
 pple-ई० ।
 अकसाव (Aqasab)-वि०, (व० व०)-
 कुसुम (व० व०)-अंतर्द्विया, आन-दि० ।
 Intestines ।
 अकसियह (Akshyah)-वि०, यवनप,
 औ का शराब ।
 अकसिया (Aqshya)-सुफेद माकरीयून प्र-
 सिख है । अयराकिया श्वेत । Ollitora Ter-
 natis, Linn (White.)
 अकसियानूस (Aksiyanus)-यु० लुम्बे
 इस्तर, लुम्ब-अ० । Oastoreum ।
 अकसरि (Akair)-दि०, 'वृद्धीला' (Nardo-
 stachys Jatamansi, D C.)
 अकसरि (Akair) अ०,
 अकसीरी (Akiri)-यु०, माहिर किमिया,
 अकसीरी की मीमांसा । ११, ५६

शास्त्री (रस)-हि० । अलुकेमिस्ट Aloche-
mist-हि० ।

अक्सिरी बूटी (Aksiri buti)-फ्रा०-म
सिद्ध ।

अक्सुनाफि (-फ) न (Aksunafin, fan)
اسونان اسونان, हवीमी माप भेद, यह ६ तोला
११ मा० २ रत्ती अथवा ३ तोला ६ मा० के
बराबर होता है ।

अक्सुफैलस (Aksafailas)-यू०, सहस्र
कोर एक बूटी है ।

अक्सुमानस (Aksunanas)-यू०, रतन
जात-हि० । Alkanot ।

अक्सुमाली (Aksumali)-यू०, 'सिकञ्ज
बीज'-अ०, हि०, व० । 'सिकञ्जपां फ्रा० । शा
क्लिमेस Oxyamol-हि० ।

अकहल (Akhal) اکحل-अ० । स्वाहचरम,
सरमगी अाजयाला । (२) हेरन शाख की
परिमाणा में रजे "हपनअन्दास" को कहते हैं
यह रंग कुहनी के मध्य में भीतर की ओर
स्थित है और फ्र फाल جال व पासलोक
بالسلي के मिलाप तथा संयोग द्वारा पैश
धानो है । चकि इसमें फ्रीफाल (Cephalio
vein) और पासलोक दोनों से शोणित
आता है, इस कारण इससे फसद [रक्तमोक्षण]
से सम्पूर्ण शरीर पर रक्त निकलता है । मीडि
शन कफोसिक Median cephalio-हि० ।

अकहास (akhal) اکحال (प० व०), कइल
كحل (प० व०), अ० । सुमां, अजस, नेत्रमें
खगाने को शुभ्र औषधि । काकोरियमस Co
lyriams हि० ।

अखटः (khatlak) सं० पु०, विरीत्री-हि० ।
(पिप्लियाज वृक्ष) पेयाशख, इसके बीज का पे-
याज बीज या चाग्दाना कहते हैं-हि० । चारोती-
म० । रा० नि० प० ११ । भा० आघ्राहि० ।
Buchanania Lati folia, Roxb ।

अखन्न (Akhanna) احن अ०, गुग्गा, गुग्गुना,
मुनमुना, मुनमुना, मिममिना नाक से पाकने
वाला ।

अखर (Akhar)-सं०, कपास, बाड़ी । Goss-
ypium Indicum से० ।

अखरोट (Akharota) हि० प०, अकोट-हि०,
दि०, व० । अखोट, पीलु, शैलमव और कपयल
सं० । जीजू, جوجو जीजूकखनिपुं:- جوز الحلب
अ० । शिर्दगी, شيردگی चारमरु, چارمرو च-
हारमरु, چارمرو गोजू, جوز फ्रा० । कासलील,
फावस्याह-यू० । फोज-मु० । जुग्लैज Ju-
glans; लु० रेजिया J. Regia, Lind-
से० । वालनर Walnut-हि० । वालनस-
पाम Walhaussbaum-अ० । नोयर क-
लिय Noyer Cultive-फ्रा० । अमादु-
ता० । अकोटु-हि० । अकोड, अकोट-कना०,
कर्ता० । अकोड-म० । अकोरोट, अकोड-मु० ।
सिस्-सपा-सि या तिफया-ज़ि-वर० । अ-
कोड-बो० । उष्यकार-द्राधि० । लगशिङ्ग-
मूटि० । कषुसिङ्ग आ० । कोवल सेप० । अक,
अखोर, अखोट, अखरोट-उ० प० मा० ।
अखोर-खरोट, कुमा० । अखोट, कोट, मुन-
काय० । अखरोट, वृम, चारमरु, धनधान,
फोर, कादारग, अकोरी, मोट, कपोडक,
स्टार्ग, डग्ग, धग्ग, धामक, धावा-डिराडस-
प० । डग्ग, धग्ग-अफू० ।

अज्ञेय वृक्ष

(Juglandaceae)

उद्भव स्थान—हिमालय (शीतोष्ण) एवं पृथ्वीय अस्तिया पर्यन्त, अफगानिस्तान तथा काश्मीर । इसका एक भेद और है अर्थात् 'अंगली अकरोट' (*Aleurites Moluccana*, Willd) जो बंगाल और दक्षिणी भारत में बहुतायत में होता है । पील (Mustard tree of scripture) भी वही एक वृक्ष में अकरोट, अकरोट जाति का एक प्रकार का वृक्ष है । इनके लिये उम २ मामों का अन्वगत श्रेणिये ।

विवरण—यह शाकी जाति की वनस्पति है जो पर्यन्तों में अकरोट होती है । इसके वृक्ष वृक्ष २ ऊँचे होते हैं । इनकी ऊँचाई लगभग ३० से ४० फी० होती है । पत्ते ४ से ८ इंच लम्बे अर्द्धवृत्त गुच्छे और बराबर या तीव्र कंगूरे एक एक टंडल के दोनों ओर विपरीत लगे होते हैं । सूने में सख्त और माटे मालूम होते हैं । पुष्प रूफेड रंगके छोटे २ शाखके शिरे पर गुच्छे में कई २ आते हैं । एक ही गुच्छे में स्त्री पुष्प दोनों प्रकारके पुष्प होते हैं । इनमें पुष्प पुष्पा (androecium) की रूपा अत्यधिक होती है । फल दो कांय युक्त मीनफलाके समान गाल २ होते हैं । उनके ऊपर तीन छिन्नका होते हैं, इनमें प्रथम हटा और मोटा (पंचने पर अर्द्धवृत्त रंग का हो जाता है) स्थाव्र में कपड़ा और कड़वाई लिये हुये जाता है । यह फल रूषेपनमें नरम परन्तु सूखकर बटार हो जाते हैं । द्वितीय छिन्नका पहिले छिन्नके के नीचे का होर होता है । फिर इसके नीचे दो डुकड़े आ

पस में मिले और सिंग उनका निजला हुआ तथा तीसरे छिन्नके के नीचे मींगी और ऊपर पट्टा पारोक छिन्नका होता है । मींगी अर्द्ध पार सफेद बुद्ध चिपटी और चिकनाई लिये गिस्ते और बिलगाजे के मींगी के समान दार्भा हैं । इन सबके अर भाग होते हैं । दो २ भाग आपस में मिले, इनके बीच में पट्टा पारोक परदा होता है । फलका वृत्तसम व्यास लगभग २ इंच होता है ।

नोट—उपरोक्त समस्त पर्याय इसी के मींगी अर्थात् फलके हैं । सेडिंग नाम अज्ञेय रोमिया (*Juglans regia*) इसके वृक्ष के लिये आया है ।

प्रयोगांश—फलक, त्वचा, बीज (मींगी), फल, और खोपरी (Nut) ।

प्रभाव वा प्रयोग—पत्र, परिदरतक और संकोचक । इसका अक्ष (१२ में १) कठमाला श्वेतप्रद रसुति के लिये क्षामजनक है । बीज इसमें तैल, म्यूसीम या ज्वलैपिडक एसिड और रास होता है । कुमिनाशन हेतु मुख्यतः कट्टुदाना (Tape worm) का मारने के लिये मुकुमेदन और विस्तारितारण हेतु इस तैल का आभ्यन्तरिक और दृष्टिमांघ हेतु बाह्य प्रयोग किया जाता है ।

अरुणकफला—कुमिन्न । पक्कन या मींगी "अज्ञेय कोऽपि यातावद्वृक्षः कफपित्तकृत्" भा० प्र० फ० प० । स्थादिष्ट, मध्य, पुष्टिकर और कामोद्दीपक । फल त्वक् कुमिन्न, उपद्रव नाशक । वृत्तवृक्—संकोचक, कुमिन्न और दुग्ध नाशक (Lactifuge), प्रयोज्यक । १० में १० १० में १० ।

रसायनिक संगट्टन—देखा जंगली अणरोट ।
अखरोट (Akhrot,)-पं०, अणरोट, अ
लोट । Walnut-ई० ।

अखरोस (Akhros)-यु०, एक घूटी है जो
फ्रांस तथा सर्व दरियाई देशों में उत्पन्न होती
है । जंगली गेंदें ।

अखर्यूस (Akharyus) यु०, पहाड़ी गन्धुगा ।
अखरसाज (Akharsaj)-एक वृक्ष है जो
उष्ण देशों में एवं शुष्क स्थानों में उगता है ।
मनुष्य के कर्क के बराबर अथवा कुछ अधिक
ऊँचा एवं खुरदरा और अर्धरि के समान
नर्म और लौक्या होता है ।

अखलः (Akhalah)-सं० पु० उत्तम घैस ।
घै० मिघ० ।

अखाड़ाकामेद (Akhadā-ka-bed)-ई० ।
अखातम् (Akhatam)-सं०, झीरे, देवताग
हिं० । देवताद-घै० । हेंच० फा० ४ । पुच्छ
रिषी । अम० ।

अखाद्य (Akhadya)-हिं०, अमर्य, जामे के
अयोग्य । Unctalā ।

अखाद्य (Akhadā)-पर०, (पे० प०) छान,
त्यक, Bark ई० । सं० फा० ई० ।

अखाद्य मियांझी (Akhad-miyā) पर०,
छान, त्यक । Bark ई० । सं० फा० ई० ।

अखियारी (Akhiyari)-प०, बनगुहाय ।
Wild rose-ई० ।

अखिल (Akhil)-हिं०, सं०, समस्त, सारा,
सय । Whole ई० ।

अखिलिका (Akhiliḥka)-सं०, पु०, करली
छोटी, बुद्ध कारबेलि । पुच्छे-घै० । A kind

of gourd-ई० । Momor dia Chara
ntia, Linn ले० । देवो बारबल्ली, कला ।

अखीतले जौहर्यह (Akhitahe-zoujy-
yah)-अ०, मयाकाते चर्म-यु०
चक्षुरांग विशेष जिसमें नेत्रके सामने चितपा
रियां अथवा तारे दृष्टिगाचर होते हैं । मस्रो
वालिटेपरीम (Musc volitantes)

अखीफ (Akhif)-अ०, जिसका एकत्र
श्याम और दूसरा हदित या नीलवर्ण युक्त है ।
अखीरुस (Akhirus)-यु०, अन्न में गेंदें के
अतिरिक्त एक घूटी है जो जल के समीप उ-
गती है ।

अखील (Akhil)-अ०, अस्तिर, सब
सुख में रग बदलने वाला । (१) गिरगिट,
कैमीलिअन Ohamoleon-ई० । (२) एक
कूर्मी कपड़ा है जो घंटा २ परंसात् रंग पर
लता है, (३) एक प्रकार की पत्ती है जिसके
पत्तों में विभिन्न प्रकार के रंग होते हैं ।

अखीलस (Akhilas)-यु०, एक क्रायिज्ञ और
शुष्क घूटी है । an astringent and dry
herb-ई० ।

अखी (अखी) कूस (akhilas)-यु०
मानसाय अजवाइन-हिं० । Carum (ptyo-
hosis) Ajowan, D. O ले । अ० अस्तास्य
असुकोय-शोध, नेत्रके भीतरी कोयेका शोध ।
आसद्रकण्य आफ वी पंक्टा Obstruction
of the punota-ई० ।

अखुविषः (Akhū vishāh)-सं०, विन्वील,
अमरपेले, देवदाली-हिं० । Luffa Echina-
ta, Roxb-ई० । फा०-ई० २ मा० ।

अखेटिक (Akhetik)-सं०, घृत विद्येय ।
 अखेररी (Akherari)-पं०, पट्टीच, चागी,
 डेर ।
 अखोट (akhot)-बो०, अखरोट । Walnut
 ut-ई० ।
 अखोड (akhod)-पु०, अखरोट । Walnut
 ई० ।
 अखोर (akhor)-नाश०, अखरोट । Wal
 nut ई० ।
 अखोर मोरनु (akhor moranu)-कमठ०,
 'सिहोर' सहार दि, पम्प० । साफोटक-सं० ।
 Streblus asper-से० । ई० में० में० ।
 अखोरी (akhori)-पं०, कटौघा, आजी, डेर
 पं० ।
 अख (akh)-हो०, जैकार, जांसी का शब्द,
 येदना शब्द, जांसीना । कफ Cough-ई० ।
 अखगोर (akhgor)-हो०, अमकर मेद ।
 Wild pear-ई० । ई० ही० गा० ।
 अखज (akhiz)-हो०, गिरफ्त-पुं० । खेना,
 घामना, पकड़ना, आशाब चरम (आंख आंको)
 में गिरफ्तार होना ।
 अखजेअ (akhzaa)-हो०, संकुचित प्रिय,
 अयुग्म, घीना, डिंगना दि । ड्वार्फ Dwarf,
 पिगमी Pigmy-ई० ।
 अखजर (akhjar)-हो०, सब्ज-पुं० । हर,
 हरी-दि०, ई० । हरित-सं० । हर, सखुज-ई०
 घीन Green-ई० । इतिव्या [हकीम शोयो]
 से इसकी चार कदायें स्थिर की हैं, यथा—
 [१] कुस्वकी या पिस्ती अर्थात् पौधा/मायुक

हरितपत्र, [२] नीलजी अर्थात् नीलगूँ, नील-
 धर्तु(३) जखारी या जंगारी या मटियाला सब्जी-
 मायक अर्थात् हरितामायुक मटियाला और
 [४] गन्धने के सद्य हरित पत्त ।
 अखजर [akhjar]-हो०, कनकियों से वे
 पने वाला ।
 अखजुवा बर्ड [akhzul bard]-हो०,
 शीत लगना, शीतल वायु लगना, वायु लगना,
 प्रतिश्याय । कोरुड Cold, कैचकोरुड Catoli
 cold-ई० ।
 अखजुल शम्स [akhzul shams]-हो०,
 अ०, सिकुह शम्सियद् सिकुह । सु
 लगना आतपाचात हिं० । सन स्ट्रोक Sans
 troke, इंसो लेशन Insolation-ई० ।
 अखनस (akhnas)-हो०, अखरी नाक घाटा
 (Snut-nosed) ।
 अखनियूस (akhniyus)-पु०, पालक Spi
 naeca oleracea वा अखनैनुस ।
 अखनैनुस (akhnaius)-पु०, एक अमसिद्
 वृद्धि है जो शर स्थानोत्पत्त । नहरों के किमारी
 पर उगती है ।
 अखफस (akhfush)-हो०, अखरी अर्थात्
 बुग्ना [दिवसांध] रागी । Day blind-ई०
 अखफाक (akhfak)-हो०, आम्बरेल,
 हरकपेवा [कवाविद्येय] ।
 अखबसान (akhbhasan)-हो०, मलमूत्र
 अर्थात् गूदमूत्र से संकेत है, (२) मुखजुमेंधि
 वा अमिध । एक्सफोमैण्डस Exorom-
 'onids-ई० ।
 अखम (akhbm)-हो०, लकाच और मी (अ)

रसायनिक संसृष्टन—देना जंगली अणारोट ।
अखरीट (Akharout)—पं०, अजरोट, अ
होट । Walnut—ई० ।

अखरोस (Akhros)—यु०, एक वृद्धि है जो
फ्रांस तथा सर्वे दरियाई देशों में उत्पन्न होती
है । जंगली नहीं ।

अखर्यूस (Akharyus) यु०, पहाड़ी गन्ना ।
अखरसाज (Akharsaj)—एक वृद्धि है जो
उष्ण देशों में पर्व शृंगक रूपानों में उगता है ।
मत्तप्य के कद के बराबर अथवा कुछ अधिक
ऊँचा पर्व लुरवरा और अखीर के समान
नर्म और कोमला होता है ।

अखलाः (Akhalah)—सं० पु० उत्तम घेय ।
घे० निघ० ।

अखाङ्गाकामेद (Akhadā-ka-bed)—ई० ।
अखातम् (Akhatam)—सं०, स्त्री०, देवपाल
हि० । देवपाद्—घे० । हेंब० का० ४ । पुष्क
रिणी । अम० ।

अखाद्य (Akhadya)—हि०, अमद्य, खाने के
अयोग्य । Uncatalé ।

अखाद्य (Akhadā)—वर०, (पे० घ०) क्षल,
खक, । Bark ई० । सं० फा० ई० ।

अखाद्य मियाडी (Akhav miyan)—वर०,
खक, खक । Barks ई० । सं० फा० ई० ।

अखियारी (Akhiyari)—पं०, बनशुष्पाप ।
Wild rose—ई० ।

अखिल (Akhil)—हि०, सं०, समस्त, सारा,
सब । होल Whole ई०

अखिलिका (Akhilkā)—सं०, पुं०, करेली
खेरी, शुद्ध कारबेसि । उष्ण—घे० । A kind

of gourd—ई० । Momor dia Charan-
tin, Linn ले० । देको कारबल्ली, करला ।

अनीतहे जोइयह (Akhila-kouy-
vali)—अ०, अनाताते चरम-
चक्षुरोग विशेष जिसमें नेत्रके सामने चिन्ता
रियां अथवा तारे टटिगाचर होते हैं । मसूरी
घांभिरेशीम (Musoe volitantes)

अन्वीफ (Akhif)—अ०, जिसका एकनेत्र
प्रथम और दूसरा इरित या नीलवर्ण युक्तो ।

अन्वीरुस (Akhirus)—यु०, अन्नको गेहूँ के
अतिरिक्त एक वृद्धि है जो जल के समीप उ-
गती है ।

अखील (Akhil)—अ०, अस्तिर, हृष
क्षय में रंग अशुद्धो घाका । (१) गिरगिट,
फेमीलिअन Ohamoleon—ई० । (२) एक
कमी बण्डा है जो घटा २ पदमात्र रंग पर
लता है, (३) एक मकार की पत्ती है जिसके
परी में विभिन्न प्रकार के रंग होते हैं ।

अखीलस (Akhilas)—यु०, एक कायिक और
शुष्क वृद्धि है । an astringent and dry
herb—ई० ।

अखी (खी)—खूस (akhilus)—यु०
नासकाह अजवाहन—हि० । Carum (ptyo-
lotis) Ajowan, D. C. ले । अ० अन्वास्व
चक्षुकोष—शोथ, नेत्रके भीतरी कोशिका शोथ ।
आवसद्रक्यन आफ ही पंक्ता Obstruction
of the punota—ई० ।

अखुधिपः (Akhu vishāh)—सं०, विन्दील,
घर्गरपेल, देवकाजी—हि० । Luffa Echina-
tā, Roxb—ले० । फा०—ई० ४ भा० ।

अखेटिक (Akhetik)-सं०, युद्ध विद्येय ।
 अखेररी (Akherari)-पं०, पट्टीय, झाड़ी,
 देर ।
 अखोट (akhot)-को०, अजयोट । Walnut-
 ut-इ० ।
 अखोड (akhod)-गु०, अजयोट । Walnut
 इ० ।
 अखोर (akhor)-काष्ठ०, अजयोट । Walnut
 इ० ।
 अखोर-मोरनु (akhor moranu)-कमा०,
 'सिंहोर' सहार दि, मय्य० । भाफोटिक-सं० ।
 Streblus asper-ले० । इ० में० में० ।
 अखोरी (akhori)-पं०, पट्टीया, झाड़ी, देर
 पं० ।
 अख (akh)-हो०, खेदार, खाँसी का शब्द,
 वेदना शब्द, खाँसना । कफ Cough-इ० ।
 अखगोर (akhgor)-हो०, कफ, अमरुद मेर ।
 Wild pear-इ० । इ० ही० गा० ।
 अखज (akhiz)-हो०, गिरफ्त-पुं० । जेना,
 घामना, पकड़ना, आशोष खरम (आँख आँगो)
 में गिरफ्तार होना ।
 अखजअ (akhizaa)-हो०, संकुचित श्रेय,
 अयुष्य, पीना, डिगना दि । ड्वार्फ Dwarf,
 पिग्मी Pigmy-इ० ।
 अखजर (akhjar)-हो०, अ०, लवण-पुं० । हरण,
 हरी-दि०, इ० । हरित-सं० । हरण, सधुय-वं०
 ग्रीन Green-इ० । इतिव्या [हकीम जोगी]
 ने इसकी चार कहार्यें स्थिर की हैं, यथा—
 [१] फुलकी या पिस्ती अर्थात् पीतमायुक्त

हरितधण, [२] नीलजो अर्थात् नालगूँ, नील
 पर्ण(३) ज्वाली या जंगारी या मरियाला सन्धी-
 मायण अर्थात् हरिताभायुक्त मरियाला और
 [४] गन्धने के सहस्र हरित धण ।
 अखजर [akhjar]-हो०, कमखियों से वे
 खने वाला ।
 अखजुल बर्द [akhjul bard]-हो०,
 शीत लगना, शीतल वायु लगना, वायु लगना,
 प्रतिश्याय । फोल्ड Cold, कैचकोल्ड Catola
 cold-इ० ।
 अखजुल शम्स [akhjul shams]-हो०,
 अ०, सिकन्दर शम्सियह स्कन्दशम्सियह । सु
 लगना आतपाआत हि० । सन स्ट्रोक Sans
 troke, इन्सोलेसन Insolation-इ० ।
 अखनस (akhnas)-हो०, अखरो नाक वाला
 (Snul-nosed) ।
 अखनियूस (akhniyas)-यु०, पाकक Spi
 naoca oleracea या अफैनुस ।
 अखनैनुस (akhnainus)-यु०, एक अमसिख
 बूटी है जो तर स्यामोत्थ । महरो के किनारों
 पर बगती है ।
 अखफस (akhifash)-हो०, अखरो अर्थात्
 बुग्या [विलसाय] रंगी । Day blind-इ०
 अखफाक (akhifak)-हो०, अखरो, आम्ब्रेल,
 इरफेवा [लताविद्येय] ।
 अखधसान (akhbdhan)-हो०, मल्लिक
 अर्थात् गृहभूत से संकेत है, (२) मुकदुर्गमिष
 वा अग्नि । एक्सोमोमेपटस Exorom-
 onis-इ० ।
 अखम (akhlm)-हो०, लहार की मी (स)

फो शिकम (अलखाम) । Crown-रं० ।
 अखमाद (akhmad) أحمد ताप पुमाना,
 गर्मी मारना, आग को लौ धयाना, बमआर
 करना, ताप शमन करना ।
 अखरब (akhrab) أحرب -अ०, वीरान मुकाम-
 उर० । निर्जन स्थान-हिं० । निष्प्रका परिभाषा
 में, कणफटा फो कहते हैं अर्थात् यह व्यक्ति
 जिसका कान फटा हो ।
 अखराम (akhram) أحرام -अ०, जाहहरे अख-
 मियह أحرام مية नफ्टा, छेदन शस्त्री
 परिभाषा में नफ्टा उगार, रुकवाहिन का
 यह उगार वा फन्धे का ऊँचाई बनाता है,
 अउकद । एनेमिथान प्रोसेस (noremion
 Process)-रं० ।
 अखरस (akhras) أحرس -अ०, मूक, गुमा ।
 डम्ब [Dumb] रं० ।
 अखरस (akhras)-यु०, नाशपाती, अमृतफल ।
 Pyrus Communis-सं० ।
 अखरीअ हब्बुल अस्फर (akhri habb
 ul asfar) أحريح حبوب أصفر अ०, पुष्प । फड़ ।
 Carthamus Tinctorius, Linn-सं० ।
 अखरीत (akhrit) अ०, أحريط जंगली गन्धना ।
 अखरीतूख [akhratus]-यु० जंगली करमच,
 - कम्बकला, गोभी मेद । Wild cabbage-
 रं० ।
 अखलाह [akhlah] एक कटकयुक्त घुटी है
 जो वाजिरत के बराबर होती है । पुष्प नीले
 एवं श्वेत और पत्ते कठोर होते हैं ।
 अखलात [akhlāt]-अ०, أحلاط [य० य०],
 खिल [य० य०], أحلاط -युगामी वैद्यकके मता

नुसार खिल [वाप] चार है, यथा—सौश
 [पात], खफ्ग [पिच], यल्गम [फफ, इलपा]
 और खग [रक्त] । शारीरिक द्रव [तरी]
 र्थात् (अ) शरीर की यह चारों रतुसवें [हरो,
 सिग्घता] जो भोजनके प्रथम परिवर्तन द्रव्य
 उत्पन्न होती हैं । ह्युमर्स Humours-रं० ।
 अखलीलुल मलिक [akhlilul malik]-
 रं०, तजभादशाही ।
 अखशाम [akhsham] أخشام अ०, राश्म रामा
 प्राणश रोगी । यह रागी जिसकी प्राणशक्ति
 नष्ट हो गई हो अर्थात् जो वस्तुओं का गन्ध
 को न मालूम कर सक। अनासमैटिक [ano
 smatic]-रं० ।
 अखसह (akhsah) أخشه -अ०, गापर, गु ।
 डङ्ग Dung, फोसेज Pooes-रं० ।
 अखसामुलयेन (akhsamulain) अ०,
 أحصا الوين पलकों के बिनारों के मिलने का
 स्थान ।
 अखसिनह (akhsinah) अङ्गली राई । Br
 assica Juncea (Wild)-सं० ।
 अगः (agah)-सं०, पु०, पहाड़, पर्वत, -हिं०
 माउण्टेन Mountain । पहाड़, आग्नेय व सौम्य
 गुण मेदसे दो प्रकारके होते हैं । इनमें बिन्ध्य
 पर्वत आग्नेय गुणयुक्त और हिमालय सौम्य
 गुणयुक्त है । आग्नेय गुण विशिष्ट पहाड़ों में
 होने वाली औषधिया अग्निगुण विशिष्ट होती
 हैं और सौम्यगुण विशिष्ट पर्वतों में होने
 वाली औषधें सौम्यगुण वाह्यत्व होती हैं । आ०
 पुक, सर्प, सूर्य । Tree, Serpent, Sun-
 रं० । दे० अ० ।

अगजः (agajah), सं०, पुं०, आर्द्रघनिया, नी-
पासी घनिया-हिं० । तुम्बुरु, आर्द्रघान्य-सं० ।
अँबायने-सं० । Excoaria agallooha
(seeds of) दन्दा, बाग्दुहा, परगाछा-सं० ।
वे० श० ।

नोर—तुम्बुरु तेजबल वृक्ष का बीज है ।

अगजन (agajan)-सं०, अफानी बूटी ।

अगजम [agajam]-सं०, ह्रीं०, शिवाग्रज,
शिलाजीत । Bitamon । २० मा० ।

अगसि (Agatti) वा०, गुं०, मला०, हिं०, }

अगती (Agati) Agati Grandiflora }

'अगस्त्रिया' अगस्त (त्य) पृथ ।

अगतीहून (Agatihun)-सं०, एक दवा है
जो मय अङ्ग और पत्तों के उधर में दी जाती
है । सु० भा० ।

अगथिया (Agathiya)-हिं० }

अगथियो (Agathiyo)-गुं० }

अगस्त्रिया, अगस्त वृक्ष, थयिया हिं० ।

Agati Grandiflora,

अगदः (Agadah)-सं०, पुं०, (१) रोग
(disease), (२) औषधि (a medlo-
ment) वा० मि० व० २० वा० उ० ३५ अ० ।

(३) दद्रुम वृक्ष, 'अँकपङ्क' हिं० (Ring-
worm Shrub) । दाद्रुमर्वण-सं० ।

(४) हिं०, रोगमुक्त, आरोग्य, निरोग,
सुस्थ (healthy) वा० मि० व० २० ।

अगदम् (Agadam)-सं०, ह्रीं०, (१) आरोग्य,
स्वस्थ, निरोग (health, healthy) ।

(२) प्रतिविप, विपन्न औषधि-हिं० । फादे

जहर (۱۰۰۰۰) फा० । 'तिपाङ्क' (۱۰۰۰)-
अ० । एरिडोट Antidote इ० ।

अगदंकरः, ईकारः (Agadankarah, n-
nrah)-सं० पुं०, वीच, चिकित्सक । A p-
ysician । सं० मि० व० २० ।

अगदतन्त्रम् (Agad tantam)-सं० ह्रीं०
विप चिकित्सा विषयक तन्त्र, निश्चित रूपाव-
न अहम विप चिकित्सा, विप तन्त्र (राज-
रत्नसुखमिमादा (علم السوء), इत्सुसुम्
(علم السوم)-अ० । टॉक्सिकोलॉजी Toxic-
ology इ०) यह शब्द भावि अष्टवि-
सहस्रान्तर्गत वैद्यक का एक अंग विशेष है
सु० व० १ अ० ।

यह शास्त्र जिसमें विषों के वर्गीकरण, य-
नके मनुष्य शरीरपर्यन्त पर होने वाले प्रभाव
एवं लक्षण तथा उपचार और चिकित्सा के
अंगद प्रभृति का पूर्ण विवेचन किया जाये ।

अगदनस्यम् (Agad nasyam)-सं०, ह्रीं०,
सर्वदण्ड प्रभृति विषयक तस्य विशेष, विषम
तस्य । Stornutatory used in snake
poisoning । सु० कल्प ।

अगदाञ्जनम् (Agadanjanam)-सं०,
ह्रीं०, विष शरीर मुञ्चित हुये प्रभृति का अ-
ञ्जन, विषम अञ्जन । Collyrium used as
antidote to poison । सु० कल्प ।

अगन (Aghan)-अ०, मिमिमि, यह
व्यक्ति जो नाक में दोत करे अर्थात् नाक से
बोले ।

अगन चरमा-नोका (Aghan Chasmano-
ka) आतशी शीशा, सूर्यकास्तमधि, अग्नि
गर्भ । The sun-stone ।

अगनश (Aghanas)-यत्न 'इजा' नोसादर,
पुसाद-हिं० । Ammonii Chloridum ।

अगना (Agana)-उ० प० सू०, घामन ।
 अगनाद (Aganad)-प०, आकनादि,
 बनलिकिका-सं० । *Stephania hernan-*
difolia, wall, Wight फा० इ०, १ भा० ।
 अगनि (Agni)-इ०, जलीय ऊर्षधसा ।
Adeps Lanae Hydrosus, (इ० मे० मे०)
 अगनीयुम (Aghaniyus)-सिर०, 'कि
 मिज मसूर के धाना के धरावर रक्तपण' का
 एक जानवर है *Coolinoal* ।
 अगनीम (Aghanis)-यु०, संमाल, मि
 गुण्डी हि० । *Vitex negundo*
 अगन्धिकर (Agandhikam) सं० ह्रीं०
 सौयचंल लवण, सौखर लवण-हि० । सचल
 लवण यं० । *Sosha salt* । भा०, मद्र०,
 देणो-सौयचंलम् ।
 अगधर (Aghbar) اغبر अगधर
 गुग्गार (गर्व) आलू, गुग्गारी, याकी रंग,
 मटियाला-उ० । धूलिपूर्ण, धूसर पण, मट
 मेला हि० हटीं *Dirty*-इ० ।
 अगम (Agham) ام अ०, जिसके लोट
 और गुदो पर अधिक रोम हों ।
 अगमकी (Agamaki)-हि०, 'अदिलेजन'
 (साँप से समान चित्रित), घण्टाली (घु
 गुरु को तरह चित्रित)-सं० *Mukia So-*
brella Arr (*Bristly Bryony*) । फा०
 इ० १ भा० । इ० इ० गा० ।
 अगया (Agaya) } हि०, (१) दो
 अगयापास (*Agayapasa*) } दिव्यपुत्र, गंध
 लण, गुग्गुलु । *Andropogon Schoeran-*
thus, *linna* फा० इ० ३ भा०, इ० मे० मे० ।

वेजो अगिया । २-जलधमियां, देवकाडर-हि० ।
 स्वरूप हरा । स्वाद वसुधा और तीक्ष्ण । परि
 श्याम, प्रसिद्ध वृद्धी है । रासायनी लोग इसके
 दूढ़ने में बहुत रहते हैं, प्रकृति तीसरी कक्षा में
 गरम और दूसरी कक्षा में ऊर्ध्व है, हानिकर्ता
 स्यचा को और खुजली उत्पन्न करता है ।
 वर्णनाशक मुर्दासंग और गाय का घी । माथा
 २ रत्नी । गुण, कर्म, प्रयोग, (१) यदि इसके
 स्वरस में घालीस दिन गंधक भिगोकर घृष
 में रखें फिर उस गंधक को २ रत्नी पान में
 रखकर जायें तो अत्यन्त छुवा लगती है, (२)
 अति कामोद्दीपन कर्ता, (३) यदि दंग को
 इसके स्वरस में भरम बरे तो श्यास कांस को
 अग्रपुण नहीं बरती (निर्विषल) । पु० पु० ।
 अगर (Agar) हि०, वालोअगर, अगरसत ।
 अगुरु, धंशिक, राजाह, लोह, फामिज, मिमिज
 जोहक (अ०) आनाय्यज (इ०) चंशक दा०
 लघु, पिडिज (के०) भुज्ज, छण, लोहाभय
 अर्थात् लोहे के सम्पूर्ण नाम (२०), रातव,
 वर्णमसादन, अगार्यक, अमार, अतिकण्ठ,
 किमिजप, और वाष्टक, लोह, पयद, योगज
 पावक, सं । अगद, अगुरुचन्दन, अमु यं० ।
 ऊर् (*عور*) ऊर्दुल्लगुर (*وردلغور*) ऊर्
 गर्दी (*عردغري*) अगरे दिग्दी (*المرمدى*)
 अ०, फा० । एकिलरिया पनोनावा, *Aquila-*
ria Agallocha, *Iloxb*, यं० गलके
 मिसस *A. Malacensis*, *Lamp* यं० जो
 पेडा *A. Obata* सं० । एनोवुड *Aloe wood*
 रंग *Enle wood* इ० । पायम डी रंग
 रब *Boisde Calambao* मी० । अगद,

अग्रीचम्बन, ता० । हरगुहखेटु, ते० । छप्पा
गद, अगद, ता० ते० कना० । छप्पागद शिखा
वाले झाड़ू म० । अगद, गु० । अकयन, धर० ।
आकिल-मलावा । हागलंगध, पु० । खिन-दि
अंगधोन । गरु, कयांगहरु, मज० । साडी,
आसा० ।

यारमलेसीई धर्ग (N O Thymela
eocaa)

उन्नभन्पान—आसाम पूर्वीहिमालय, पश्चिमी
मलय पर्वत, पश्चिमी पर्वत, भूटान, लिगाहद,
डिपेय पहाड़ी, मर्त्यासं पहाड़ी, बंगाल प्रांत
पश्चिम मापद्वीप, मलाका और मलायाद्वीप ।

इतिहासे—अगर का सुगन्धि तथा औ
षध मुख्य उपयोग आजका नहीं परन्तु अत्यन्त
प्राचीन है । इसकी मन्थनजा का पत्ता तो के
वल एक इसी बात से लग सकता है कि इ
सका वर्णन सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों
सुश्रुत, धरक, आदि में आया है । इतना ही
नहीं, पश्चिम कोचान और वेङ्गपात प्रभृति के
साथ अहजाद तथा अहमीम नाम से इसका
विकार पहाड़ी धम ग्रंथों में भी पाया जाता है
(साम ४५-न कदा ७-१७) । दोसकुरीदुल
(Dioscorides) के कथनानुसार यह मा
रत बर्ष एवं अरब से यूरोप में लाया गया ।
ईट्रियस (Aotus) काक से पर्याय का
औम लेकको ने एलोवुड (Aloo wood)
नाम से इस औषधि का उल्लेख किया है
और इसी नाम से यह अथ तक यूरोप में प्र
सिद्ध है । अगद का संस्कृत नाम अनाप्यंज
या अनाप्यंक है । अस्तु, बिलिपम । अरमाक
महोदय का निरूपण है कि भारतीयों से म

धम कदाचित् पूर्वी एशिया के मूलनिवासियों
को इसके उपयोग का ज्ञान हुआ । प्राचीन
समय में सुश्रुती के राह यह मध्य एशिया
और फारस में लाया गया और वहां से अरब
और यूरोप पहुँचा । राजनिर्णुकार ने छप्पा
गुद (चाकाअगर) काष्ठागुद (पीली
अगर) दाह काष्ठम्, दाहाग (गु) क (गुअर
देश प्रसिद्ध अगद विशेष) तथा स्वाद्गुद (म
धुरे रसागुद) नाम से इसे पाँच प्रकार का
लिखा है (विस्तृत विवरण के लिये उन नामों
के अन्तर्गत देखिये) ।

ऐसा चिन्तित होता है कि अरब यात्रियों ने
इसके व्यापार एवं उत्पत्ति स्थान के सम्बन्ध
में काफी समाचार लभ्य किया है ।

पोहसा-खिन—सेरापियम ने दिदी मंडली
सिम्फ्री और कमारी नाम से इसके चार भेदों
का वर्णन किया है । दक्षिण अश्विनि में इन
हीना इसके सम्बन्ध में निम्न विवरण देते हैं
मंडली दिदी या (पहाड़ी) समंद्री, कुमारी,
सम्फ्री और काकुली, किस्मुरीये दानो मुहुल
मधुर होती हैं । इनमेंसे सबसे अरब्य प्रकार सु-
जाई, कन्तारी, मन्तारी लययी या रन्जयी है । म-
न्तारीसर्षोत्तम है, इसके बाद समंद्री पूसरवर्ण
युक्त, यसायम एवं शित्रीय, भारी प्रवेतधारियों
से रहित और पीरे २ अलने वाली जाती है ।
काई २ भूरे से काला अगद को उत्तम क्यात
परते है और सपसे अधिकतर काली, स्वत
धारा रहित यसायम तथा शित्रीय और पीरे
पीरे अलनेवाली "कमारी" जाती है । संघ
में सर्षोत्तम अगद यह है आ बाली, भारी, अल
में इदनेयली, भूरे धरने पर रखा रहित लाये,

तथा ओ जलमें न सूखे यह अच्छी नहीं। अगर बाकी भी अगर जो लगभग इन्हीं नामों से पुकारते हैं।

हाजी कौस्तुभ अन्तार (१३६८) इसे ककुल कूज कहते हैं और इसका फारसी नाम बल कूज बतलाते हैं।

मीर मुहम्मद हुसेन (१७७०) लिखते हैं : ऊर जिसे हिन्दी में अमर कहते हैं, यह एक घृण की लकड़ी है जो कि सिखदह के निकट अतिथिया की पहाड़ियों में उत्पन्न होता है। ये शूल बंगाल में दक्षिणस्थ उपुषों में ओ ओ कि विपुयल देखा के बरकर में स्थित है, पाये जाते हैं। इसके शूल बहुत ऊँचे होते हैं, और प्रकाण्ड पर्यं शान्तीयं बक होतीं हैं और काष्ठ मुकु होता है। इसकी लकड़ी से घड़ी प्यासे तथा अन्य वर्तन बचाते हैं। यह अदृता गलता भी है और इस वृक्ष में विरुत भाग सुगंध युक्त द्रव्य से व्याप्त हो जाता है। अत उक्त परिवर्तन जाने के लिये इसे नाम पृथिवी गर्भ में गाढ़ देते हैं। अगर के जिस भाग में उक्त परिवर्तन आ जाता है यह तैलयुक्त भारी एवं फाला हो जाता है। पुनः इसे काटकर पूषक फर जल में डाल देते हैं। इनमें जो जल में सूख जाता है उसे गर्डी (डूबने वाला) ओ आंशिक जल भस्म होता है उसे नीमगर्डी (आधा डूबने वाला) या समालह-आला, और ओ सेला रहता है उसे समालह कहते हैं। इनमें से अन्तिम सर्ष सामान्य होता है गर्डी फाला होता है तथा अन्य फाले और इसके पूसर पण के होते हैं।

औषध कार्य के लिये ऊँचे गर्डी ओ सिल

हट से मास होता है सर्वोत्तम होता है। इसे विक्र सुगंध मय वैलीय तथा किञ्चित् कसेबा होना चाहिये, इससे मित्र भिन्न कोटि के ब्याल किये जाते हैं। चूँकि ऊँची लकड़ी को कुचल कर जल में भिगोकर अथवा इसे बावाम के साथ मित्रा के पुनः कुचल दबाकर इसका तैल निकाल लेते हैं, इसलिये लोगों में मायः ऊँचे पाम (कच्चा ऊँ) ही लिखा जाता है। और क्योंकि "चूरा अगर नाम से अगर के टुकड़े भारतीय व्यापारिक द्रव्य हैं। अस्तु इसमें बन्धन, तगर, अथवा एक सुगन्धित काष्ठ के टुकड़े मिला दिये जाते हैं।

राक्षसर्ग तथा अन्य धनस्पतिराक्षियों में सिखदह में अकिलेरिया (aqvilaria) अर्थात् अगर की परीक्षा की और हालही में यह निश्चय किया गया कि यह मर्गुई आर्चिय लोगो द्वीपों में उत्पन्न होने वाले एक वृक्ष की लकड़ी है। गैम्बल Gamblo के कथनानुसार इसका यमी नाम 'अन्व्यायु' है और अद टेनासरम तथा मर्गुई आर्चियलोगो में उत्पन्न होता है।

अगर (aloowood) (पूष देने के लिये अथवा सुगंध हेतु समस्त पूर्वीय देशों में व्यव हत है और पूषकाल में यह पुरुष में तर्ही प्याधियों के लिये व्यवहारमें आता था जिनके लिये आजमी यह भारतवर्ष में मयुक्त होता है

बानस्पतिक विवरण—अगर के बेहोत टुकड़े होते हैं ओ उनमें राक्षके परिमाणनुसार पूसर या गहरे पूसर पण आदि विभिन्न रंग के होते हैं, इसके लकड़ी दोनो रंगों के लकड़ी के लगे हैं

विभक्त होते हैं, ये जलमें टालने से जलमग्न हो जाते हैं। इसे चवानेसे ये दांतों में बिन्दव जाते हैं तथा मूत्र प्रवोत होते हैं। स्वाद तिक्त तथा सुगन्धयुक्त। जलाने से इसमें से भाव्य गंध।

प्रयोगार्थ—काष्ठ।

रसायनिक संगठन—एक वृद्धशील तैल, जो ईंधन में तपशील होता है, ताल जो मधुसार (अलकृदाह) में घुलनशील तथा ईंधन में अग्नियुक्त होता है।

औषध निर्माण—काष्ठ (१० में १) मात्रा— ४ से १२ ग्राम, चूर्ण तथा कक, अनेक औषधियों से युक्त पाक आदि मात्रा—१० से ३० रत्नी।

गुणधर्म आयुर्वेदीयमतानुसार—अगर शीत प्रथम और कासप्र है। ५०।

अगर पात, कफहर, पर्यप्रसादक, (देह का रंग सुधारनेवाली) लुजही नाशक और कुष्ठ नाशक है। अगरकी खरकड़ी को जल में और कर उस पानीको पीने से अर में लगने वाली एषा न्यून होती है और यह मृगी एवं अन्नाह आदि रोगों में परमोपयोगी है। सु०।

अगर तिक्त, कष्य, अरपरी, सेर करनेसे कृता उत्पन्न करनेवाली, तथा को हितकर, तीक्ष्ण, पित्तकारक और हलकी है। तथा अणु कफघात, पमन, मुखरोग एवं बलु और कर्ष रोग नाश करने वाला है। ४० नि० प० १२। वा० वि० ४ अ०।

जो अगर काले रंग का होता है उसे कृष्ण गुण कहते हैं। यह अधिक गुण वाला और जोड़े के सुदृग है। अगरके

समाये हुये तैल में जो काले अगर क सुदृग ही गुण हैं। मा० क० प०।

अगर गंधि, गरम, तिक्त, वटु, स्निग्ध, मंगलदायक, शक्तिकारी, घृष के घोष्य, पित्त जलक, तीक्ष्ण है तथा श्वात, कफ, कर्षरोग और कोढ़ का नाश करता है। जेप में और लगाने में श्लेष् है। नि० २०।

यूनानी मत के अनुसार—प्रकृति दूसरी कक्षा में पारस और तीनरी कक्षा में रहता है। किसी र के मतानुसार दूसरी कक्षा में गरम व कृत है हानिहर्ता—दृष्य प्रकृति को इसका पीमा और घृमी देता। दर्पण गुहाय, कपूर, तिक्तशील। प्रतिविधि—दाखचीनी, लौंग, केसर, बन्दन, बाजसुक्त, कमीमस्तगी। गुण, कर्म, प्रयोग (१) हलकी, अपनी सुगन्धि एवं प्रकृतयोष्मा प्राण वायु को बलप्रद होनेके कारण आमाशय घट्टन, हृदय तथा इन्द्रियों को पन्न देती है और इसी कारण मस्तिष्क के लिये अत्यन्त लाभदायी है, (२) अपनी सुगन्धता एवं रसा से रोधउद्रघाटक है, [३] इसका उपयोग मुख को सुगन्धि प्रदान करता है और [४] आयु लयकारक है। नफी० १ [५] हृदयको प्रसन्न करता, [६] पात की बलप्रद [७] यमार्थय र [८]

शनेकन डूो पलशायक, वायुनि सारक तथा
उत्सेजक औषधियो वा यह एक अथयय है ।
निकुरल (Gout) तथा संधियात एवं
घमन निग्रह हेतु भी इसका उपयोग होता
है । अथ चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थ एवं छतों
की वेदना शमनार्थ इसको अंगमर्दमरुमा
धूनी रूप से उपयोग में लाते हैं । बालकों
की फोसी में अजर तथा इश्यरी (Indian
blirthe wort) के कहरक माल्टी के साथ यस्त
रुपल पर लगाने हैं । और शिरः शून्य में इसे
सिर में लगाने हैं । घृष वस्तियों के बनाने में
भी यह प्रयुक्त होता है और इसे अजर की
बन्ती कहते हैं ।

अवारस ऊर्ध्वमें भी यह पड़ता है (अस्तु वेको
वहाँ) इसकी मात्रा १० से ३० रत्नी तक है ।
गुण-शुक्र सम्बन्धी निर्गमता, सिर में चक्रर
धाना तथा श्वेतधर में यह माझी पलशायक
औषध है । ६० मे० मे० ।

अजर (Agar) अ फा०, सुरीन, चूल्ङ-उ० ।
निर्ग-हि० । Hip ।

अजर-अजर (Agar-agar) ६०, संका०, चीनी
घास । (Gelidium cartilla ginoum or
G Cornoum) ६ मे० मे० ।

अजरता (Agharata) -पर य० 'छोटी माई
का वृष (फराशवृष) Tamarix gallaon,
Linn ।

अजर तेलियह (Agar-teliyah) -हि०, ऊर्ध्व
वर्की (مرهوقى) अर्थात् पानी में वृष जाने
वाली 'अजर' या जो वैकीय एवं श्यामवर्ण
की तथा उपरोक्त गुणवाली अर्थात् वृष जाने

-वाली हो । Aquilaria Malaccensis,
Lamb ।

अजरघना (Agardhatta) सं० प्रा०
अजरघाक (Agardhak) } गुम

द्रोणपुरी, Lauons Cephalotes पर
६० ३ मा० ।

अजरल्यूस (Aghar larys) यू०, इन्द्रायन
का फल हि० । Citrallus colocynthis,
Sohrad (Fruit of Colocynth) ।

अजरस (Agharas) यू०, वृत्र विधेय, इसके
गोध को पहचाना करते हैं । Succinum
Amber [tree of]

अजरस्त (Agar sat) हि० । 'अजर' । Aqu-
ilaria agallocha ।

अजरस्त (Agharas tas) यू० वेद, गयाह । एक
गाँठवार वृक्ष अथवा घास ।

अजर सोमिनह (Agar sominal) पर
य०, 'गाकिल' غاكيل क नाम से प्रसिद्ध है ।

अजरा-री (Agara ri) सं० श्री० 'देवदाली'
देवदाली है । a kind of grass, Dootar
अ० टी० म० । [९] पीत 'देवदाली' । मा०,
य० मि० य० ३ ।

अजरिया [aghariya] यू०, मिट्टी का नाम
है । a kind of earth ।

अजरियूस [aghariyus] -यू०, [१] य
जर Daucus carota (carrot) । [२]
'विन्दाक' Luffa Lobinata ।

अजरी [agari] -सं० श्री०, देवताङ्क वृक्ष । ६
श० । द०, 'अपामार्ग' हि० । achyranthe
aspera ६० मे० मे० ।

अरु [agaru]-सं० झीं, 'काली अणु', अणु चंदन, कृष्णागुरु हिं०। शगराह-चंदन सं०। also wood (the black variety) वा० सं० २० अ०। देखो—अणु।

अणु गंध काष्ठ (ngaru gandh kashtha) सं० झीं, 'रक्तचंदन' Pterocarpus santalinus, Linn (wood of—Redsandal-wood) सं० फा० इं०।

अणु गौलीतूस (agharu ghoulitus) यू०, 'बोस' हिं०, फा० सं०, व०। गंध रस सं०। मुट, अ०। Myrrha।

अणु रूस [agharus]-यू०, खरहा, खरगोश केयर Hare, रेपिट Rabbit-इं०

अणु सराह (agaru-sarah)-सं०, पु०, कालीअणु, कृष्णागुरु। काला अणु-सं०। also wood [the black variety]

अणु तुर्की (agaru turki)-फ्र०, 'बस' हिं०। वज (वृ) वज (वृ) अ० acorus। calamus, Linn (Root of-sweet flag) शोट—बहुधा समस्त वर्गमूलर अणु रेपी कोषों में बस (Sweet flag) को पुष्करमूल (Orris root) के साथ मिलाकर घम वारक बना दिया गया है। अतिरिक्त इसके अरबी शब्द बज या बस रियाईसन (Richardson) शेफलपियर [Shakospear] और फॉर्बीज [Forbes] मनुष्य कोषों में प्रमादपथ कुलिद्रग [Gallnagal] के खिद्ये प्रयोग किया गया है। अतीस प्रकरणा प्तगठ फारसी नाम "बछे तुर्की" के संबंध क माट को देखिये। सं० फा०, इं०।

अणु [agal]-ता०, थिकरस्ती-सं०। बीगा-पोमा, आसा०।

अणु सौलीस [aghal solis]-यू०, एक वृक्ष है जिससे अणु (उल) नामक गोंद निकलता है। -

अणु लाकोष्ठ (agala kosht) सं० (ant-erlor chamber)

अणु लांगळ (agalagal) हिं०, बचीटा, किं गली।

अणु लान अशी (aghalan ashi) यू०, अंड वेदस्तर। Castaoroum।

अणु लाय (agalaya) ता०, थिकरस्ती सं०। बीगापोमा-आसा०।

अणु लीकन (aghaligan) यू०, मैफुजज पोशय के नाम से प्रसिद्ध है।

अणु लीकश (aghaligash) यू०, दोसर (एक वृक्ष है जिसके पत्ते गोंद के पत्तों के सदृश होते हैं और उसके फल पर दो तीन पत्तें हाते हैं और ऊपर से बाह्य के समान रोभा होता है)।

अणु लीके (aghaligo) यू०, सूखी का तेल, (२) मैफुजज।

अणु लीतूस (aghalitus) यू०, फनेसरा। थिबर्गिगो हिं०। Bryonia।

अणु लोया पुस्तूतिस (aglala edulis, & Gary) सं०। लतेमहपा-नेया०। सिगबर्ग लेप०। पुपी गारा की पहाड़ी तथा लिजट्ट में पाएते हैं। इसका फल जाने के नाम में आता है। मे मा०।

अगलेयाकुमायू (*nglala kumayun*) जे०
गिरवन, गिरवट्टाक, कानक पं० ।

अगलेया पांखिस्टेफया फीन (*nglala Pol
yatachya-olimo Dr wall*) जे० ।
वाङ्मरपाळा । इ० हे० गा० ।

अगलेया रांज वरयान (*nglala Rox
Burghiana, Miq*) जे० । मिपंगू सं० हिं०,
य० । इलकाफल औषधि काम में जाता है
मेमो० । फा० इ० १ भा० ।

अगवन्त (*agavant*) सं० अरनी । *Erem
na Integri folia* ।

अगवत (*agharar*) हु०, पील, व्यूसी, पीयूष
The milk of a cow during the fir-
st seven days after calving ।

अगवोसी (*agavoso*) इ०, यह एक प्रकार
का निष्क्रिय शर्करा है जो राकसपत्ता (*ag-
ave americana*) नामक वृक्ष के डंठल
के रससे पृथक् किया जाता है । इ० मे० मे० ॥

अगशि (*agashi*) कना०, अगस्त वृक्ष, अग
स्तिया । *agatigrandiflora* फा० इ०
१ भा० ।

अगस्तामरेरय (*agasa tamre-rawa*) ता०
अलकुम्मी, हिं० । कुम्भिका सं० । *Pistia
Stratiotes*, Linn इ० मे० मे०, फा० इ०
३ भा० ।

अगसाक (*aghasak*) - *अ०* : कुसाग
व्याद (*अ०* : कौषा), *Blakorow* ।

अगसीनिदा (*agasi-gida*) कना०, चकपट्ट
हिं० । बहुम सं० वाग्मरन पं० *Gassia alata*
Ringworm shrub इ० मे० मे० ।

अगसेयमरनु (*ngaseya maranu*) य
अगस्त, अगस्तिया, *ligati grandiflora*

अगस्त (*ngasta*) हिं०, } अगस्त

अगस्ति (*ng astli*) सं० पु० } *Berberis*

Grandiflora Pers

अगस्तिकुसुमः (*ngasti kusumab*) सं० पु०

अगस्तिद्रुः, मः (*ng asti-druh, drama*
सं० पु० हिं०

अगस्तिव्या (*ngastiya*) हिं०, अगधि

अगन्त, यस्त, वासना, इधिया ।

पर्याय—अथागस्तयोर्धगसेनोमुभिपुःशामुनि

अगस्त्या, यज्ञसेन, मुनिपुत्रा, मुनिद्रुमः, ।

वर्णा, पाण्डपता, एकान्डीला, वृका, वसु

सुका, यस्तद्रुः, यस्तका, यक्तपुष्पा, शिषि

शिवमल्ली, काकनामा, काकशीर्ष, स्थूलपु

सुपूरका, रक्तपुष्पा, मुनितरुः, अगस्ति, व

सेना, शीघ्रपुष्पा, ब्रह्मरि, ब्रह्मपदः, वी

फलका, यक्तपुष्पा, सुरभिया, शिवापीडः ।

ऋतः, शिवाह, शिवेष्टा, शिवाहावः, शम्भ

क्रमपूरका, इधिसभिन, शृङ्गपुष्पा, कन

करवली और पथिख सं० । यक [यो] वा

कुष्ठेर-गाह्व सं० । अगस्त अ० फा० ७०

सिस्तेनिया प्राङ्गिफ्लोरा *Sesbania Grandi*

iflora

Pora, अगेति प्राङ्गिफ्लोरा *agati Grandi*

iflora, Linn

इस्कीनार्विनी प्रा० *aeosollynom onb* (

Linn) सं० ।

जार्ज फ्लावरड एगेटी *Largoflowor*

agati इ० ।

अकति, अगती, अगति, अगति, ता० ।

मानिते, मन्त्रिते, लक्ष्यवित्ते चेद्, ते० ।
 अ.सि, मन्त्र० । अंगशो [सी] यन्त० ।
 इदानीं, अंगशो, - मन्त्र० । अंगधियो गु० ।
 अंगसेवमन्त्रु का० । अंगसेल पाष० । यगफत्र,
 पुत्र० य० ।

अंगुमितासी [शिम्बी] धर्म [N. O Log
 uminoso

अंगुवस्वान-दक्षिणी तथा पश्चिमी भारत
 पंथ, गंगा की घाटी और पंगदेश ।

धान्यवर्धक विवरण-अंगस्तिये का मूल
 मियास स्थान पूर्वाश्रिय समुदाय है, पर अय
 यह समस्त भारतपर्यं में विशेषकर पुनोधानों
 में अधिक होता है। इसकी अवस्था बहुत
 थोड़ी होती है। यह थोड़े धर्मों में ही लगभग
 ३० फीट की ऊंचाई तक पहुँचकर पुनः मूल
 भाग हो जाता है। पत्ते पत्तलके समान किन्तु
 इससे बड़े एक डंडल की दोनी और २१-२१
 अथवा इससे न्यूनधिक संख्या में लगे होते
 हैं। ये १-१४ इ० लम्बे और अंडाकार, स्याद
 में कुछ अन्न और कल्ले होते हैं। पुष्प
 पात्र कोष [Calyx] घंटाकार, त्रिसोप्लीय
 और हरितवर्ण का होता है, पुष्प, तितलीरूप
 रूप श्वेत या रक्तवर्ण (आयुर्वेद में नीले और
 स्याम दो अधिक लिखे हैं) (१४-२ इ० लम्बा,
 पत्र तथा गुदा द्वार होता है। पुष्पाभ्यन्तर
 काप [Corolla] में चार पल्लवियां होती
 हैं, जिनमें से ऊपर एक [Standard]
 और दोनी बर्गल १-१ एक (wing) तथा
 नीचे तरफिका [keel] होती है। तुर
 पिन्ना [keel] के भीतर परागकेसर [१०]
 तथा रतिकेसर [१] बँके होते हैं। प्रत्येक

गुच्छ में २ या ४ पुष्प बसस्थ डंडल में लगे
 होते हैं। इसका स्वाद लुब्धाधी तथा निक
 हाना है। फली लटकनशा १-१४ फीट फ
 लगभग लम्बी कुछ चिपटी तथा बाधों क
 मध्य में दृश्य होती है। मध्यक फली में लगभग
 ४०-४१ धोज होते हैं। कुछ स्थान लम्बाई फ
 ल चिह्निकाई और बाहर से देखने में धू
 सर-वर्ण की प्रतीत होता है। धुस्क काष्ठ
 मोटाई में ताजे काष्ठ के पर्याय होता है।
 ताजी वशा में दारों के मध्य, असमय स्वम
 २ अधुवस ताद्वर्ण के निर्वास दोष पड़ते हैं
 किन्तु पायु में लुत्ते रहने से ये पुनः शीघ्र
 प्रामवर्ण के होजाते हैं। नदीन स्थान या
 पाद्यतल रक्तवर्ण का और इसी प्रकार फ
 मर्म गौर से लंबा रहता है।

इतिहास तथा नाम विवरण-अंगस्य मुनि
 के नाम पर इस पृष्ठ का नाम अंगस्ति और
 अंगस्य प्रभृति रखे गये हैं। कहते हैं जब
 अंगस्य मुनि का जन्म होता है, तबही अंग-
 स्तिया के फल विकसित हैं। इसका औषधीय
 उपयोग आजका नहीं वरन् अति प्राचीन है

प्रयोगांश-स्वेदा, पत्र, पुष्प, मूल और तिर्थांस ।
 रसायनिक संघटन-स्वेदा में कैपायिन (Capsaicin) और निर्वास होता है।

औषधि निर्माण-रक्त कोष (२० भाग में
 १ भाग) मर्मा-१। यो० से २३ तो० । मूल
 (स्वेदा) २। मा० से १४ मा० । इसकी अङ्ग
 की सुगंध-शीघ्र पुष्प को सुकटिष्ठ रूपमार्ग
 रूप से उपयोग में लाया जाता है। श्वेत की
 मात्रा २-३ मा० । दामिकनी-पुष्प में आयुर्वेद
 करता है। वर्षमास-शुद्ध और मिश्र ।

गुण धर्म तथा प्रयोग—आयुर्वेदिक मत्तानुसार, अगस्तिया पिच कफ नाशक, गर्मी को शीत करने वाला, शीतल, योनिशूल, रुग्णा, कोढ़ तथा शोथ नाशक है। एक अर्थात् अगस्त अत्यन्त शीतल, तिक्त, मधुर और मद्गन्ध युक्त (कहीं २ " मधु गंधक" पाठ आया है जिससे अग्निप्राय मधु गंध युक्त है) तथा पिचदाह, कफ, श्वास एवं अममाशक और दीपन है। रा० नि० पं० १०।

अगधिया, शीतल, रुक्ष, घातकारक, कड़वा है, और पिच कफ आयुर्वेदिक ज्वर 'शैथिया' तथा प्रतिश्याय को नष्ट करता है।

अतस्तं पुष्प के गुण—अगस्तिया पुष्प, शीतल और गोक्षय है, तथा निदोष अम, प्लास जास, विपणैता, मूत्रघाषा और पल को नष्ट करता है। रा० नि० पा० १०।

अगस्तिया के फूल शीतल, आयुर्वेदिक ज्वर निवारक, रत्तीधे, को दूर करने वाले, कड़वे कसैले पसने में खरपरे हैं तथा पीसल रोग कफ पिच, और घात को दूर करते हैं। भा० पु० १ अ० शा० पं०।

अगस्त पत्ते के गुण—अगस्तिया के पत्ते

खरपरे, कड़वे, भारी मधुर, किञ्चित् गरम और स्पष्ट हैं तथा कृमि, कफ, कण्डू 'श्लेष्मी' विप और रुक्ष पिच को हरते हैं। रा० नि० पं०।

अगस्तियाकी फली के गुण—अगस्तिया

की फली स्तारक (कुक्षेक वस्तावर) पुच्छिशयक, रुचिकारक, हलकी, पचने में मधुर, कड़वी स्मरणशक्ति वर्धक है तथा

विदोष, शूल, कफ, पांडुरोग, विष, शोथ, (कहीं २ शोफ पाठ हैं) और गुल्म को दूर करती है, इसकी पकाई हुई शाक रुक्ष एवं पिचकारक है।

अगस्त के सम्बन्ध में यूनानी एवं डाक्टरी मत।

यूनानी ग्रन्थकार अगस्तिया को दूसरी कक्षा में शीतल और रुक्ष मानते हैं। फारसी द्रव्य गुणशास्त्र के प्रसिद्ध लेखक और मुहम्मद दुसेन लिखते हैं कि सरे कर्मा अथवा मस्तक दुष्प्रता हो तो इसके पत्तों का रस निकाल नाक में ३ घूर टपकाये तो धीरे धीरे आकर नासिका द्वारा अल आय होकर मस्तक का भारीपन दूर हो जायेगा।

बम्बई के निवासी इसके पत्ते और पुष्प के मिचोड़े हुये रसको प्रतिश्याय एवं मस्तक शूल में नश्य रूप से उपयोग करते हैं। इससे वास्तिका द्वारा अत्यन्त अलक्षाय होता है तथा शिर की घेदना एवं भारीपन रूपया दूर होता है। बि० डाइर्मांक।

फूल का साग कटके जाते हैं। छात्र पाचन शक्ति बढ़ाने को दी जाती है। पत्तों को गरम जल में भिगोकर ठक जल को पीने से सुस्वाप अगता है। छात्र में आलस पड़ गया हो तो अगस्तिया के फूल का रस छात्र में डालने से फायदा होता है। म० अ०।

यह अल्प तथा पिचहरण कर्ता है इसका पुष्प पिचनाशक, श्लेष्मशक्ति को यक्षय और नकार्य अर्थात् रत्तीधे को दूर करता है।

जाल फूल वाले अगस्तिये की जड़ को अल के साथ पीसकर पमाई हुई सुगदी का संधि घात में उपयोग होता है। १ से २ तो तक इसकी जड़ का रस प्रतिश्याय में

मधु के साथ उपयोग में लाने से यह श्लेष्मा निस्सारक प्रभाव करता है। एक भाग जग स्त्रिये की अड़ तथा इतनी ही चट्टे की अड़, इन दोनों से तप्पार की हुई लुगरी का येवना युक्त शोध में पतते हैं। इसके पत्ते को सूख भेड़क पतजाते हैं। विडारमांठ।

चेचक की प्रथमायस्था तथा अन्य स्कोट कीय उपरों में इसकी स्थवाको शीत के कपाय का क्षामदायक उपयोग होता है। टी० एन० मुकजी०।

डाक्टर मानेपिया (Dr Bonavia) के कथनानुसार इसकी छाया अत्यन्त सङ्कोचक है। और ये इसको पलकारक रूपसे उपयोग में लाने की शिफारिश करते हैं।

डाक्टर रम्फिलस (Romphilus) के कथनानुसार इसके पत्ते की पुनटिस घोट लगने अथवा कुचल जाने के श्लिये एक म सिद्ध औषधि है।

सहज कास अथवा बच्चों की सर्षी में दो पूं० बगल के पत्ते के रस का ८ या १० बूँद शहद में मिलाकर इसे अंगुली के सिरे पर लगा शिष्ट के महारम पर दाईं लोण चतुरता पूर्वक लगाती है। (१० से० से०)

इसके पुत्र को मिघोड़ का मिक्लो हूये रस को चतुर्भों में डालने से दृष्टि मीघ अथवा घुँघ को क्षाम होता है। (३० मुँरे)।

अगस्त की ताजी क्षाल को सूँदकर इसका रस निवाड़ कपड़े की बर्तिका इसमें ठर कर योनि में रखने से श्वेत मरुत तथा योनि क-पटु नाश होता है। (लेखक)

अगस्त्यः [Agastynh] सं० प्र० } अगस्तिया
अगस्त्याजय [Agastya jaya] } दि० ।

Sebania grandiflora Pers विकार०।

अगस्त्यतामरय [Agastya tamaraya] ता०
जलकुम्भी दि० । Pistia Stratiotes, Linn

अगस्त्यमोदकः—हड़ ३ पल, धिकुटा ३ पल, तेजपत्र आधा पल, गुड़ आधा पल ने मोदक प्रस्तुत करें। इसे सेवन करने से शोथ, अर्थ, प्रश्लीशोथ, उदावत तथा कास का नाश होना है। चंग० स० अर्थ० यो० स्तो० ५७

अगस्त्यरसः—पुं० । पारा, गंधक अथवा लौह, शिलाजतु, ताम्रमस, हस्ती समभाग लेकर त्रिकुटा, मांगय, अदरक, गीम की क्षाल, सम्भासु, स्वयं बक्षी के एकत्र कषाप में एकवार मर्दन कर रखें। मात्रा १ रत्नी प्र-माण गुड़, हरड़ कषीला के साथ देने से उ-दरराग का नाश होता है।

र० सा० सं०

अगस्त्य सुतराज रसः—पारा, गंधक शिग-रक, प्रत्येक १-१ ता० चचुर का बीज २ तो० अफीम २ तो०, इनका सूर्यकर मांगरे के रस की मात्रा दें। अतुपान—सोठ, मिर्च, पी-पर और शहद के साथ देने से बमन, शूल, कफ, पातबिकार, मन्वाधि, तथा घोर निद्रा को दूर करे, घृत और मिर्च के सूर्य के साथ प्रवाहिका तथा क्षु प्रकार बेभविस्तार में जीव और जायफल इनके सूर्य के साथ देने।

अगस्त्यहरीतकी } बरगल, कीच, रंघपुष्प
अगस्त्यावलेह } कचूर, हीरबरा, पञ्-
पीपल, पीपला

शूल, धिन्नक, मारंगी, ५

२ तोले ले और जय २५६ तो०, हड़्ड ३००, हड्डे १२०० तो० जलमें पकाये जय सीज जाये तो उस पचाय को घट्ट से छान के सी १०० हड्डों में ५०० तो० गुड और १६ तो० गो घृत मिलाय पकाये, और तैज, पीपल का चूर्ण भी १६-१६ तोला मिलाये, तय सिद्ध होके शीतल होजाये तो इसमें १६ ता० शहद मिलाकर यत्न से रम्भ्ये। दो दो हड्ड रसायन विधि से पामे से बनी घ पजित पांशों पाली, क्षय, एयास, दिवकी विषमज्वर, अशु, संप्रहणी, हृदराग, अरुचि, पानस को नाश करता है। यह अगस्त्यमुनि का रखा रसायन है। वंग रत्न०, च० ५० नं० कास० अ० या० ते०, पा० अ० चि० अ० ३।

पद्मे हड्ड १००, अजयाइन १ आडक, मय मूल ५० पल, चिन्नक, पीपलामूल, चिचिरा, कचूर, कथोथ, शकपुष्पी, शार्ङ्गो, गजगीपर, परिधारा, पुष्करमूल, प्रत्येक २-२ पल ३ आ डक जल में पकाय दामल तिममें १०० हड्ड, तेल, घृत २ पल, गुड ३ तुला देकर पकाये जय ठंडा होजाय तो इसमें शहद, पीपल का चूर्ण १-१ कुडय डालें, इस तरह इस सिद्ध अयसेह ६ संग दो द्रव नित्य लाये तो, क्षय, पाल, एयास, ज्वर, दिवकी, अशु, पीनस, अरुचि, और संप्रहणी का नाश हा, यह अगस्त्यमुनि की बही हरीतकी प्रत्येक रोगी को नाश करती है। श० सं० म० ख० अ० २

दशमूल, गजपोपक, कौशिके सीज, शार्ङ्गी, कचूर पुष्करमूल, सीह, पाक, मिलाय पीपलामूल, शार्ङ्गी, शोस्त, अग्नि, चिन्नक, अशु, शार्ङ्ग, पक्षा, अयासा, ये प्रत्येक ३-३ पल रोरे,

तथा यव (औ) १ आडक लेये, पद्मे हड्ड १०० तो लेवे, प्रथम १ द्रोण १६ सेर अथवा एक आडक (४ सेर) जल लेके उसमें हड्डों को खोटाये जय पीया हिस्सा अल शेर रद जाये तो उतारे फिर एक तुला (५ सेर) गुड लेकर जलमें खोटाकर, तैज, शहद, घृत, ४-४ पल डाले और पीपल का चूर्ण ४ पल डाले, फिर पूर्वोक्त हड्ड डाले इस प्रकार पाक कर शीतल कर उसमें ४ पल शहद और डालें तो सुम्बर हरीतकी पाक तैयार होता है। यह रसायन है नित्य दो हड्डों को पक्ष युक्त प्राणों तो राक्षसपमा, संप्रहणी, सुन्नत, मंशस्ति, स्वरभेद, पांडु, श्याल, शिरोरोग, हृदयताग, दिवकी और विषमज्वर को नष्ट करता है, और सुचि, पल, तथा उत्साहगति को बढ़ाती है यह हरीतकी पाक सय में श्रेष्ठ है। म० चि०, सु० सं० उ० तं० श्लो० ४५।

धगारधूमार्थतैलम् भरका का चुयासा (भरका १ भा० हवरी २ भा० सुराकिह ३ भा० इन्दे डालकर तैज पाक करें, यह खुजली शोथको दूर करे, तथा उपद्रव क व्रण की शोथन घ रोपण कर उसे मच्छ करे। म० २० अम० ६० आ० म०।

आगस्थिषो [agasthis] म०, अगस्तियर अगस्त हि०।

Sesbania Grandiflora, Pers का ६० १ भा०

अगाडा [agada] हि०, अगामार्ग, aachyr-
-anthos aspera, Linn।

अगस्ति (agasti) ता०, अगस्तिया, अग-
स्त हि०।

अगाथियोस (Agathiyos) सिर० इसका शा-
 विष्क शर्षं "अथयन्त पवित्र" है, पर शमी व
 कोमण्डू इसे मगार के लिये प्रयोग करते थे।
 इसी का रूपसंग्रह हजाबियुन्त अथवा शब्द है।
अगाधम (ag-adham) सं० ग्री०, अल aqua
 दे० सं० ध० (विद्रु प्रोत्र alcohol vacinity
 perforation)।

अगानी (agani) उ० प० सू०, शिपाय,
 वेष्टर गुग्गुलु।

अगारह (agharah) नायू वृक्ष। Common
 Lemon tree इ० ई० गा०।

अगारधूमः (agardbomah) सं० (दे०, गृह
 धूम घा० उ० उ० अ०।

५-अगारधमाघटीत्रम्—

अगा (गे) रिक (agaric) इ०, अगा
 टकून, गारीकून, अ०। साँव की छत्री सुम्बी
 दुइरमुस हि०। *Bolotos Ignarius*
 यह एक पराश्रमो (Parasite) बीजा है जि
 समें रक्तपापक गुण विद्यमान है इ० ई०
 गा०।

अगा (गे) रिक एसिड (agaric acid)
 इ० सुम्बीक, छत्री सस्य *Agaricin*, Dr
 Stewart देख्यो गारीकून।

**अगा (गे) रिकस ऑफिशिनेलिस (aga-
 ricus officinalis)** जे० गारीकून वम्ब०।
 mushroom। मेमा०।

अगा (गे) रिकस अमेनेटा (agharidos)
 nmanat... पतारि... fly
 agaric इ०

माहाय सुप्रार्कुर दि०। गारीकून सुपाय
 ... गारीकून मगस (...
 ति०। (Not)

इस प्रकार का गारीकून भा किरण के धर्मों
 में उदात्त होता है। यदि इसका दुग्ध में उ-
 दात्त दिया जाय ता यह कश्चित्को क लिये
 धातक होता है। इस प्रकार का गारीकून में
 से एक अत्यन्त विषेला सस्य निकलता है
 जिसे मस्करोन (पातक) कहते हैं। इस म-
 कार के गारीकून का कर्षीर अफीम तथा
 मग के सहर उपपाय में लाते हैं।

**अगा(गे) रिकस आस्ट्रीपेटस [agaricus
 ostreatus, Paq]** जे० फनस, आसाम्ये,
 फनसाम्ये, पनससाम्ये, मट०, पौ०। *Agario
 of the oak, Toughwood Oyster mush-
 room*

इ०। इ० मे० मे०।

अगा(गे) रिकस ऐक्यस [Agaricus albus]
 जे०। गारीकून सफेद, अ०, फा०। साँव की
 - छत्री, सुम्बी हि०। *White agaric, Tough-
 wood, Mushroom मेमी०, इ० मे० मे०*

**अगा (गे) रिकस कैन्पेस्टिस (Agaricus
 campestris, Linn)** जे०। अलोन्मे,
 सुम्बह, मोस वम्ब सुम्बह, आम्बूर, खत्री
 अफू०, पाजा० माल जेत कार०। सुम्बह,
 समारोप [stewart] आसा०। इतर
 [बिपीसा] रूप आघट, औषध। *Mush-
 room मेमी०।*

**अगा (गे) रिकस अरिगोरम [Agaricus
 arborum]** इ०।

अगा (ने) रिकसशिरजिधन [Agaricus
chirurgeon]

ले० । गारीफून जराही । फा० १०३ भा० ।

अगा(ने)रिकस पामेलस [Agaricus pal
malus] ले० । पालकमध्ये मह०, वा० । agar-
ric of the oak, Touchwood Oyster
mush Room इ० मे० मे० ।

अगारी [Aghari] } Rough Achra
अगरा [Aghra] } nthes इ० है० गा०

अगारीकून [Agarikon] } गारीकून अ०
अगारीकून [Agarikon] } खुम्बो, सांघ
पी दुग्धी, दुग्धमुच्छा, हि० । Agaricus
Albus ले० । Purging Agaric, Larg
cagaric, Boleti इ० ।

नोट—घोंसीदू अणु के लक्ष्य एक यस्तु है
जो किली २ घृष को अणु के भीतर से निक
लती है, पर घासत्रय में एक प्रकार की
खुम्बो होती है ।

अगा (ने) रीसीन [Agaricin] इ० यह
गारीकून [Agaricus] का एक प्रमाणात्मक
सत्व है । यह शक्तिमान स्वेदघ्न औषध है जो
यक्ष्मा रोगी के रात्रिस्वेद आघ को रोकता है
साक्षात्- $\frac{1}{2}$ ग्रैम । इसके मुकुन्दनीय प्रभाव को
रोकने के लिये इसे "डोयर्स पाउडर" के
साथ मिलाकर उपयोग में लाते हैं । इ०
मे० मे० ।

अगारूस अमरसी-(Agarose amarase)
मु०, आल विस्तामी, आक्षिपागी इ० । आल,
आल-हि० । Morinda citrifolia Linn

अगालूजी (Agaloo)-मु०, अगार हि० ।
a wewood

अगस्त (Agasta)-मह०, अगस्त, अगस्तिया
हि० । Sostantia grandiflora peral
फा० १०१ भा० ।

अनि (agi)-ले०, आलमिर्च से घनी दूरी घ-
टनी । फा० १०२ भा० ।

अनिकेसु, सी (Agikesu, si)-पर, पड़ो
अगदीना तेल Oleum ricini obtained
from the seeds of large seeded ca
olic oil plant)-ले० स० फा० १० ।

अनिन, ना (agin-na)-हि०, एक छोटी
पक्षी है । a bird, a sort of lark

अनिन घास (Agin ghass)-अगिया घास,
रोहिण, Andropogon Schoeranthos.

अनिन पाष (Agin bav) हि०, पु० अरय
राग विशेष । मनुष्य में फोड़ा फुन्सी निकलने
की बीमारी ।

अनिन बूटी (Agin buti)-इ०, यम्प०, दाद-
मारी अंगली मेंहरी-हि० । Ammonia Ba
coifera, इ० मे० मे० ।

अगिना खीगडी (agina ligadi) चम्प०,
फलांगिनी, हरिणपक्षी-हि० । Manisuris
granularis इ० मे० मे० ।

अगिया (agiya) हि०, (१) रोहिण
(andropogon Schvoranthos)
पक्षी विशेष a bird (alanda agiya)
(२) अक्षधियाँ, (३) घान एवं ज्वार-प्र-
गुति खेतों में होने वाला बासु विशेष । देवो
अगया ।

अगिरः (Agirah) सं० प्र० धियक वृक्ष,
(Plumbago Layanica) अटा।

अगिरेटम् अक्वेटिकम् (Ageratum aqu
aticum, Roxb)-ले०, यडी किस्ती । इ०
है० गा० ।

अगिरेटम कांनिजाइडीज (Ageratum
conyzoides, Linn)

अगिरेटम कार्डिफोलिअम (Ageratum
cardifolium, Roxb)-ले०, सहदेवी
दि० । फा० इ० २ भा० ।

अगीकर (Agikar)-ले०, धार करेका-दि० ।
नितर सं० । Momordica Dioion

अगीरस (Aghiras)-यु० एकवृक्ष है जिसका
गोद कहरया के नाम से प्रसिद्ध है । Succo-
lum (Tree of-)-ले० ।

अगीरानून (aghiratan)-यु०, पटेरा (एक
प्रकार की घृती है जो अन्न में सगती है और
जिससे पारिया प्रभृति बुने जाते हैं ।।

अगीरिया (aghuriya) यु०, पृथ्वी, जमीन ।
The earth

अगुरु (nguru)-सं० झूँ० अमर । aloo wo-
od गुग्गुलु वृक्ष (amyris agattooha)

अगुरु (aguru)-सं० पु० अगुरु वृक्ष, अमर
दि० । (aloo wood) यथा—“अगुरुः स्त्री
यासकं कुंकुमम् ।” या० सू० १५ अ० पलादि
य० । कपिलवण शीसम, सीसम-दि० । क-
पिल शिशिया-सं० । Dalbergia latifolia
भा० पू० १ म० वटादि-य० । सीसम, सीसो
शिशिया वृक्ष दि० । शिशुगण्ड-य० । Dalbo-

rgia sisu । में रत्रिक । हलका, भारी नहीं,
जयु । लाइट Light इ० ।

अगुरु गन्धम (nguru gandham)-सं०,
झूँ०, दिगु, 'हिंग', हि । दिङ्-य० । assafo-
otida.

अगुरुसार (nguru sarah)-सं०, पु०,
वृष्णागुरु वृक्ष, फाली अमर दि० । काल अ
मर-य० । aloo wood (the black va-
riety) (२) लौह (Iron) रत्ना०, एकार्थ
अगुरु सारा—(nguru sara)-सं०, स्त्री०,
शिशिया वृक्ष । सीसो, सीसम-दि० । Dalb-
ergia Sisu । गा० ।

अगुरु शिंशपा (aguru shinsapa)
सं०, 'शीसम' (य) सीसा-दि० । Dalbergia
sisu । अ० टी० स्वामी ।

अगुहः—[Agadhah] सं०, पु०, [सफेद]
एरण्ड या अरण्ड दि० । श्वेत मेरेन्दा
य० । Thecastor-oil plant [Ricinus
communis] य० निघ०

अगुह-गन्धम् [Agudh Gandham] सं०
झूँ०, हिंग, दिगु, हि । [Feroliasa-
foetida] रा० नि० य० ३ ।। १] पलायक
[२] सुगामि [३] जयन, लहसुन

अगुदि (Agridhib) सं०, झूँ०, अमिलाप
वृक्ष । (wish, Desire) या० वि०
७ भा० ।

अगेथ [Ageth } दि०, अरबी अग्नि
अगेथुथु [Agethuthoo } मन्थ । Premnai
ntegrifolia ।

अगेट (Agate) ले० । भातगल ।

अगेटिग्रानिहफ्लोरा (*Agrotigrandiflora*) ल० ।

अगस्तिया अगस्त दि० । *Grot flowerede Agabi* इ० । फा० इ०, इ० में० में० ।

अगेनोस्मा कैर्योफाइल्लेटा (*Agannosma caryophyllata* G. Don) ले० । इसके पत्र औपचिक्य में आते हैं । मे० में० ।

अगेनोस्मा कैलिसिना [*Aganoma orlycua*, A. Do] ले०, मालती दि०, थं०, सि०, गधोमालती-थं० । इसके पत्र औपचिक्य में आते हैं ।

अगेरिकस (*Agaricus*) ले०, अगेरिकस ।

अगेरिकब्लैक (*Agaricoblanok*) फा०, शारीकृ० ।

अगेवि अमेरिकेना (*Agave americana* Linn, Boxb) ले०, राकसपत्ता, पद्माकौबद, कं टला घांस केपड़ा, (मे० में० इ० में० में०) , जंगली फौवार, हाथी खीगाड़ (स० फा० इ०) दि० । एकस पत्ता द० । आनैक कट्टाजे (स० फा०, इ०, इ० में० में०) पिपकल पुग्य (मे० में० इ० में० में०) ता० । राकाशि मद्धुत्तु ते० । पगम कट्टाज्मला० । भुत्ताजी, पुद्गुकईजे नाय कमा० । जंगली या बिलापती आमानाथ (स) बिलाति पात, कोयन मुर्गा, आमारस (अप सुंथ) थं । जवली कोमारी, गु० । जंगली कुंवार, पारकद्, बम्ब । बिलापती कैट्टद, थं अमेरिकन एले (*american aloes*) कैरेटा Carata-इ० ।

गोट—(१) हैदराबाद फ किसी २ जिले

में अगेवि, अमेरिकेना फ लिये बेलकी शक्ति प्रयोग में लाया जाता है, किन्तु यही नाम भारतवर्ष के अन्य भागों में केवला अर्थात् केलकी (*Podanus odoratissimus*) के लिये व्यवहृत होता है ।

(२) किसी २ ग्रंथ में उपरोक्त पौधे के लिये यमी अर्थात् "कोयाखि" भिन्नित किया जाता है, किन्तु ये नाम बड़े कष्ट अर्थात् सुख दर्शन (*Orinum Asiatium*) के हैं अमेरिकीडईई अर्थात् सुख दर्शनवर्ग—(*N. O. Amaryllideae*)

उद्भवस्थान—इस पौधे का मूल निवास स्थान अमेरिका है, पर अब यह भारतवर्ष के अधिक भागों में आ घसा है ।

प्रयोगांश—मूल, पत्र और मिर्यास ।

रसायनिक संगटन—इसके बूँडल के रस में एक शर्कराजनक एल होइल 'मद्यसार' होता है जिससे एक संघामित मद्धक पेय प्राप्त होता है जिसको मेक्सिको (Mexico) में पश्मी [*Polquo*] कहते हैं । अगेपोस एक निष्क्रिय शकर है ।

प्रभाव—मूल-मूत्रल और उपवृश्च है । रस मुकुभेदनीय, मूत्रल, रजप्रवर्तक और स्कर्व नाशक [*Antiscorbatic*] है ।

औपचिक्य निमाणि—कषाय, पत्र स्वरस, मूलीय रस एवं मिर्यास ।

प्रयोग—इसका मूल सारलापरिला के स कोष रूप से उपवृश्च रोग में प्रयुक्त होता है [*लघुहले*] ।

अमेरिकन डॉक्टर इसके पत्र से मिर्यास

हुये रस को शीघ्र और परिवर्तक प्रभाव के लिये विशेष कर उपद्रव रोग में उपयोग करते हैं।

इसका रस फोष्ट मुकुटार मूत्रविरेचनीय और रजः प्रघटक २ फल्लुहृद आवल की भाषा में स्वर्गी नाशक है। (पु० एस० डिस्पेन्सरी) जर्जल शरीदन (Genl Sheridan) का पत्र है कि उन्होंने अपने आदमियों पर जो रक्तर्षी से व्यथित थे इसका उपयोग किया और इसे बहुत लाभदायक पाया। (इयर बुक फार्मे० १८७५ २३२)

यह, तर और गुदादार पत्तों का पुल्लित रूप से उपयोग अत्यन्त गुणकारी है। इसका ताजा रस कुचले हुये स्याम पर लगाया जाता है।

पत्तों तथा मकारण के निम्न भाग से निकाला हुआ निर्यास मैक्सिको में दांत के दर्द के लिये बर्ता जाता है। इसके पत्ते का गुदा मलमल के तह में रखकर आँसु आने में बधुओं पर रखा जाता है। और शर्करा के साथ दिन में दो बार सूजाक में प्रयुक्त होता है। (एच० एस० पी० किन्सले, मद्रास)

देयी लोग इसे पुरातन सूजाक में यतते हैं। (सर्ग० मेज० आर० एम० बोरह० शास्त्रा सौर)।

विषपेनीफोलिया [agave Planifolia] ले०।

नेषि कैस्ट्यूला (agave oantula, Roxb) ले०, यिलायला अगनाम ६० ६० गा०।

अगेवि विविपेरा (agave vivipara, Linna) ले० कंटल सं०। कटासई ता०। पेठाकलपेठ ले०। मे० मो०।

अगेरिक आफ टी ओक (agaric of the oak) ६०, खुम्बी, गारीकून बलूनी agaricus ostreatus ६० मे० मे०।

अगोर (aghor) पु०, व्यूषी जीस, हि०। पीयूष सं०। दुग्ध देने वाले पशुओं तथा गो, बैस, मनु ति के प्याने के प्रथम विषल से लेकर ४-६ रोज बाद तक का दुग्ध जो अग्नि पर रखने से थका २ जम आता है।

अगौका (agoukah) सं० पु० a fabulous animal with eight legs शरम (२) पक्षी, (३) सिंह। मे०।

अगई (aggai) अय, परकोह, र्व। अगजय (aghab) اغب (प य) उगा किब اغب (प र्व) अ। सिग और उसके मध्य की हुरी, बंशण, अंचासा, निम्न कण। मोहन Groin ६।

अगजला (aghal) اهل अ, तपे मोबत फा। मोपती गुणार, बारी का पुकार, उ। पर्याय अय, हि०। Intermittent fever

अगजियह [aghiyah] احيه प ब गिज़ा احيه (प य) अ। अश्याय खुदना اشياحودي मरय पशाय, भाग्यपदाय, वाय, आदार जाने की पस्तु, हि०। डारद्वन Die ६० ६०।

अगताम (aghtam) اغم ता० यह अग्नि जो शय पात नकर सके

अग्नश (agtash) اگنہ अज्ञहर अ० ।
 अ० । रोज़कोर روزگار फ़ा० । विषसांध, दिन
 अंधा, दिनोंधी का रोगी, वह व्यक्ति जो दिन
 में भली भाँति न देख सके । हेमारीलोप
 (विधा) Homierakop-pia

अग्दीदूस (Agh didus) اغدیدوس अ० ।
 औकामी قوالی حصه अ० । उपांड हि० ।
 Epididymus,

अग्नाशय । Agnashaya) सं० । अग्न्याशय
 Pancreas ।

अग्नि. (Agni) सं० पु० The fire of
 the atomaoh अठराग्नि । यह मन्त्र, तीक्ष्ण
 विषम और सम भेद से चार प्रकार की होती
 है । यथा मनुष्य के कफ़ की अधिकता से
 मन्दाग्नि, पित्त की अधिकता से तीक्ष्णाग्नि,
 वात की अधिकता से विषमाग्नि तथा तीनों
 वायुओं की समता से समाग्नि होती है । विषमा
 ग्नि वातज रोगों को, तीक्ष्णाग्नि पित्तज रोगों
 को और मन्दाग्नि कफ़ज रोगों को उत्पन्न
 करती है । जलण-समाग्नि धाते का किया
 हुआ यथाचित भोजन सम्पक रूप से
 पच जाता है । मन्दाग्नि धाते मनुष्य का
 किया हुआ थोड़ासा भी भोजन अच्छे प्रकार
 नहीं पचता और विषमाग्नि धाते मनुष्य का
 किया हुआ भोजन कभी भली प्रकार पचता
 और कभी नहीं पचता तथा अत्र मनुष्यको
 अत्यन्त किया हुआ भोजन भी कुछ पूर्वक
 पचाने उसको तीक्ष्ण अग्नि कहते हैं । इन
 वायुओं प्रकार की अग्नियों में समाग्नि उत्तम
 है, मा० ति० अग्निमा० (२) पाचक

रज्जफ प्रभृति पञ्चपित्त [देखो पित्त] (३)
 तेज पदार्थों पिष्टोप । भाग० हि० । -फायर
 Fire ई० । नार परह आतश अ० फ़ा० ।
 आगुम सं० । इसके संस्कृत पर्याय—
 वैश्यानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, छपीद
 योनि, ज्वलन, जातवेदा, तनूनयात्, तनुतया,
 घार्दिष्ठमा, घार्दि, शुभ्रा, छम्पवर्तमा, शाधि
 र्केश, वदध, आशयाश, आशयाश, वृद्ध
 मानु, छपानु, पाचक, अमल, रोहिताश्व,
 वायुसजा, वायुसज, शिखाघात, शिखी,
 आशुगण्णि, हिरण्यरेक, हुण्भुक, हृषभुक,
 वृषन, हृषवाहन, सप्तस्त्रि, यमुत्त, शुक्र,
 चित्रमानु, विभावज्ज, सुचि, अघ्नित, (अटी)
 वृषाकपि, सुडवान, वपिल, पिण्ड, अरणि,
 अगिर, पाचन, विश्वप्ला, छागवाहन, कृष्णा
 र्दि, भाकर, सुडवार, उपरिचि, वसु, शुभ्र,
 हिमाराति, तमोनुषु, सुशिष, सप्तभिह, अष
 परिक, सद्यदेवमुज, (उ) ।

अग्नितापके गुण वात, कफ, स्तब्धता, शीत
 तथा कृप नाशक, आमाशयकर और एक
 पित्त की कुपित करन वाला है । राज० भा० ।

आग्नेय द्रव्य आग्नेय द्रव्य, रुद्र, तीक्ष्ण,
 उष्ण, विशद (स्वप्न खाती में जानेवाले)
 और रूप शुष्ण बहुल होते हैं । ये हाव, काष्ठ
 यत्ने और पाक कारक होते हैं । वा० सू० अ
 द्रव्यों का तीक्ष्ण रूप जिसे गैसिया
 (Gaseous) कहते हैं । इसे वाष्पीय (भाप
 वा) कहते हैं । यह हमारा प्राचीन तेजस
 ताप है । हवा, पानी की भाप, इत्यादि इसके
 उदाहरण हैं । किसी पदार्थ को जप बहुत

गमी दी जाती है तो वह अंत में इस रूपको धारण करता है। तेजस प्रभ्यो में कुछ तो द्रव्य है अर्थात् देह पड़ते हैं और कुछ अदृश्य, इसमें दो विशेष गुण हैं, एक तो अपना इसका कार्य आकार नहीं होता, जैसे धर्तन में भर दीजिये उसी आकार का ही आभोगा, गीले, खोलते, तबने आकार के धारण करने में इसे कोई कठिनाई नहीं होती। दूसरी बात आ इसमें पाई जाती है वह यह है कि इसका कार्य अपना परिमाण नहीं होता। एक इंचको शीशी काजिये। अभी बसमें गंध के परमाणु वाष्प रूप से हैं। किंतु उनका परिमाण उतना ही है जितना कि शीशीमें जाली जगह है यदि आप शीशी की ढाट खोल दीजिये तो अभी गंध स्वारी कोठरी में फैल जायगी अर्थात् अब वही परमाणु बढ़कर कोठरी के बराबर हो गया। अब वाष्पीय द्रव्य वे हैं, जो अपना स्वयं कोई परिमाण या आकार नहीं रखते मर्युत जिस मात्र में रखे जाते हैं उसी के आकार और परिमाण प्रत्यक्ष कर लेते हैं भी० वि०।

। चिन्नकचीता (Plumbago Zeylanica) ३५०० ग्रहणीवि० विदवाद्य घृत, भा० सू० १५। आरण्यवादि ५०। (९) अग्निजातकृत् । १० मि० घ० २३। (७) पीतपालक । (८) केयूर (९) पिप्प (Bilo) (१०) रत्न (११) निम्बुक, (Ostrusmedica) १० मि० घ० २१। (१२) शंख, सुवर्ण Au rum । १० मि० घ० २३। (१३) मत्स्यारक, मिश्रायो Sambocarpus anacardium ५० वि० घ० २१। (१४) एक चिन्नक, काजलीता

Plumbago zeylanica (the red variety) १० मि० घ० २३। ५००० ग्रहणी वि० कपिरपाष्टक ।

अभिकुमार मोदक—यह १३ तरह का है ३०००० ग्रहणीवि० । ३०००० उपगधि० रस० १०० सु०। ३०००० अग्निमा० अग्नि०। ३०००० ग्रह० अग्नि०। ना० प्र० मध्य कण्ठ २ अजीर्ण वि० । रस० सं० सु०। रस० १०० सु०। अमू० सा०।

अभिकुमार लौहम्— ५०० रस० १०० सु०, सी० १०० वि०।

अग्नि घृतम्— ५००००, यह से० सं०, अजीर्ण वि०, अश वि०।

अभिसुण्डी रस—१०० सा० स० शाक० खड्क १२ ३००००। ५०० रस० १०० सु०।

अभिदीपनी वटी—गन्धक, सोंठ, मिर्च, सेंपा खण्ड, इन्द्रजी, वादेविशंग इनका चूर्ण कर नीबू के रस में खरक कर बने प्रमाण गा लिपां पनावे। ५०० रस० १०० सु०।

अभिप्रदीपकानि—खक० ६० अग्नि० मा० अ०।

अग्नि मुख—५०० रस० १०० सं० शूज० वि०।

अग्निमुख चूर्ण— यह से० सं०, यो० सं०, अजी० अ०।

अग्निमुख मंदूरम्—लौह बिट्ट ५२ ती० अग्नि-अठगुने गोमूत्र में पकावे पुनः चिन्नक खण्ड, सोंठ, पीपल, पीपलामूक, शिवांग, गोमरेमोथ त्रिकुटा, भिकला, वायविडंग इनका चूर्ण १ पल लेकर उक्त मंदूर में मिलाकर बंधयोग क

इनका यही पनाय नेशाखन करने से, अप
स्मार, चातुर्विक ज्वर, और उन्माद दूर जाता
है।

च० द० उन्माद० चि०

(७) तगर, मिच, अटामांठी, शिखारस,
इन्हे समान भाग ले, सर्पतुण्ड म्रैमशिश्र, प
षज ४ भाग (तगरकादिसे चौगुने) तथा सप
से त्रिमुद्य दूध सुमां, और उतने ही मुलहठी
लेकर पारीक पीस अन्न बनाये।

सु० सं० उ० अ० १२

(=) हल्दी दार हल्दी, मुलेठी, वाण, देय
दार, इन्हीं समान भाग ले चकरी के दूध से
अन्न करने से अभिष्यन्द दूर होता है।

सै० २०

अञ्जनसुटिका लौठ, मिर्च, पीपर, परंजफल,
हल्दी, बिजौर की अड़, इनकी गोली बना
छाया में शुष्क कर नेशाखन करने से विद्य
शिक्षा [दिवा] दूर होता है।

(२) महुआ पुष्प, श्वेत अपरामितां, अपा
म ग मूल, त्रिडरा, इनकी गोली बना नेशाखन
करने से विश्वशिक्षा दूर होता है।

सैप० २० अग्नि मा० चि०

अञ्जन सुटिका (३) मेनसिल, देवदाद,
हल्दी, दार हल्दी, आमला, हड्डे, पदेडा, लौठ
मिर्च, पीपल, बाय, लहसुन, मंजीठ, सेषा
लघण, इलायची, सोना माषी, साधर लोभ,
सोह खुष, सोम्र खुष, कालातुलारिवा, सुर्ग
के फाड़े का क्षिप्तक, इन्हे समान भाग लेकर
छी के दूध में घोटकर गोली बनाये, इसका
अन्न खाज, तिमिद, शुक्रार्म, तथा मेत्र के
रस देना को दूर करता है।

(४) कासे क पाप क रगड़ने में उत्पन्न स्वाधी,
मुलेठी, सेंधा लघण, तगर, परंड की अड़,
इन्हे परापर से, तथा इनमें से एक से त्रिगुण
चक्री कटेली मिलाये, इनको चकरी के दूध से
पीस कर सात्र पात्र पर लेप करे इसी तरह
सात बार चकरी के दूध में पीस के उक्त
पात्र पर लेप करे और छाया में शुष्क कर
बटो बनाये तो यह अन्नत नेत्र रोग को
दूर करे।

सु० सं० अ० १२ नेत्र० रो० पि०

अञ्जन वटी पारा १ टंक, गंधक २ टंक, मिर्च
६ टंक, सयको पीस कजली करे, पुनः करेले
के रस की ३१ भागमा देकर मर्दम कर एक
रथी प्रमाथ गालियां बनाये, इसका जल से
विल अन्न करने से हर प्रकार क ज्वर दूर
होते हैं। किसी २ अगह फले के पत्र के रस
से २१ पुट देने को कहा है।

सु० रस० रा० सु० ज्वर० चि०

अञ्जन ताडनाथु पाया शुद्ध मल्लप्य के आ
धार के मष्ट हो जाने पर तीक्ष्ण नस्य तीक्ष्ण
अन्न, साडन, तथा मन, सुधि, स्मृति
इसका स वेदन, ये हित है। उन्मादसे बिस्मृति
हो जाने पर अञ्जन, सुषुप्तेना, सात्पना, हर्ष
(आनन्द) मय दिखाना, बिस्मय (आश्च-
र्यानिमित्त) कर मन को मकृति में स्थिर करे।
काम, शोक, मय, क्रोध, आनन्द, ईर्ष्या, तथा
अन्न से उत्पन्न उन्माद में परस्पर प्रतिद्वन्द्व
क्रिया से शक्ति करे। बाधित इन्द्रिय के मष्ट
होने से उत्पन्न उन्माद में तत्त्वज्ञान द्रव्य प्राप्ति
शक्ति, तथा अश्वत्थम से उसकी शक्ति करे।

चक्र० द० उन्माद चि० १

अञ्जनाटि मैनशिल, गारायठ, (१ घुत्तर) का घाँट का अंधन करे तो अपस्मार तथा मिश्रेण कर उग्गाद् का गण्य हो। मुलहटी, हींग, घब, लगर, शिरिय चीज, फून्, लहसुन, इदि यकने व मूत्र में पीस नेत्राञ्जन करने से तथा मस्य देने से अपस्मार और उग्गाद् दूर जाना है। पुष्प मस्य में कुचो का घिस लेकर अञ्जा परे ता अपस्मार दूर हो या उसा घिस में मूत्र डाल कर घुब बने ता अपस्मार (मूत्री) दूर हो। घन० २० अपस्मार० घि० गिसमा, गुह, लेगू, रणा, इदि छी के दूय में बामे क पात्र में घिस अञ्जन करे ता मग सदिन रोष बी फुला दूर हो। रना, (अंम) दम (दाधो दाँत) पातु (रूपा) विरला, एटा इलायची, बरह क पीत्र, लहसुन, इ तथा अञ्जन फुलो व मग का दूर बरता है तथा अमगमुष गम गि मग मुर लयगत शुभ रहे भा दूर कर। घन० मे० मय १०० गि०

अञ्जनगुटिका गेरू १ माण, भैया लवण २ मा० पाप ३ ताण लगर ४ माण, दस प्रकार के हमारे त्रिगुण जत्र साधरल बने, पुना गाती यमाधर नेत्राञ्जन करन से नेत्र रोग दूर जाना है। नी० २० मय १०० गि०

अञ्जन दृष्टि प्रमादनी शालारा घट शीगे का बायबद मग दूर दूर, बरहा, का प्रभा करतमे, या मे, गामूत्र मे, शहर मे तथा बरही के दूय में शुभर्षे, परबन्ग इस शीगे को कलाई बनावर में से में पेर लो केव लखरन्वी बायबद रोग बन्ध जाने है। घ० २० दधम ५० मे० रो० घि०

अञ्जन भैरव पु० पाप, लीह मस्य, पोप, गंधक इन्हे एक २ भाग लें, जमाल गोटा के पीत्र ३ भाग, इन्ह जम्मीरी के रस से अण्दी सरद पीस नेत्राञ्जन करन से सन्निपात ज्वर दूर होता है।

भै० २०

अञ्जिन रम - पु० पाप, मिर्च, इन्ह घगवर ल पीस कर मस्य दे तो सन्निपात ज्वर दूर हो। र० सा० लं० ज्वर० गि०।

(२) बीज, विटकिरी इन्ह पीस कर मस्य दन से सन्निपात ज्वर दूर जाता है।

र० सा० लं० ज्वर० घि०

अडुसा क्षाय अन्ते व पय या मूत्र १ ताता जम १२ मोला में पाथ बरे जब यनुर्गोठ गर रहे ता बल में गरद कम कर पीन से दन घिस तथा लय वा माघ जाना है।

घा० ता०, सा० १००

अडुसा पुटपाक अन्ते क पुट पाक का रस मिष दू कर शहर गिला बीर से रक्त घिस, सुदि काय तथा उर व का माघ जाना है।

शुद्ध० लं० म० घ० १ घ०

अग्निआर (Agni ar) मैदा०, बरहाम सवार।

अग्निउ (Agni) कुमा०, दागीर, बरहाम।

अग्निउम (Agni um) - दि०, बगीर, बर लघ। अग्निउम, अग्निउदि, लं०।

अगिर (Agir) गि० पु० अण्दी व बरे विट। लं० बरही दि०। कण्ठ क व

ए० an insect of a bright scarlet colour (*Mutella occidentalis*) सु० मि० अ०, दे० अ० ४ का० ।

(२) चित्रवृक्ष । *Plumbago zeylanica* पा० चि० ७ अ० । मिलापा, भल्लातक वृक्ष । *Se meocarpus anacardium* ना० पू० १ म० ह० व० ।

अग्निकर्णी (*Agni karni*) स० जी०, वृक्ष विशेष । वै० निघ० २ म० अग्निव्यासव्यर चि० ।

अग्निकर्म (*agni karm*) स० क्ली०, प्रंध्यादि रागों में अग्निमें ज्वालकिये हुये शलाका आदि से किये जाने वाले दाह क्रिया को अग्निकर्म कहते हैं । दार से दाह कार्य श्रेष्ठ है गुण के विचार से न कि क्रिया के विचार से । काष्ठ—इसके लिये शरद और प्रोपन ऋतु को छोड़कर अन्य समस्त ऋतु में श्रेष्ठ है । इसके लिये पाम अर्पात् योग्य रोगो दुर्बल बालक, वृद्ध और बरपौक प्रभृति के अति रिक्त, अन्य समस्त । सु० सु० १२ अ०, पा० चि० १५ अ० ।

अग्निका—(*agnika*)—स०, कपास-दि० । *Gossypium Indicum*—ले० ।

अग्निकाष्ठम् (*agnikashtam*) स०, क्ली०, अणु, अंगर *agalloohum*—ले० । 'अग्नि काष्ठं कटीरेस्यात् ।' पा० नि० व० २३ । शमी काष्ठ *L. noacia sumu* ले० । रा० नि० व० १२ ।

अग्निकील (*agni kilah*)—स० पु० अग्नि

शिला, अकिज्वाला व० । *Gloriosa Superba* ल० ।

अग्निकुक्कुट (*agni kukkuta*)—स० पु० अलक्ष्मि, कृणोदका, पिष्टुन् । ज्वलंत नूझा-व० वै० श० । *Lightning* ।

अग्निकुमार (*agni kumarak*)—स० पु० ।

(१) अग्निकुमार मोदक

(२) अग्निकुमार रस

(३) अग्निकुमार लौहम् [*agni kumar louham*]—स० क्ली०, मीमांसिकार में वर्णित रस । पाग इव प्रकार है ।

घषा—तृत्तिया, हींग, सुहागा, सैन्यय घ गियां, और, अजवाइन, मिर्च, सोंठ, खोंग, इलायची, पिष्टन प्रत्येक १-१ तो० । इन सबों के समान लौह तथा पारद ४ तो० घ गंधक ४ तो० । निर्माण विधि—सर्व प्रथम पारद घ गंधक की कसकती कर पश्चात् शेष औषधों को मिला कर भली भाँति घोंटे पुगः इसको शीशी प्रभृति में सुरक्षित रखें । मात्रा—अथ स्यात्सुसार । अद्ययान घृत और मधु । र०सा० स० ३३३ योग ।

अग्निगर्व [*agni garb*]—स०, वाष्पमारी । इ० मे० मे० । *ammunnia Baccifera* Lin. ले० ।

अग्निगर्भ (*agni Garbh*)—स० पु०, अग्नि आर वृक्ष *A. Medicino* used in medicine of stimulant properties रा० निघ० (२) श्वशरी शीशा, सूर्यकाम्पमणि । *The sun stone* ।

अग्निगर्भा [agni garbha] सं स्त्री (१)

घर्मि वृक्ष-हिं, मं. । शई नाछ-वे । ataoia
Suma.

गुण- तिक्त, कटु, कषाय, शीत वीर्य, क्षुब्ध, रंजनी
कफ, कास, श्वास, कुष्ठ, रुश तथा कृमिना
शक । भा पू १ म । (२) महा ज्योतिष्मती
जला-सं. । पङ्क जला फरकी सं । Cardios
permum Heliconabum ले रा. नि ।

अग्नि घृतम् (agni Ghritam) सं स्त्री

अग्निचार (agni-char) सं एक औषधि
है जो पश्चिमी समुद्र के किनारे होती है ।

[Phasianus Gallus]

अग्निचूड़ (agni chudali) सं पु a cock

ताम्र चूड़ पक्षी । दा हिं कोमङ्गा, वृक्षुट
मुर्गा दि । कुरुङ्गा-वं । प्राप्स्य च घम्य भेर
से ये दा प्रकार के होते हैं इसमें (१) प्राप्स्य
क्षुद्रण, वृष्य, वल्य, शुभ्र शुक पर्य कफ कर्ता
स्निग्ध उष्णवीर्य और रसमें कषैला होता है
(२) आरपय (जगलो) स्निग्ध, क्षुद्रण, श्ले
ष्मा कारक, शुक्र, शाल, पिच, क्षत घम्य तथा
विषम ज्वर नाशक । भा । हृद्य, श्लेष्मा नाशक
तथा क्षुब्ध । रा नि, घ ११ । उच्च स्वादु (म
धुर) कषैला और शीतल । रास । A plant
used in medicine of stimulant pro
perties रा नि घ ६ ।

अग्निज (agni jah) सं, पु अग्निजार पृथ
महातक (गिहारा) सुषुषु Aursum मास
घातु musolo वै श । Somocarpus
antiar dium ले ।

अग्निजननी (agni jvani) सं स्त्री ।

अग्निजात (Agni-jatah) सं पु, अग्निजार
शक । (See agbjar) रा० नि० व० ६ ।

अग्निजारः (Agni-jarah) सं, पु, A pl^a
nut used in medicine of stimulant
properties (१) पश्चिम समुद्र में उक्त
नाम की प्रसिद्ध सागर सम्भूत औषधि
विशेष । इसके पर्यायि निम्न हैं, यथा—अग्नि
निर्व्यास, अग्निगम, अग्निज, पद्मवाग्निप्रक, ज
रायु, अणुषोद्भव, अग्निजात और सिन्धुकल ।
येसार प्रकार के पर्यायाद्ये होते हैं, इनमें का
हितरण का भेद होता है । गुण—कटु रस-
युक्त, उष्णवीर्य, क्षुब्धवाकी तथा कफ वायु,
सन्निपात शूल रोगनाशक और पिच कारक
है, यथा—“स्वावग्निजारः कटुकृष्णवीर्यः
शुभ्रामय पातकफमयध्मः । पिचमर्दः सोऽधिक
सक्षिपातशुशक्ति शीतलामयमाशुश्च ॥” रा,
नि, घ ६ ।

(२) (अम्बर अशहय)

अग्निजाल (Agni-jalah) सं पु अग्निजार
800 agni-jar रा नि घ २ ।

अग्निजिह्वा-जिहिका (Agni-jihva jilika)
सं स्त्री, Gloriosa superba जाहिली
वृक्ष । रास । कर्षारी हिं । बलतापी-मं. ।
हृद्यवागक्षिपां वं गुण-दस्तावर, तिक्त, क
षुयी, खरवरी, कंठैली, तेषण, उष्ण, दलकी,
पिचकारक और ज्वारी, गजका निगने वाली ।
कुष्ठ, शोफा (क्षुब्ध), अणु (प्यामीर) मण,
शुक्र, श्लेष्म तथा कृमि का नाश करने वाली,
कफ पात नाशक और अन्तः शन्य निस्तारक
है । सी० पू० १ म० शु० व० ।

सुम्भपुष्पः, Safflower (carthamus tinctorius) लै०। (२) कुंडम वेशर Saffro हं०

अग्निमुख (agnimukha) लै० पु०

चिप्रक पृष्ठ, चाता। चिते गाछ घं०। Plumago Zeylanica लै०। (२) गिलाषा घृष्ट हिं०। मेला गाँछ घं०। The marking nut tree हं०। पि०।

अग्निमुखचूर्णम् (agnimukha churnam)

लै०।

अग्निमुखताम्र (agnimukha tamra)

लै० पु०।

अग्निमुखमण्डूरम् (agnimukha manduram)

लै० श्लो०।

अग्निमुखरस (agnimukha rasah)

लै० पु०।

अग्निमुखलवणम् (agnimukha lavanam)

लै० श्लो०।

अग्निमुखलोहः (agnimukha lohah)

लै० पु० श्लो०।

अग्निमुखा (agnimukha) लै० श्लो०

नक्षत्रावक, मिलवा (अ)। मेला घं० The marking-nut tree [Somaecarpus ana-

cardium Linn] हं०। (२) काष्ठलिका

लै० कलिहारी-हिं०। Gloriosa Superba, Linn लै०

अग्निमुखी (agnimukhi) लै०

श्लो०, अस्तावक, निवर्मा। निवर्मा

meocarpus anaecardium, Linn लै०।

मे० लचतुष्क। रत्ना०। च० सू० ४ अ०

भेदनीय। (२) काष्ठलिकाः। इंगल-श्रीतीया

घं०। मे० लचतुष्क। भा० पू० २ अ० अने० प।

(३) कश्यप ल० अक्षचौका-हिं०। कलि

हारी-हिं०। Gloriosa superba Linn

लै०। फाँचड़ा-घं०। रा० नि० घ० ४। भा० पू०

८० प०। (४) गुडूची, गुरुच, गिलाष।

Tinospora Cordifolia लै०।

अग्निपूम (agniyum) हिं० यकार, क-

बर्च, बसोटा। प्रेम्ना लैटिफोलिया Promna

latifolia, Roxb लै० अग्निऊ कुमा०।

यन, पार, निवर्मा लै०। N. O. Verbena-

ceae।

ध्वजस्थान—उत्तरी भारतवर्ष कमारू से भू-

दान लफ और फसिया पर्वत तथा सामान्यतः

पंजाब देश के मैदान।

प्रयोग—उपरोक्त पौधे के पत्तों का दुग्ध

सूजन पर लगाया जाता है और पशुओं के

दर रोग में इसका रस प्रयुक्त होता है।

("वेदिकिसन") पञ्जाब देश में इसका रस

शोषणतुल्य प्रयोग में लाया जाता है। "स्ट-

युपट"। हं० मे०

अग्निरजा (agniraja) लै० श्लो०

अग्निरज्जु (agnirajju) लै० श्लो०

इन्द्रगोपकीट लै० श्लो०। ani

colour. (agnirajju)

अग्निरुहा (agni ruta) स०, श्री०
मांसराक्षिणी रा० नि० घ० १२ । *Sorvida*
Febrifuga (The indian red wood
tree) ले० ।

अग्निरोहिणी (agni rohini) स० श्री०
(१) मांसरोहिणी स० हि०, घ० । *Soymi*
da Febrifuga ले० (२) उक्त नाम का सुदृ
राग विशेष । यह विशाष अम्य होता है । ल
क्ष्य-पित्ताधिक्य घातादि दोषों के कारण य
गल में, ज्वर पैदा करने वाली, मांस को
विशीय करके वाली अग्नि के समान तीक्ष्ण
आ फुंसियां हो जाती हैं उर्द्ध अग्नि राक्षिणी
कहते हैं । ये पांच या सात या पन्द्रह दिन में
रोगी का प्राय नाश करदेती है । घा० उ०
३१ अ० ।

अग्निर्लोह (agnilouhah) स०, पु० ।

अग्निवक्त्र / agni va ktrah) स०, पु०,
मस्त्रातक वृक्ष, भिस्त्रायां का पेड़ हि० । मेला
गाद्य० घ० । *Someoarpus anacardium*,
Linn ले० म० घ० १ । (२) विवक्र (बीस)
शुप-हि० । शिते गाद्य-घ० । *Plumbago*
zeylanica ले० ।

अग्निवण्डा (agni vanda)-स० अग्नि
ज्वाला [एक गरम दवा है] See-agni
jwala ।

अग्निवती (agni vati)-स०, श्री० अ
गिया घास । यह एक मसिख औषधि है ।
Andropogon Schoeranthus ले० ।

अग्निवधू [Agnibadhu] अग्निमन्थ ।
घे० श० । See-arani

अग्निवर्धकः न (Agni vardhakah, nah)
स० घ०, अग्नि उद्दीपक मरिच प्रभृति अा-
नेय द्रव्यमाय । अग्निवृद्धि कर । वृषो वीपक
[न] । राज । Stomachic

अग्निवल वृद्धि [Agnibal vridhuh]
स० श्री० अठराशित वृद्धि । च० द० अर्द्ध
चि० ।

अग्निवल्लभ [Agni vallabhah] स० पु०
राज, घृष, सर्ज, योनिशाल विशेष । घृमा घ०
रेजिन (Resin) १० । १० । रा० नि० घ०
६१२ । म० घ० ३ । See-Sarjib

अग्निवल्ली [Agni valli] स० श्री० जग
विशेष रा० सा० स० अग्निम्यास उपर स्वद्य
म्यनायक रस । a Creeper turning or
climbing plant इ० ।

अग्निवांस [Agnivas]-स०

अग्निवाह हु [(Agnivah-huh)
स०, पु०, घृष । स्मोक Smoke इ० । इ०
घ० ४ का० ।

अग्निविकार (Agnivikarah)-स०, पुन,
उक्तनाम के रोग का एक भेद । यह चार भ-
कार का होता है । शास्त्रे० पू० ७ अ० । रोगी
अग्निः ।

अग्निविवर्द्धनः (Agni varddhanah)
स०, हि०

अग्निवर्द्धक क्षीपण, यषानी (अजमाईन)
प्रभृति । घ० श० । Stomachic

अग्निविसर्पः (Agnivisarpah) सं०, पु०
अग्निविसर्प, विसर्पमेद Pain from a
boil ।

अग्निवीजम् (Agni vijam) सं०, स्त्री०,
सुवर्ष । gold aurum शिला ।

अग्निवीजः (Agni vijah) सं०, पु० अग्नि
मण्य, अरुणी । Promna Serratifolia ले० ।

अग्निवीर्यम् (Agni viryam) सं० स्त्री०
सुवर्ष । gold (Aurum) तं० नि० घ० ३ ।

अग्निविसर्पः (Agnivisarpah) सं०, पु०
वृद्ध विसर्पों का एक मेर । देखा विसर्प
(Pain from a boil) अग्निविसर्प के लक्षण
घात विद्य विसर्प में श्वर, घमन, मुखर्षा,
अविसार, सृषा, धम, अस्थिमेद, अग्निमाघ,
समकर्म्यास, और अग्नि ये लक्षणस्य होने
हैं । इसमें समूर्ण शरीर अलते हुये अंगारों
की भांति प्रतीत होता है । शरीर के अित २
अधपय में विसर्प फैलता है यहीं २ अंग हुके
हुये अंगार के समान काल, नीला, अथवा
लाल हो जाता है अग्नि से अजे हुये, स्थान
की वर्य यह पुँखियों से व्याप्त हो जाता है
और शीमगामी होने के कारण हृदय प्रभृति
समं समानों पर शीघ्र ही आक्रमण करता है ।
इसमें वायु अत्यन्त प्रयत्न होकर शरीर में
पीडा, संशानश, निद्रानाश, श्यास और हि
सकी उत्पन्न करता है । विसर्प रोगी की
देखी दशा हो जाती है कि वेदना से मर

होने के कारण भूमि शय्या वा आसन पर
कहीं मो हपर उचर छेटने से सुख प्राप्त नहीं
होता और वेद मन और धमजित वेदना से
पेसा सु क्लिप्त होजाता है कि सुखसोय अ
र्थात् शिरस्थायी निद्रा में लीन हो जाता है ।
इन लक्षणों से युक्त विसर्प का अग्निविसर्प
कहते हैं । घा० नि० १३ अ० ।

चिकित्सा — अग्निविसर्प में लोषारघुला दुग्धा
धी वा केषल घृतमह अथवा मुक्तहटी का
शोतल काय, कमल का अल, कृष वा ईलका
रस, इनका परिपेक करे और मदातिक घृत
को पान लेग और परिपेक के काम में आये
घा० चि० १८ अ० ।

अग्निवृद्धिः (Agni vriddhah) - सं०
अग्निवृद्धि, सुधावृद्धि । Increase
of digestive fire or appetite

अग्निवृद्धिकर (Agni vriddhikar) - सं०
पु०, अग्निवर्द्धक ।

अग्निवेण्ड पाकु (Agnivendupaku) -
सं०, वादमारी अकयड ।

अग्निवेन्द्र पाकु (Agni vendra paku)
हि० । अग्निगर्म सं० । (Ammannia Ba
coifera, Linn) । - फा० १० ३ मा०, १०
मे० मे० ।

अग्निशिखम् (agnishikham) - सं०, स्त्री०,
(१) सुवर्ष, सोना । Gold (aurum) ए०
नि० घ० १३ । (२) कुसुम् पुष्प - सं० ।
कुसुम फूल - सं० । Safflower (Cartham
us tinctorius) । (३) कुसुम, केसर ।

Saffron (Oroous Sativus) । मा० पू०
२ मा०, म० ५० ३ ।

अग्निशिख. (agnishikha)-स० पु०
(१) कुंकुम, केसर । Oroous sativus
(Shrub of) । रा० मि० ५० १२ ।
(२) सागलिका वृक्ष-स० । कलिहारी-दि० ।
विपकीर्णशिया गाक्ष य० । (Gloriosa sup
erb Linn) । रत्ना० । (३) पुस्तुम्भ वृक्ष
स० Safflower (Carthamus Tinotori
us) । रा० २० । (४) वृक्ष करञ्ज स० ।
'कञ्ज करञ्ज'-दि० । गाटा-य० । (Onca
pisia Bordoolla) । (५) शूण्य (म)
स० । 'जमीकंर'-दि० । मोक्ष गाक्ष-य० ।
(amorphophallus compunulatus) ।
प० पु० ।

अग्निशिखा (agni shikha)-स० स्त्री०,
सागलिका औषधि-स०, 'करि [लि] हारी
दि०, [Gloriosa superba] पू० १ मा०
म० ५० ।

अग्निशिष (agni shisha) दे० नट्ट का
वस्त्रनाग, । कलिहारी, सांगली । Gloriosa
Superba ले० । ह० मे० मे० ।

अग्निशिषा (agni shisha) स० स्त्री० (१)
शीलाई, (२) कलिहारी, (३) शिबक ।

अग्निशेखरम् [agni shekharām] स०,
स्त्री० पु० Saffron (Crocus Sativus)
कुंकुम, केसर । रा० मि० ५० १२ । कुस्तुम्भ
वृक्ष, Safflower (Carthamus tinoto
rius) [३] सांगलीवृक्ष, स०, कलिहारी

दि० । Gloriosa Superba ले० । [४]
विद्यन्या शाक नामक मेद ।

अग्निष्टोम [agni-shtomah] स०, पु०,
The moon plant सोमलता । सु० वि०
२६ अ० ।

अग्निष्ठ [agni shtihah] स०, पु० साषा
संज्ञक आदि अथवा कोई भी शाक आदि भू
जने का लोह पात्र ।

अग्निस्कार [agni sanskarah] स०
पु० अग्निस्तव कम Funeral ceremonies

अग्निस्पर्शा [agnisansparsha] स०
स्त्री०, पपटोनामक सुगन्ध द्रव्य, पद्यापती ।
यह उत्तर में प्रसिद्ध है । भा० पू० १ म० क०
य० पपटो [री] नदी [जी] दि० ।

अग्निस्दीपन [agnisandipana] स०
त्रि०, अग्निपयस्क, लुभावर्द्धक, Increasing
appetite

अग्निस्दीपन रस [agnisandipana
rasah] स० पु० ।

अग्निस्मभव [agni sambavah] स०
पु० Wild Saffron जंगली कुस्तुम, अरण्या
कुस्तुम वृक्ष । धनकुस्तुम-य० । रा० मि० ५०
४ (२) अग्निप्रार वृक्ष । रा० मि० ५० ३ ।

अग्निस्हायः [Agnisahayah] स०, पु०
Wild pigeon जंगली कबूतर-दि० । पश्य
पारावत स० । सुगु य० । होगलापती म० ।
रा० मि० ५० २६ । २ पायु । air, wind.

अग्निस्तादः [Agni Indigestion sudah]

स ० पु० अग्निमान्द्य अपच, अजीर्णता, कफ द्वारा जठ राक्षिका निस्तेज होना । मन्दाग्नि । स १० को० ज्य० चि० ।

अग्निसाध्य [Agnisadyah] स ० त्रि०

अग्नि दाहनाध्य, अग्नि से जलाने से जा हीक होये । स ० द० अर्थ० चि० ।

अग्निसारम् [Agnisarām] स ०, ज्ली०,

रसाञ्जन, रसवत । A sort of collyrium स ० मि० य० १३ ।

अग्निसारा [Agnisara] स ०, ज्ली०,

Fruitless branches फलशून्य शाखा, फल रहित अक्षियां । स ० नि० य० २ । मञ्जरी, यौर, मुकुञ्ज । The blossom

अग्निसुन्दर रसः [Agnisundar rasah]

स ० पु० अजीर्णाधिकार में धरित रस, यथा सुश्रागा, १ भाग, मरिच २ भाग, । इनके सूर्य में सादरक के रस की भाषना देवे । अद्भु० लक्ष्म । प्रयोगा० ।

अग्निसूनु रसेन्द्रः

अग्निसेवनम् (Agni sevnam) स ०, ज्ली०

अग्निसेवा अग्नि प्रयोग, अग्नि स्थापना । इसके शुष्ण शीतपात, स्वस्व, कफ, कम्पन, प्रभृतिको भास्य करने वाला और एक पिच, कर्ता तथा आम और अनिष्यम् का पात्रक है । मद् ० १३ य०

अग्निस्थापनीय [Agnisthapaniya]

अग्निवर्क, दीपन । Stomachic.

अग्निहानि. [Agni hanthi] स ० पु०, In-

digestion, Loss of appotito अग्नि मान्द्य, अजीर्णता, अपच मन्दाग्नि वा० नि० १३ अ० ।

अग्निहोत्र [Agni hotrahi] -स ० पु०

Ghee घृत ।

(२) (Fire) (१०) अग्नि । मे० ।

अग्नीका [Agnika] स ० यपास । Goss-

ypium Indicum लो ।

अग्न्या [Agnya] स ०, खी० तर्तर धि

ज्ञिया, तिस्र पक्षी । (a) Partridge Perdix Francollinus इ० । acow गाय हलो० ।

अग्न्याशय [Agnyaashaya] स ० पु०,

पैकेबास Pinocous इ० । अग्नेमग्नि दि० ।

१ इन्किरास, القراس = घानकरास, القراس

३ उनफुत्तिदास, ملق الطحال ४ जयलवध,

ملح لبله स० । यह एक अग्नि है जो प

तली धम्यी चिपटी और प्वाल अिहोपम

होती है । यह नामिले ३-४ इंच ऊपर

आमाशय क पाछे कटि के पटले वृक्षरे वशे

कका के सामने झाड़ी पही रहती है । इसका

चांयां लंग सिरा झीहा से मिजा कुमा रहता

है । इसकी लम्बाई ६ से ८ इंच चौड़ाई १॥,

तथा मुदाई १ या १। इंच के लगभग -

नार १ छटांक से ३ छटांक तक होना

इस अग्नि में एक प्रणाली होती है, जो

धामपाप्य से आरंभ होकर दक्षिण सिरे

धोर आकर पुनः पिचप्रणाली से मिलकर

दावशांयुक्त में जा खुबती है । इसके प्राय

—बने-हुये पाचक रस को जोमरस (Pancreo-
atio Juico) कहते हैं, इस रसका प्रधान कार्य
यह है कि यह आहारस्य घसा Fats अडेकी
छुकेनी के सद्य पदार्थ Albumin और
सरोरीय पदार्थ को पाचनयोग्य बनाता है।

अधर (Aghbar) - अधर अशर
-गुल्फार, आसद, गर्वआसद, गुम्बारी, काकीईग
मदियासा, ४०। पक्षिपूर्व, प्रसुरमूर्व-दि०।

अभ्रस (Aghmas) - अभ्रस
-४०। जिसके-नेत्र में, अभ्रस
शेपड़ (कीचड़) आती, हो।

अग्रम् (Agram) - अग्रम्, पक्षपरिमाण
यथा—“परिमाणेष्वग्रस्य च” एक पक्ष २ तो
के बराबर होता, है। से० रदिक। (१) बुद्ध
आदि का अग्रभाग। (२) पहले, आगे आदि
(The forepart of a thing, adj., anter-
ior prior, first) मुकदम, कुशामी अ०।

अग्रकाण्ड (Agra kandah) - अ०, पु०
कांडाम, तने का अग्र भाग। The forepart
of the stem

अग्रकोण (Agra kona) - अ०।

अग्रखण्ड (Agra khanda) - अ०, इत्येव्य
के तीनों टुकड़ों में से तीसरा नीचे का पदका
का जो कीड़ी देखने-द्वयाने से स्पष्ट किया
सकता है। जीफोर्ड मोसेस Xiphoid
process.

अग्रगामी (Agra gami) - दि०, पु० } अ
-ग्राम। Preceding, going before.

अग्रभास [Agra gras] दि०, पु० प्रथम कवच
The first morsel।

अग्रचूर्णक (Agra pharvan akal) अ०
वस्तु, विशेष।

अग्रजः (Agra jah) - अ०, पु० काक विशेष,
पायस, कौआ a crow (१) संज्ञक, कौये
के समान एक पक्षी है।

अग्रजंघा (Agra jangha) - अ०, स्त्री० अंग
प्रभाग, अंग का अग्रभाग, The fore part
of the leg। हे० अ०।

अग्रधन्यम् (Agra-dhanyam) - अ०, स्त्री०,
धान्य-विशेष, पवार, राजप।

अग्रपर्णी (agra parni) - अ०, स्त्री० (१)
-यकविन्नी (कीच, किन्ना, वि०, आस, इ०)
अ०। a plant eqvibage (प०, पु०) इ०
अग्रसुगता, (१) अग्रकोण, अ० (२) अ०

अग्रपत्रिका (Agra parika) - अ०, स्त्री०
पौर्वाग्र, अग्रका पोर्वा। Anterior phalanx

अग्रपाणि (Agra panih) - अ०, पु० हस्ताम,
हाथ का अग्र भाग। The forepart of
the hand,

अग्रपुष्प (Agra pushpah) - अ०, पु०,
Calamus rotang (Common cane)
वेतस वृक्ष। वेत-दि०। वेत शाक्य०। प०, पु०

अग्रबाहु (agra bahu) - अ०, स्त्री० Fore-
arm-दि०। कोहनी के नीचे अग्रबाहु कहली से
कलाई तक का भाग अग्रबाहु या प्रकोण कह-

जाता है। अग्रबाणु काहनी के स्थान पर बाहु के रूपर मुड़ जाता है।

साइद, ८८ - मिश्रलम् कलारै क्लीं अ० ।

अग्रभाग (*agra bhag*) - हि०, पु०, अगला दिस्ता, ५ दिशा दिस्त, आगे का भाग The preceding part।

अग्र मांसम् (*Agra mansam*) - सं०, स्त्री० The heart हृदय। पुजा। हृदय के भातर हाने वाला मांस पृथि रूप राग विशेष। सु० था०।

अग्रया + *Agr-ya* सं०, स्त्री०, त्रिकणा। The three Kyrobalane-हं०। वै० घ०।

अग्रयून (*gr'yun*) - *अग्रयूना* मा०। स्वारिध, फुलला। कंठ, पात्र हि०। मुरिग Prurigo मुरादित्प्र Pruritis।

अग्रलोड्यः (*'Agra lodynh*) - सं०, पु०, 'चिञ्चाटक' पुग, खेडुना-हि०। चंभको, थि आइ मूल य०-गुण-वह पाक में गुरु, शीतल तथा अमोर्ष करने वाला है। राजे। *Marse lia dentata*।

अग्रलोहिता (*Agra-lohita*) - सं०, स्त्री०, अगिलोहाक, खेहारी हि०। रा० दि० य० ७।

अग्रवीज- (*agra vijah*) सं० पु०, बीजाग्र वृत्तम न, तथा कुरफ्त आदि। हे० य०। *Avi viparous plant as the Gomphroena glabos, etc.*

अग्रविहि (*agra vyibih*) सं०, स्त्री० प्रस्ता-अग्र, बीजाग्र, र० मा०।

अग्रशृङ्ग (*Agra shringa*) - Anterior for-enix।

अग्रहायणः (*Agra hayana*) सं० म०

अग्रहणः (*Agrahana*) हि० प्र० } मार्गशीर्ष मास अर्थात् अग्रहण महीना।

अग्रास (*Aghras*) *अग्रास* अ०, सुदुर्गुण अमृशास *अग्रास* अग्रान्तरीय श्लेष्मा हि०। न्युकस Mucus हं०।

अग्राह्य (*Agra-hya*) ग्रहण करने के अयोग्य तुच्छ, निस्तार। *Un agreeable*,

अग्रिमा (*Agrima*) सं०, स्त्री०, लवली पृष हरफरी हि०। लोणागच्छ-यं०। श० च०।

अग्रिमोनियम् (या) **युपेटोरियम्** (*Agrimonium Eupatorium, Linn*) - सं०, शब्दतुल्य पर्यायस, गुाफिस-अ०। *Agrimony*। फा० ह० ३ मा०।

अग्रिमोनी (*Agrimony*) - हं०, गुाफिस अ०। See-Ghassit।

अग्रु (*agruh*) - सं० स्त्री०, अंगुली। अंगुली फा०। फिगर Finger।

अग्रष्टो (*agresto*) हं० अयस्क-द्राकारक कच्छेदाक का स्वरस Juice of grapes फा० ह० १ मा०।

अग्रोपाइरम (*agropyram*) - हृष, प्रथि, सकेर पूय। Couch (Triticum)।

अग्रोपाइरम रिपेंस (*agropyram*)

pens) -से० । सफेद दूब - हिं० । Coucho-grass
ass.

अग्रोस्टिस एल्बा (agrostis alba, Linn)

से० श्वेत दूबा, सफेद दूब ।

अग्रोस्टिस डाइप्रण्ड्रा (Agrostis dian-
dra, Roxb) - से०, पेनाब्रोनी, Diandron
bent grass इ० इ० हिं० गा० ।

अग्रोस्टिस लिनीएरिस (Agrostis line-
aris Roxb) - से० 'दूब,' अनेषा (Thread
like bent grass) इ० हिं० गा० ।

अग्रोस्टिस साइनास्युरिआइडीस (Agr-
ostis cynasurcoides) - से० दूब । एतो
दूब ।

अग्लफ (aghlaf) - से० बेसुतण, स
तना व क्रिया हुआ, जिसका घनना न हुआ
पा । अनवर्धमाना इत Uncircumoided.

अग्लुकूमा (aghlukuma) - से० कृष्ण
सुमाडर कण्डर कुरूल अल्लु कृष्णवृक्ष
वक्र कुरूल अल्लु कुरूल अल्लु कुरूल अल्लु
अत्र कनर कामा, हरित मातिया । यह सायने
युटे प्रकार का मातिया दिग्ग है जिसमें नेत्र
विट कठिन सा जाता है और इति रुजि
नस्पत् सा जाता है । यदि पानयन में इसका
विश्रान्त न की जाय तो यह कषाय रागत
है, और दूब, (Coucho-gr) का कर्षण
है । एतद्दूब (Gislucosin) ।

अशियह (ashiyah) - से० दूब (द० द०)
दूब (द० द०) वन में, मिं नवी । पर

द्वि० मेम्ब्रेन्स Membranes इ० । देखो
'गिराभ ।

अशियह जुलालियह (aghlshiyah
zulaliyah) - से० अशियह दूब (द० द०), देखो,
अशियह पद्ममियह । Mucous mem-
branes ।

अशियह बल्गामियह (aghlshiyah
balghamiyah) - से० अशियह
जुलालियह (द० द०) अशियह दूब (द० द०) । पद्ममी-
मि शिया, सुखायी शिरेलिया-इ० । प्रत्यक्ष
कला, स्नेहिन कला, एक पतली पद्ममि
निली अिसकी मले एत निरगाहदार मल
(स्नेह) पनाती है अिससे संघियां (घकमी
घोर गुहायगरहती है, इससे उमरी रजि में
सरसता होती है । सारगावियन मंमेम
Synovial membranes इ० ।

अशियह साइयह (aghlshiyah sa-
iyah) - से० अशियह सायि सिह (द० द०)
अतीपायल ।

देगा - गिराभ साह । एतद्दूब इति
Serous membranes ।

अशियह मुनातियह (aghlshiyah mu-
natiyah) - से० अशियह मुनातियह
मुनातियह सिह (द० द०) अशियह दूब (द० द०)
दि० । मुनक के दो एत
सुमाडर कण्डर कुरूल अल्लु कृष्णवृक्ष
वक्र कुरूल अल्लु कुरूल अल्लु कुरूल अल्लु

अशियह (अशियह) - से० अशियह
दूब (द० द०) वन में, मिं नवी । पर

की क्लिष्टियाँ, विभाग के परदे-उ०। मोस्तिस्क कलाष, मस्तिष्कावरण-दि०। मेनिन्जीज़ Meninges इ०।

नोट—बड़े दो क्लिष्टियाँ हैं जो मस्तिष्क पर लिपटी हुई हैं। इनमें प्रथम की अंतरावरण जो एक पतली क्लिष्टी है मस्तिष्क के चारों ओर लिपटी है, उम्म रकीक *أر (Pia mater)* कहते हैं, और दूसरे बाह्यावरण जो स्थूल होती और अस्थियों से लिपटी रहती है, उम्म गलीज़ *أر (Düramater)* कहलाती है।

नोट—यह उपरोक्त वर्णन यूनानी हकीमों का है, किन्तु अर्वाचीन खेदशास्त्रविद्या के अन्ये पक्षके अन्तसार उपरोक्त दो क्लिष्टियोंके अतिरिक्त एक क्लिष्टी और मालुम हुई है जो एक दोनो के मध्य में स्थित है जिसे हिन्दी में मध्यावरण और अरबी में अद्दुबूबी *أر* तथा अंगरेजी में अरक्नोइड (Arachnoid) कहते हैं। विशेष विवरण यथा स्थान देखिये।

अग्शियलुसुखाअ [Aghshiyōfannu

khaa] *أغشية النخاع* अग्शिय लुकाइयह *نخاع* परदाहाय लुकाअ *أغشية نخاع* हराम मंज़ु के क्लिष्टियाँ हैं। दोषुम्मावरण दि०। मस्तिष्क के सद्य सुपुम्मा पर भी तीन क्लिष्टियाँ हैं। इनके नाम बड़े हैं जो मस्तिष्क की क्लिष्टियों के हैं Spinal membranes.

अग्शियतुलु जनीन (Aghshiyōtul
janin) *أغشية الجنين* अग्शियतुलु जनीन *أغشية الجنين* अ०। जनीन के परदे, जनीन पर

भी तीन क्लिष्टियाँ-उ०। गर्भकला भ्रूणावरण दि० फोटास मेमब्रेस Foetal membranes डेसिडस Debidus इ०।

ये तीन कलायें हैं जा अरायु के भ्रूण के चारों ओर लिपटी रहती है। इनमें से प्रथम को हिन्दी में भ्रूण बाह्यावरण, अरबी में अन्फूस (انس) और अंगरेजी में कोरिआन Chorion और द्वितीय को क्रमशः भ्रूणावरण चरण, मर्यामिह (مشيمة) तथा एमेनियोन amnion और तृतीय को क्रमशः भ्रूणमध्यावरण, अफ्राइफी *أر* और ऐलनटाइस allantois कहते हैं।

अगसान (aghsan) *السان* सं०, गुल्न *أغصان* अ०। शाखाय, टहनियाँ। प्रांचेअ Branches।

अघनम (aghanam) सं०, ज्ञो० दधि, दही, दि०। दही-य०। कर्ड Ourd इ०। हला०।

अघदोडे (aghadode)-ते० अड्डता, अरुस, दि०। *adhatoda vasika* तै०।

अघविष (aghavishah) सं०, पु० सर्प, सर्पि। Serpent; snake.

अघाट. (aghatah) सं०, पु०, अपामार्ग। *nohyranthes aspera* जे०। रा०।

अघाडा—डा (aghada ra) दि०, अघ कांशवाही। *nohyranthes aspera*

अघोड़ी—डो (aghara, ri) गु० मार्ग।

अघोरनृसिंह रस (aghor nrisinha ra
rah) सं०, पु० संधिपातक ज्वर में प्रयुक्त हीनेषोडा रस।

अग्न्या (agnya) सं०, स्त्री० गवि, गड । गड वं० ।

अग्नया (agnyā) सं०, स्त्री० स्त्रीगवि गय । काठ Cow ई० । गामी-वं० ।

अङ्ग (anka) स०, पु०, Lumb of the body शरीरव्यय । कोलं वं० । रा० नि० घ० १८ । घा० वि० ७ अ० । (२) (अणु रेखा Mark, spot (२) Sin पाप, Pain दुःख । म० कट्टिकम् । (४) number आंक, सङ्केत, सङ्ख्या ।

अङ्गडास (Ankadas) सं० कुकुर जिह्वा वं० हि०, Loon styphylea ले० । कुकुर जिह्वा हि० वं० । L. Sambucina Willd Staphylea India ले० । ई० मे० मे० ।

अङ्गति (Ankatih) स० पु० Air, Wind वायु । दि० । Fire अग्नि । वि ।

अङ्गन (Ankanah) स० पु० अंकोष्ठ, अंकोट्टरुच देय । अंकोष्ठ गांघ्र-वं० Alangium decapetalum वे० श० ।

अङ्गना (Ankana) हि० लिपना, स्थापना मोक्षमाय करना, चिह्न करना ।

अङ्गपादम् (Ankapadam) स० स्त्री०, पादचिह्न पैर का निशान । Footprint

अङ्गपाली (ankapali) स०, स्त्री०, Mid wife धात्री, दाई । यथा वेदिककर्मण्ये सन्ध्य विशेषे "धात्रीं वेदिकयोःरपि । मे अथ तुष्क । (२) Embracing आदिगन ।

अङ्गव (ankaḥ) सं० मङ्गली मेष । kind of fish ।

अङ्गवृत्त [Anka but] [انكبوت] अ०, शेर मगस [شوره گس] फा०, मकड़ी वि । a Spider

अङ्गवृत्तिय्य (ankaḥvṛtiyya) सं०, मकड़ी के जाले वा सा परदा । नेत्र का चतुर्थ परदा । देसा—सबकये-अङ्गवृत्तिय्या ।

अङ्गरी (ankarī) हि०, स्त्री akind of vc
अकरी (ankarī) } toh [Viola sativa]
रवाड़ी रोड़ी ।

अङ्गलिगे [ankalige] कना०, अंकोष्ठ, देरा Alangium decapetalum ले० । फा० ई० २ मा० ।

अङ्गलेख्य (Anklekhyah) सं०, पु० वि
अङ्गलोद्य (Ankalodyah) अंकोष्ठ वि-
अंकोष्ठ-वं० [Marsilea dentata]
ले० । व० श० ।

अङ्गदा [ankaḥda] सं०, पु० कोङ्कण वातक । कोलेर हृत्ते वं० ।

अङ्गा, ङ्गी [anka, ṅgī] सं०, स्त्री मूत्रक विशेष । शब्द ।

अङ्गाना (ankana)-हि० परचना, अन्वयान, वाम बुद्धिगता । To cause to relax, to examine, as cloth, to approve of ।

अङ्गालन (ankaḥalan)-हि० ।

अङ्गावरी (ankaḥvārī)-हि०, पु० निरज, दय मात का अन्वय । (Valuation) ।

अङ्कित (ankit) चिह्न किया हुआ, मुद्रित, चिह्नित (Marked, examined, valid, d, paged)।

अङ्कुडु (Ankudu)-ते० कृडा, कृटाज, कुरैया Holarrhena anti dysenterica, Linn ले०। स० फा० ६०।

अङ्कुडु'कर (Ankudu karra) ते० गम्बीर, मन्ना। Uncaria gambir, Roxb (wood of) स० फा०।

अङ्कुडु कोडिश (ankudu kodishi) ते० ते० मोटा इन्द्रिय, ईद्रजो। Wrightia tinctoria, R Br (Seed of) स०, फा० ६०।

अङ्कुडु-चेट्टु (ankudu-chettu) ते० (ए० व०)

अङ्कुडु-चेट्टुलु (ankudu chetlu) ते (य य)

अङ्कुडु-मानु (ankudu manu) ते (य य)

अङ्कुडु-मानुलु (ankudu manulu) ते (य य) कृडाकृडा, कृटाजकृडा, कुरैया। स० फा० ६०। Holarrhena anti dysenterica (Tree of)

अङ्कुडु-वित्तु (ankudu vittu) ते० (ए० व०)

अङ्कुडु-वित्तनमुलु (ankudu vittanmulu) ते० (य० व०)।

अङ्कुडु-वित्तुलु (ankudu vittulu) कृडाकृडा इन्द्रजो, इन्द्रियव विल-हिं०। Holarrhena anti dysenterica R Br Seeds of। स० फा० ६०।

अङ्कुर (Ankur) स०, पु० a plantlet, a seed bud, a shoot, or sprout, a germ

मराह। अङ्कुडु, कुनयो, अङ्कुर। पोक य० पा० उ० ३६ अ०। इसके पर्याय—अभि नयाङ्कित (अ)। उङ्कित, पुंसेद्य, अङ्कुर, [रा] रोट [ह]। अल। गधिर। लोम। मुङ्कुर। फल। सप्यत्र मे० रत्रिक। अभिनयोङ्कित। मे०।

अङ्कुरआना (ankur ana) उगना, जमना, गह। Germinate, sprout।

अङ्कुरक (Ankurakah) स०, पु० पक्षि यास स्थान, घोंसला। पें० य०। a nest।

अङ्कुरित (ankurit)-हिं०-पु० अङ्कुर से हित कुनगी वाला।

अङ्कुरितयौवना [ankurit yauvana] स० स्त्री० पुष्यो स्त्री, युवा अवस्था की प्रथम दशा।

अङ्कुर-विशिष्ट-आवरण [ankur vishisht avarana]

अङ्कुल [ankul] हिं० देरा, अकाफ। alanguium decapetalum, Lam।

अङ्कुले (ankulo)-हिं० अङ्कुल' देरा alanguium decapetalum, Lam ले०।

अङ्कुशग्रह (ankush grah)-हिं० स०, पु० महाषट, फीलवान।

अङ्कुशः (ankushah)-स०, पु० process इ०। म० शा० ह० य० र० १ शृषु-स०। दला०। हिं०, पु०, (श०, व०, आ०) की, छोटे का एक छोटा शर-अससे हाथी चलाया जाता है।

अंकुरत (ankusit)।

अंकुसा आफिसिनेलिस (anobusa officinalis) — से० 'गायमुपान'।

अंकुसा टिंकटोरिया (anobusa tinctoria, deav) — से० एक पोषा है जिसका रीत आपत्ति कार्य में आता है। मेमो०।

अकुर-कुं [ankur ku] — स० पु० अंकुर दि०। sprout, a germin—इ०। दे० च० ४ का।

अकूलग [ankulang] — ता० असंगंध Withania Somnifera ल०

अकूलिया [ankuliya] } गु०।

अकूली [ankuli] }

अकेरिया गैम्बियर [Uncaria Gambier] — से० कत्या वृक्ष, 'खैर वृक्ष'। Gambier—इ०। इ० मे० मे०।

अकोएड [Ankoed] } स० डेरा, अंकोल

अकोएल [Ankoel] } Alangium deoapetalum—से०। इ० मे० मे०।

अकोट-ठ [Ankotah thah] — स० पु० 'अंकोत' अंकोटक वृक्ष, डेरा। Alangium deoapetalum—से०। १० मा०, २० मि० अ० ३६, मा० पु० १ म०, गु० ५०।

कोड (ankodha) दि० डेरा, अंकोल।

See ankol

अकोरना (ankorana) — अकोरना, वृक्ष अंकोरना

अकोटक (ankotakah) — स० पु० डेरा आकाङ्गाद्य, घसा अंकोट-यं०। alangium Hexapetalum। मा०। रा० मि० ४० ६

अकोट गुटिका वेजो अंकोल।

अकोठ वटक (ankottha vatakah) — स० पु०।

अकोल (ankol) — दि० } स० पु० अंकोटक

अकोल (ankolah) }

वृक्ष डेरा। alangium Hexa detalum रत्ती०, मा०, म०, ख० १ म० अतिदार वि० अंकोल मूल कटकः। वा० ३ ३८ अ०।

अंकोलक (ankolakah) — स० पु० अंकोटा वृक्ष, डेरा। अंकोल, अंकोटा-यं०। १० सा० सं०। alangium Hexapetalum से०।

अकोल कल्क।

अकोल तैलम् (ankola tailam) स०, ही०, डेरा के बीज का तैल। गुण-अंकोल तैल वात नाशक और इसकी 'मात्रिय' चर्म रोग नाशक तथा पूर्व-वैद्य एवं महर्षि लोग इसको कफ नाशक पतकाते हैं। वै० निय०।

अकोल [ankol] — दि०, अकोला, अकुल, काला अकोला, टेप, डेरा, यैल अकुल, दि०, ५०।

संस्कृत पर्याय—अकोरो बीजकीलः स्या अंकोलस्य निकोचकः अंकोर, बीजकील, अंकोला, निकोचकः [अ० ३]

कटिशूल, अतिमार और पिशाच पीडा को दूर करने वाला है। (नि० १०)

अङ्गोल के बीज—शीतल, घातुयुक्त, स्वा विष्ट, मधुमि फारक, भारी, रस और पाक में मधुर, पलवारण, वफाकारी, सारक, स्निग्ध पृष्य (धीर्ययुक्त) तथा दाह, घात, पिष्ट, घण, रक्त विकार, कफ, पिष्ट और विसर्प का नाश करने वाले हैं। (नि० १०)

अङ्गोल का अर्क—गुण, आम, सूजन, शीत प्रह और विष को नष्ट करता है।

अङ्गोल तैल—रसको पूष वैध पथ मद् विषो ने घात वफा नाशक और माक्षिण करने से चर्मरोग नाश करने वाला फल है। (पै० निघ०)

त्रिवैले अंजन से नेत्रोंमें अंधता उत्पन्न होने पर अङ्गोल के फूलों का अंजन नेत्रों में लगाने अन्धता दूर होती है। (सुश्रु०)

अङ्गोल की जड़ की छाल बफरी के मूत्र में पीस कर पीने से लेप करने से चूर्ण का विष नष्ट होता है। (चा०)। इसकी जड़ की छाल दुग्ध के साथ पीस कर पीने से कुष्ठ का विष दूर होता है। (भाव०)। इसकी मूल त्वचा का चूर्ण खावलों के जठ्र के साथ सेवन करने से अतिसार और संमहणी में लाभ होता है। (च० व०)

अङ्गोल के सर्व्वध में यूनानी म

यूनानी ग्रंथकार इसे पहिली (किसी २ के मत से दूसरी कक्षा) के मन्त्र हैं।

दामिपर्ता—श्लेष्मा अधिक उपद्रव करता है। दर्पण-काली मिर्च और शीतल से रक्त वस्तुयें। प्रतिनिधि किसी २ रोग में पुर्कृत्या है। मात्रा-४ या १ मा० तक। विशेष प्रमाय विषार व शोधलय कर्ता।

हृदय को पलप्रद, कफ और वायु के वि-बारों को हरण करता, उदर की पीडा को हरण करता, एमिड और इसकी जड़ के छाल का चूर्ण १ माशा कालीमिर्च के साथ पचासीर को बहुत गुण कारक है।

इसके अत्यधिक उपयोग से श्यामाशय नि-यंत्र हो जाता है, और शिर में कनकनाहट के साथ मीठा दर्द शुरू हो जाता करता है। गुदा स्थान में जलन मालूम होती है। नेत्र पीले पड़ जाते हैं, मित्र कम जाती है। एवं मास्तिष्क काय करने की क्षुधा अधिक बढ़ जाती है। ऐसी अयस्था होने पर शंखपुष्पी चूर्ण ४ मा० दुग्ध पाषाण में उपाहकर दंडा करके स्याद के अनुसार मिश्रो मिलाकर पि-लाने से तरकाल समस्त विकार नष्ट होते हैं। अङ्ग उष्ण और खरपरो होती है। फल ठंडा पौष्टिक शरीर को मोटा करने वाला होता है। यह आहार कार्य में आता है। किन्तु अ-धिक खाने से गरमी भावना होती है।

अङ्गोल के विविध नक्षत्र

अङ्गोल

देशी

रेखक तथा

आती है।

करने के

दिस व्यवहार में आता है। (डा० सखाराम)
अर्जुन।

मि० मोहोदीन शरीफ के वर्णानुसार उक्त औषधि कुछ एक गुप्त योगों का, जो दीर्घ रोग, त्वचारोग तथा कुष्ठ रोग की चिकित्सा में अर्कट तथा वैशोर प्रभृति स्थानों में अत्यधिक प्रसार पा चुके हैं, एक प्रधान भय यस्य है। और यह स्वानुभव का वृत्तन करते हुए कहते हैं कि मैंने उक्त क्षस को कुछ कुष्ठ रोगियों को प्रयोग कराया और अनेक वृथाओं में मैंने इसे २३ रत्नी की इतनी कम मात्रा में भी कामक प्रभाव युक्त पाया। अधिक मात्रा (अर्थात् २५ रत्नी) में उपयोग में लाने पर यह योग्य और पेकररं कामक तथा घोड़ी मात्रा में मतलीकारक और ज्वरग्र औषधि सिद्ध हुआ। इससे भी शून्य मात्रा में यह भा रत वर्ष के सर्वोत्तम परिचरक पछमद् औषधियों में से है।

इसकी त्वचा अत्यन्त तिक है, अतः त्वचा रोगों में इसकी प्रसिद्धि बिना आचार के नहीं। यदि इसको पर्याप्त कोष्ठ तक लगाता उपयोग में लाया जाय तो मदार की अपेक्षा उन पर इसका प्रभाव अधिक होता है।

वे पुनः वर्णन करते हैं कि यह इतिके काना (Ipoonounha) का एक उच्चम प्रतिमिधि है और मयादिका के अतिरिक्त उन समस्त रोगों में काम दायक सिद्ध होता है, जिनमें कि इतिकेकाना व्यवहृत है।

ज्वरग्र तथा स्वेद जनक होने के कारण ज्वर नष्ट करने में यह उपयोगी पाया गया है। मतलीकारक, मूत्र जनक और ज्वरग्र प्रभाव

हेतु इसकी अड़ के छाल की मात्रा ३ से ५ रत्नी तक और परिवर्तक रूप से १ से २३ रत्नी तक है। यह कुष्ठ एवं उपरंश में प्रयुक्त होता है। देशी लोग इसे विशेषतः विपैले आनवरों के काढ़ने में विपद्गणपाल करते हैं।

औषधि निर्माण—अंकोलभूषण, अड़ की छाल साथ में छुणाकर भूषण कर पारीक छान लें और चोतल में सुरक्षित रखें। मात्रा घममहेतु २५ रत्नी (५० ग्रेन)। (मा० रा०)

इसकी अड़ की छाल चावल के पानी में घोट कर घोड़ी ली शहद के साथ अतिसार में भरता आती है। आमातिसार और रक्ता निसार में मूत्र त्वचा का भूषण ५ रत्नी दिन में २-३ समय सेवन करना चाहिये।

यह नित्य ज्वरों में भी उपयोगी है। ज्वर की अवस्था में २३ से ४ रत्नी देने से स्वेद आकर ज्वर घेग कम हा जाता है व रूपा, बाह आदि ज्वर के उपद्रव शमन होते हैं।

इसकी अड़ का शीत फपाम तथा कषाथ घा क साथ शान विप माशक है। यह बन्द शूल, छमि, प्रदाह और सपंध (२३ मा- शिलक का भूषण) प्रभृति रोगों का शमन क र्ण वाला है। इसकी मूत्र त्वचा द्वारा निर्मित तैल का संधिपात में पाशोपयोग होता है। कम मात्रा में यह रसायनिक गुणों को करता है।

मयूडे और आष्ठ सूजने पर मधु क साथ मलप करने मयया इसका काड़े से दुग्दी व रने से लाभ होता है एवं मयूडे से प्ल य दना बन्द होता है। थियबिया माशक तथा फुकर खोली को मधमावरया में प्रयोग करने से लाभ करता है।

इसपर रखकर कायनों की आग कटें, इसकी धारमो से तैल टगक कर व्याले में धावेगा इसी को ध्यहार में लावे ।

यदि किसी धारदार शस्त्र से छत होजाय तो अंकोल तैल में जई भिगा कर पट्टी बांध देयें तो यहता हुआ रक्त भी रुक जाता है और घाव भी शीघ्र सूख जाता है ।

अंकोल तैल १ पाय, मोम १ छ०, अग्नि पर जजाकर रख दो, २ मा० मुना तृतिया मिला दो, और ठंडा होने पर भस्मी प्रकार मिला कर किसी यर्तन में रख दो । यह मलहम दाह, खुजली, भर्गदर, नासूर, छत, फोड़ा, फुन्सी प्रभृति समस्त स्वखा सस्वन्धी रागों को नष्ट करता है ।

५ बूँद तैल मिथी में मिलाकर विसूचिका रोगी को उपयोग कपने से उसे लाभ होता है ।

५ से १५ बूँद तक तैल बन्धु पुष्प में मिला कर मिथी डाल कर प्रति दिन पीना शरीर को बलवान बनाता है और प्रमेह, मिषलता, सिर में खजर आना तथा आँसों में अंधेरा आना आदि को दूर करता है ।

३१। मा० तैल बन्धु अल से पीना लूय वस्त जाता है और वेद के दर्द व यद हजमी को दूर करता है ।

सिर में दर्द हो और किसी तरह अरुसा न होता हो तो एक तैल को २० बूँद की मात्रा में चकरी के बूध में धाँका खा शब्द डालकर पिलाना लाभदायी है । इससे मस्तिष्क पुष्ट होता है ।

इसके तैल को तिख के तेल में मिला कर लगाना बालों को बढ़ाता है और सिर के जुँधों को दूर करता है ।

गरम पानी में तैल डाल कर कुत्ती करना मसूरों की सूजन, दर्द, खून बहने का आचम करता है ।

चेचक के दाग पर गेहूँ के आटे में इसी और अङ्गल का तेल मिलाकर पानी से गीला करके उपटना रंगको ठीक करता है और कुछ क्षुब्धसूर्ती करता है ।

नोट—प्रायः निषण्डुकार अंकोल को रेषक मानने हैं पर कई प्राचीन आचार्य इसे संप्राही कहते हैं । अरक सुधुन ने विपन्न माना है पर संप्राही पिरेची गुण का बल्लेज देकने में नहीं आया ।

अङ्कोल फल सङ्काश (Ankol phal-sa nkashah)—सं०, पु०, फल विशेष । संसार में "पिस्ता" नाम से प्रसिद्ध है । घं० श० ।

अङ्कोलम् (Ankolam)—मल्ल०, डेरा, अंकोल Alanglum decapetalum, Lam ले० । ६० मे० मे० ।

अङ्कोलमनचर (Ankolam nachar)

अङ्कोलम्चेट्टु (Ankolam ol)
अङ्कोला, अंकोल, डेरा । Alanglum
decapetalum, Lam-ले० । सं० फा०

अङ्कोलमु (Ankolamu)—ते०, डेरा अंकोल
A decapetalum, Lam । ६० मे० मे० ।

अंकोला (Ankola) - म०, }
 अंकोली (Ankoli) - क्ता० }
 अंकोले [Ankole] क्ता० }
 अंकोल्य [Ankolya] - गु० }
 अंकोलुम् [Ankolum] ता० }

देरा, अंकोला
 अंकोला Al
 angium
 decapeta
 lum, Lam
 ले० । स०
 फा० ६० ।

अंकोल्ल [Ankollah] - सं० पु०, Cedrus
 deodara ले० । देशद्रव्य । र० नि० । स० २३,
 पा० ३, ३८ अ० ।

अंकोल्लक (Ankollakah) - सं०, पु०,
 अंकोल्लक वृक्ष, देरा मद्र० व० १ । Alangium
 Hexapetalum Lam

अंकोल्लसार (Ankollasarah) - सं०, पु०,
 मालास्य मसिद्ध स्वावर विष मेर । A kind
 of poison दे० अ० ४ का० । अफीम, सं
 धिया ममृति । औ० श० ।

अंकोहर (Ankohar) - हि०, देरा, अंकोल्ल
 Alangium decapetalum Lam ले० ।

अंखुरा-विरह (Ankhura virai) - ता०,
 पुनौर के बीज । सुष्ठुमे काफुगजे हिस्वी-फा० ।
 Withania (puneeria) Coagulans,
 Dana! ले० । स० फा० ६० ।

अङ्गम् (Angam) - सं०, क्ती० (१) (My
 rha) वास हि० । सुगंध बोस-व० । र० नि०
 ६ । [२] शरीर, शरीरपदार्थ, वस्त्र, अ०
 in organ-ई० । शरीर के छोटे २ भागों को
 अंग कहते हैं, जैसे हाथ, पैर, अंग्वा, हृत्प,
 मूत्र, अणु । कुछ अंग पोसे होते हैं और
 रेशी के समान होते हैं । जैसे-सूत्राशय,

शुक्राशय आमाशय, गर्भाशय । कुछ अंग
 मर्जा के सहज होते हैं । जैसे-रक्त की नलियाँ
 पाचक रसों की नलियाँ, शुक्र की नलियाँ, मूत्र
 की नलियाँ र० नि० व० १८ । [३] उपस-
 जंतमूल । दे० अ० मानार्थ पु० [an earth]
 भूमि । हि० पु०, मित्र ।

अङ्गक [Angaka] - सं०, [१] Body
 शरीर [२] अंगर Aloe wood ।

अङ्गकर [Anga kara] - वे० घारकरेखा,
 किण्वर । Momordica Dioica, Roxb
 सं० । फा० ६० २ भा० ।

अङ्गगौरवम् [Anga gouravam] - सं०
 क्ती० शरीर का मारीपन, शरीर शुक्ल । पा
 भार व० । वा० नि० १३ अ० । Heavin
 ess of the body

अङ्गग्रह [Ang-grahah] - सं० पु०, गठिया
 अंगघेदना । पा० नि० १६ अ० । शरीर का दर्द
 शारीरिक व्यथा शरीर पीडा, अकड़वाई, वात
 रोग । [Bodily pain]

अङ्गग्लानि [Anga glanih] - सं० क्ती०
 वेद की अङ्गता, वेद माडप, शरीर का अङ्ग हो
 कामा (Langour) वा० वि० २२ अ० ।

अङ्गघात [Anga ghatah] - सं० पु०, वेदमे
 कोर का क्षमा, अङ्गघात । Bodily pain
 वे० अ० ।

अङ्गवय [Anga-ahavah] - सं०, पु०, पेरि
 निभम [Perinoun] घृषा सीर वृषण का
 मध्य भाग । इवान-उ० सं० । वे० नि० ।

गामतोद, गामशूल, शारीरिक वेदना । च० श०
Bodily pain ।

गशोथः (Angashothah)-सं०, पु०
[Swelling of the body] कायशोक,
शरीर की सूजन ।

गशोषः (Anga sheshah)-सं०, पु०,
आयुजरोय विधेय, गामक्षीयता, वेद का सू-
खना, क्षय ।

गशोषणम् (Anga-shoshanam)-सं०,
क्री०, अंग की शुष्कता (रुक्षता) शरीर का
सूखना घा० उ० ३ अ० ।

गस (Angas)-स० पक्षी । A kind of
bird.

गसंगम् (Anga-sangam) सं०, क्री०,
मैथुन, स्त्रीमरुद्ध, (Coition, Copulation)

गसदनम् (Anga sadanam) स० क्री०
शरीरान्नाद, अंग की शिथिलता, अवसन्नता
जड़ता । घा० नि० १२ अ० । (Depression)

गसाद् (Anga sadah)-स० पु०, अथ
साद्, अवसन्नता । हारा० । (Depression)

अंगसुन्दर (Anga-sundarah)-स०,
पु०, (१) (Cassia Tora) बहुमूल्य, लक-
ड़, हिं० । दामद्वन-चं० । अम (२) (Aloo
wood) अमर ।

अंगसुप्ति (Anga-suptih) स०, क्री०,
(Anesthesia) काय स्पर्शाजना, शरीर
स्वाप, अंग का सुप्त अथवा जड़ हो जाना ।
गामेग अनाजना-चं० ।

अंगसेनः (Anga-senah)-स०, पु०, अंग
स्तिष्ठम । वाकस गार्ह-यं० । रत्ना० ।

अंगस्तूरा छाल (Angastura chhal)
हिं० ।

अंगस्तूरा त्वक् (Angastura tvak) हिं०

अंगस्तूरा बार्क (Angustura bark) हिं० ।

अंगस्तूरा बार्क (Angustura bark)-हिं०

अंगस्तूरा छाल (Angustura Bark)-हिं०

अंगस्तूरा छाल (Cusparia cortex)
-ले० ।

अंगस्तूरा छाल—Angastura chhal
हिं०, क्रम अङ्गस्त्र पोस्त अंगस्त्र-वि० ।

अंगस्तूरीत्वक्—हिं० । कस्पेरीईकॉर्टेक्स
(Cusparia Cortex) ले० । कस्पे-
रिया बार्क Cusparia bark, अङ्गस्त्र
बार्क (Angustura bark-हिं० ।
स्पटेसीई अर्थात् नारकी घर्म N O But
acem

(आफीशल official)

उज्व स्थान—रुसिया अमेरिका के उष्ण
प्रदेश ।

लक्षण—उपरोक्त औषधि कस्पेरिया फ्रेमिप्र्यूट
Cusparia Fobrifuga वृक्ष की
छाल है जो औषधि मुख्य प्रयोग में आता
ये सपाट, चक्राकार या एक दूसरे पर
हुये टुकड़े हैं जो ६ इंच या इससे अधिक ल-
म्ब, १ इंच चौड़े १२ इंच स्पृल होते हैं ।

रक्षा का बाधक विन्ध्युक एवं पीतामायुक घूसरवर्ष का होता है, यह ऊपरी त्वचा सर जता पूर्वक मित्र की जा सकती है। और इसके निम्नतल से श्याम घूसरवर्ष का रेडिन (राज) जैसी तल निकल आती है। भीतरी तल सूक्ष्म घूसर वर्ष का होता है। यह छाल बधुधा परत वार और कठोर हाती है और इसको जहां से तोड़ें वहां से टूट जाती है। टूटा हुआ तल राजयुक्त दृष्टि गांघर हाता है।
 मध—अभिय । स्वाद—तिक या उष्ण।

परीक्षा—कुचला घृण—छाल स्वरूप आकृति में इस उपरोक्त छाल के समान होता है। अतः इस में मायः उलका मिश्रण किया जाता है। इसकी एक साधारण परीक्षा यह है कि कुचला घृण के छाल के भीतरी तल पर शोराम [Nitro acid] के लगाने से उसमें भूनीन होने के कारण रक्त वण उत्पन्न हो जाता है। जिससे इसकी ठीक परीक्षा हो सकती है।

रसायनिक संघटन—इसमें ये निम्न आर अम्लकजाइस [कार्बोय सत्व] होते हैं, यथा [१] एक तिक सत्व "कस्पेरीन [२] नी लेपीन, (३) गैलेपीडीन, (४) कस्पेरीडीन और एक सुगंधित तैल। असमिबन (संयोग विरज । -कनिमाम्ब और धात्व क्षयण।

वै—सुगंधित एवं तिक, वलमय और उष्ण, प्र। अधिक परिमाण में उपयोग में लाने से यह आमाशय एवं आंतों में मदाह उत्पन्न करता है। पूरुप में इसको नीमम्बा के सहश पुषा वर्जन हेतु अर्जैयै तथा निर्ब्रता में

परतते हैं। परन्तु इस में उवर्ग प्रमाण के कारण अमेरिका में इसे विषम उष्ण और प्रवादि कामें उपयोग में लाते हैं।

आफिशल योग [Official preparation]

(१) इन्फुजुम् कस्पेरी [Infusum Cuspariae] इन्फुजुन आफ कस्पेरिया Infusion of Cusparia]—इं० ना०। अंगस्तूरा फांट दि। खिलाइहे अंगस्तूरा ति० ना०।

निर्माण-विधि—कस्पेरिया पार्क का पूर्ण एक आउंस खोजता हुआ परिभूत तल एक पारएट, १५ मिनट तक मिगोकर छान लें।

मात्रा—१ से २ फ्लुइड आउंस (२८ से २९ ८ क्यु० से०)।

(२) काइकार कस्पेरी कन्सेण्ट्रेटस [Liquor Cuspariae Concentratus]—खे०। कन्सेण्ट्रेटेड सोल्युशन आफ कस्पेरिया [Concentrated Solution of Cusparia]—इं०। अंगस्तूरा घन मध—दि०। सा एक अंगस्तूरा गजीज़ ति० ना०।

निर्माणविधि—कस्पेरिया पार्क का ४० गं० का पूर्ण १० आउंस, अलकुहाल (२०%) २५ फ्लुइड आउंस या आवश्यकतानुसार। कस्पेरिया को २ फ्लुइड आउंस अलकुहाल से तर करके पकोलेटर में जमा देंगे और तीन दिन तक घुंयक रख दें। पुनः अपशिष्ट अलकुहाल को १० वटापर भागों में विभाजित करके १२-१३ घंटे के अन्तर से एक-एक भाग अलकुहाल डाल कर इसे पकोलेट कर लेंगे, यहाँ तक कि एक पारएट द्रव मात्रा हो जाये।

मात्रा—आधे से १ पञ्चदश ग्राम (१.५ से ३.६ फ्यु० से०) ।

परीक्षित प्रयोग ।

(१) टिकचूरा कस्पेरीई आधा ल्पु० इ० टिकचूरा कैप्सिसाई ५ यू० (मिनिम) सोडियाई चार कार्प १५ ग्रेन

इप्युजम रीहारं आधा आउंस पर्यन्त पेसी एक एक मात्रा औषध दिन में ३ बार देये । पेटोमिक इस्पेक्सिया (आमाशयिक निर्यस्तता अन्य अजीर्ण) में लाभजनक है ।

(२) टिकचूरा आरन्धियाइ ३० मिनिम स्विटिडस एमोनिया पेरोमैटिक १५ मिनिम सिरपस जिञ्जिबेरिस ३० मिनिम इप्युजम कस्पेरीई १ आउंस पर्यन्त पेसी ११ मात्रा औषधि दिन में तीन बार देये । शल्य (शामिक) है ।

अंगहर्ष (Anga harshah) -स०, पु०, (Horriplation) रामहर्ष, रौगटे लड़े होना । पा० नि० ३ अ० ।

अंगहार (Anga-harah) -स० पु०, अंग खालन, अंग विकल्प (Spasm)

अंगहीन (Anga hīnah) -स०, नि०, अंग-रहित, विकलांग, जैसे काष्ठादि (क्रान्ता प्रभृति) ।

अंगाकर (Anga-kar) -त्रे०, आरकरेला, किरार, Momordica Dioica, Roxb, ले० । फा० इ० १ अ० ।

अंगार (Angarah) -स० पु० (१) Fire-brand or embers) अंगार, अंगण, नि

धूम अग्निपिंड, यथा—'वृहता काष्ठसम्भूताऽङ्गाराः' पा० सू० ६ अ० अरुणः । (२) अंगार पूर्णपात्र वह वर्तन जिसमें अंगार रखा हुआ हो । हे० म० । (३) कुरणटक घृत । भांटी विशेष, पीली कटसरैया, पीतघर्ष, अम्लान घृत । रत्ना० Yellow amaranth (Musk melon) इ० हे० गा० ।

अंगारकः (Angarakah) -स० पु०, (१) (Bombers) अंगारा, अंगार (२) कुरणटक दि० । भांटी जाति-यं०, (Yellow or white amaranth) में कचनुष । (३) (Wedelia calendulacea) इन्द्रज । मांगग, मगरैया । रा० नि० य० ४ । मा० पू० १ अ० गु० य० । (४) (Burleria Prionitis, Linn) कटसरैया (पात) (५) कायला (Coal)

अंगारक तैलम् (Angarak tailam) -स० म्ली० ।

अंगारक मणि (angarak mahli) -स० पु०, प्रशम, मूंगा-दि० । कोरल (Coral) -इ० रा० नि० य० १३ ।

अंगार कर्कटी (Angar karkati) -स० स्त्री० (Balls or thick cakes of bread baked on coals) अंगार की रोटी अर्थात् खिचड़ी, पाटी-दि० । पाटिका-स०, २८ प्रस्तुत (विधि-मैत्रेयवाचना प्रभृति) को अन्न के साथ मिला कर कठोर पेशाब-रसमें से धोड़ा रुखकर खपटे अथवा गोल घटी के आकार के घाटी बनाये, पुना उन्हे धूप रविव अग्नि के अंगार पर धरने

शरीर पकावे। यस यही अंगार ककडी है। गुण-पह शूरवी, शुक्रल, लघु दीपनी, कफका एक, पक्षकारक तथा पीनस श्वास और कास को खीतने वाली है। वैद्यो नि०, भा०।

अ गार की बटी हिं० } अंगार पकडी
अ गार की लिट्टी हिं० } स०।

अ गारह (Angarah)-उ०, सांसर्गिक छमि।
बेखो-अंग्रापस (Anthrax) इ०।

अ गारहका टीका (Angarah ka tila)
उ०, सांसर्गिक छमिन्न सीरम। बेखो-एण्टि अंग्रापस सीरम स्फोयास (Anti Anthrax Serum Solavos)-इ०।

अ गार कुष्टका (Angar-kushthaka)
स०, खी०, दिलावली। दिगोट, हिपाथजी दि०। (Ingus)।

अ गार धानिका (angar dhanika)-स०
खी०, अंगार भारत्य पाय, अंगार रजने का प त्तम, योरसी-दि०, सईजाख-बं०।

अ गार धूप (angar dhupah)-स० पु०
(Incense, aromatic vapour) अंगार पर किसी औषधि को डालनेसे जो धूप निकलता है उसे "अंगार धूप" कहते हैं।

अंगार परिपाचितम् (angar-paripachitam)-स० खी०, गुलादि पकमांस, लौह पत्राका आदि पर पकाया हुआ मांस, Roasted food. नि० अंगार पक, अंगार पर पकाया हुआ।

अ गारपर्णी (angar-parani)-स०, खी०,

Clerodendron Serratum मार्गी, भारगी, पामण हाटी-बं०। २० सा० स०।

अ गार (का) पुष्प (angar ak pushpah)-स० पु० जीषपुत्रद्रुम। जियापुला-दि०। इंगुदा-बं०। Ingus। श० २० हिंगु, आ, गोदी।

अ गारपूरिका [angar purika]-स०
खी० 'रोटक' राटी। रटी बं०। Bread।

अ गार मञ्जरी [angar manjari] सं०,
अ गार मञ्जी [angar manji] खी०,
कण्डू
विशेष a species of Bondus or Bonduel'a। श० २०। महा करख दि०। उदर करख बं०। २० नि० बं०।

अ गारमणि [angar manih] स० पु०
[Coral] प्रवाल।

अ गारवर्णी [angar varni]-स०, खी०
'Clerodendron Serratum' मार्गी, भारगी। पामण हाटी बं०।

अ गारवल्लरी (angar vallari)-स०, खी०,
करख विशेष (Oviada verticalata)
भाषा में ताँटा करख कहते हैं।

अ गारवल्ली (angar-valli)-स० खी०
(Caesapini a Bonducella, Fleming)
महाकरख, एककरख। (२) Clerodendron serratum मार्गी। पा० सू० १५ बरौ। सुरसादि। (३) (OoTatum album) गुलसी। भा० पू० २० बं० (४) abrusprecatorius गुला रूषची दि०। संय-बं०।

से अंगुलियों की रक्षा दांतों से हो जाती है। इसीसे इसका नाम अंगुली प्राण पत्र है।
 या० सू० र० १०।

अंगुली (Anguli) - सं० स्त्री० (१) गज
 कर्पिका Heliotropium indicum, Linn
 हाथीशुष्क में ल प्रिक (२) A finger अं
 गुरी। अंगुलियों की अस्थिवा।

अंगुल्यस्थि (Angulvasthi) - सं० स्त्री०,
 अंगुलीपदं, पदं, पोषं। Phalanx

अङ्गुल [Angulit] انگشت کا۔ अंगुली,
 अंगुठा हि०। एक माप जो लगभग ६ इंच के
 बराबर होता है। फिङ्गर Finger हि०।

अङ्गुस्तकोचक (Angush-koolak)
 انگشت کوچک کا۔ कनिष्ठा, सं०। कान्ठी
 अंगुली, छोटी अंगुली छगुली हि०। लिट्ल
 फिगर Little finger-हि०।

अङ्गु गन्धह (Angusht-gandah)
 फ्रा०। हींग हि०। अंगोङ्ग हि०। बिस्तीत अं
 दिगु, रामठम् सं०। हींग प Assafoetida
 हि० मो० श०।

अङ्गुस्तदराज [Angusht-dar-z] انگشت
 کا۔ पृष्ठदाङ्गुल, मध्यमा, चौथी वी
 अंगुली, सन्धी अंगुली हि०। मिडल फिगर
 Middle Finger हि०।

अङ्गु इतवुर्नाम (Angusht-dahnam)
 انگشت نام کا۔ अङ्गुस्त सहायक
 انگुली, तर्जनी, प्रवेशिनी, अंगुठे के
 पास वाली अंगुली। फोरफिगर Fore Fin
 ger हि०।

अङ्गु इतवर्ग (Angusht-barg) - स्त्री०
 अङ्गु इतवर्ग, अङ्गु इतवर्ग

अङ्गु इतवुर्ग (Angusht-buzarg) انگشت
 انگشت انگشت انگشت انگشت
 अङ्गुठा, अंगुठा हि०। धम्य Thumb हि०।

अङ्गुस्त हल्कह (Angusht-halkah)
 انگشت حلقہ کا۔ अनामिका अङ्गुठी की
 अङ्गुली, छगुली [कनिष्ठा] के पास की अ
 ङ्गुली-हि०। रिंग फिगर Ring finger हि०।

अंगुप (Angushah) - सं० पुं०, (१) नकुल
 मेषला। Mongoose (Viverra mungo)
 (२) [An arrow] बाण, तीर।

अंगुष्ट (Angushtah) - सं०, पुं०, पृष्ठां
 गुली, अंगुठा Thumb or great toe हि०
 अंगुष्ठ पुङ्गु अं०। पाँचों अंगुलियों में से
 सबसे माटी अंगुली। रा० नि० च० १८। ३।

अंगुष्ठाना (Angushtana) - सं०, स्त्री०
 अंगुष्ठ। अंगुलप्रायक, अंगुस्ताना।

अंगुष्ठ [Angushtah] [हि०, पुं०, the
अंगुठा [Angutha] } Thumb अंगुष्ठ

अङ्गु [Angu] - सं० पुं० सू० अङ्गुल। में० मो०

अङ्गुर [Angur] - हि० फा० द०, बाक, बाक
 हि०। अंगूर, बाक-द०। सस्कृत पर्याय-कृष्ण
 चारुफला [अ] रसा [शब्दर] मूलीका
 गोस्तनी, स्वाही, मधुरसा [अ], यद्मद
 [शब्दमा०], प्रियाला, तापसमिया, गुण्य
 फला, रसासा, अमृतफला, - ३
 इय, प्राणा, फलोत्तमा और
 प्राण्या, अंगुर-यं०। इनय
 अं०। अङ्गु-दुर०। वादिस
 Vitis Vinifera, Linn, [Fruits
 Grapes] - ले०। प्रेष चारुन Grape-vin

श्रेण Grapē, वाइन Vino [tree of]
 ६०। विष्नी कवितवी Vigno, Cultives
 प्रा०। एडलोवीनरोबो Edlowoinrebe,
 रोसिनेन Rosinen जर०। विराण-पञ्जम,
 कोडि-मुन्दिरिप-पञ्जम, विराण-परम [मो०
 श०], कोडि मष्टि ता०। द्राण पंडु, गोस्तिनि
 परण्ड, द्राणा-ते०। मुन्दिरिण्ण-पञ्जम, मु
 न्दिरि-परम, पन्था मुन्दिरिण्ण-पञ्जम [मो०
 श०]-मल। द्राण-दण्ड [मो० श०],
 द्राण-कना०। द्राण, द्राण-मह०। द्राण [मो०
 ६०] द्राण, द्राण, मुद्रक-गु०। मुद्रक-पदम
 मुद्रका (मो० श०)-सि०। ज्योती-सभ्या
 सी या लयीति-ज०। द्राणा को०।

स्यताप या कृमि ताप द्राण शुष्क रूपे पक
 अंगूर मुनका रूपे अंगूर-दि०। मुनका ६०।
 गोस्तनी, कपिलद्राणा, मुदीका, कपिलपत्ता,
 अमृत रसा, शीर्षफला, मधुश्री, मधुफला,
 मधुलि, इरिता, हराहर, सुफला, मूडी, हिमो
 लप, पंचिका, हैमवती, शतवीर्य तथा का
 ह्मोरी से०। मीनकष, मनेका, स्रुका द्राणया
 पे०। ज्योती-सभ्या मनेका मुनका ملقى
 ६०। अंगूर-मुद्रक المردقح फा०। यूवी
 Uvae, यूवी पैसी Uvae passae-से०। रेसिन
 Rhisina ६०, प्रा०। रोसिनेन Rosinen
 ज०। Monoqqā मोनका दि०, ६० पत्ते०।
 अमृत विराण्ण-पञ्जम, एडलोवीन-परम-ता०।
 द्राण परण्ड, सभ-द्राण-पंडु, परण्ड, द्राण-
 ण्डु-ते०। मुन्दिरिण्ण-पञ्जम, मुन्दिरिण्ण-
 मुन्दिरिण्ण-पञ्जम (परम)-मल०। शीप
 द्राणिकना०। वेक्षिण्ण-मुद्रक-पञ्जम, वेक्षिण्ण मुद्र
 का, सि०। लयी-सी, सभ्यासी या लयी-ति।
 यीज रहित कण्डु द्राणा कियमिय, वेदाना-दि०,

६० फा०। काकली द्राणा, अम्बुका, फलो
 चमा, लघुद्राणा, निर्बीजा, सुष्टा, रुचिका
 रिणी, (रसाधिका, लघुद्राणा)-स०। किस
 मिस, ६० गु० म०। किसमिस द्राण-गु०।
 सुल्तानस Sultanaa, रेसिन Rhisina-६०।
 कियमिय, अंगुल द्राण (मो० श०) फा०।
 चिकुद्राणे-कना०। किसमिस पंडु-ते०।

गौर—एके सूत्रे इये आस अंगूर को मुनका और
 छोटे एवं बीज रहित को किसमिय तथा पड़े
 और काले-वर्ण को गोस्तनी (काली वाण)
 कहते हैं, काले अंगूरों को काकली वाण और
 भूरे-अंगूरों की मूरी, दाणें होती हैं। पर्वती तथा
 करौबी नाम से इसके और दो अन्य भेद हैं।
 पन्थासिद्धीई अर्थात् द्राणधम (N O Am
 pelideae)

उद्भव स्थान—इसरी पश्चिमी हिमालय
 (या भारतवर्ष) अर्थात् पञ्जाब, काश्मीर, का
 पुल, बलूचिस्थान, अफगानिस्थान, कन्दहार
 तथा फारस और यूक्रेण प्रभृति।

इतिहास—द्राणा नाम से अंगूर का वर्णन सु
 धृत और चरक आदि सभी प्राचीन आयुर्वेदीय
 ग्रंथों में मिलता है। यद्यपि यूनानियों तथा
 अरबी प्रयोगों को है। इसके ऊपरी एवं उपयोग
 का ज्ञान इन्हें बहुत प्राचीन काल से रहा
 है, और निज प्रयोगों में अपने २ दृष्टि-कोण से
 अतुल्य इसके उपयोग एवं गुण धर्म के ल
 के वे इन्होंने काफी प्रकाश डाला है जैसा कि
 आगे के वर्णन से विदित होगा। इसके द्वारा
 प्रस्तुत हुए मद्य के मादक प्रभाव से वे
 सको प्रति परिचित थे। अस्तु अर्थात् का
 'सोम' तथा यूनानी पुराणों का आर्यिक-मद्य
 किः सन्देह इवर्गीय सम्यत था।

शर्बत निर्माण विधि—एक द्राक्षा स्व
रस १ सेर, जल १॥ सेर शुद्ध स्पृच्छ शकरा
२ सेर । शर्बत प्रथम शर्करा को जल में डाल
कर अग्नि पर रखकर घालें, पुनः अंगूर स्वरस
मिलावें । तत्पश्चात् सम्पूर्ण द्रव्य का मधुर
अग्नि द्वारा यहाँ तक पकायें कि घट्ट $\frac{2}{3}$ रह
जावे । मात्रा—घाथा से १ फुडुड आउंल
(२४ घंटे में ५-६ पार)

डाइमांक—अथक अंगूर स्वरस को अरबी में
में हस्तरम (حصرم) फारसीमें गूड (گود)
अं० मे० वरजूस (Verjuice) तथा कमी में
अग्रेस्टो (Agresto) कहते हैं । यह अथक
इतलीमें कंठरोगों में व्यवहृत होता है । वसंत
ऋतुमें अंगूर की शाखाओं को काटनेसे उनमें
से अधिकता के साथ रस निकलता है जो कि
रक्त रोगों में व्यवहार में आता है और
यह अथ मी यूदप में खल्लु मदाह के लिये एक
मसिद् औषधि है ।

इसका पचा संकोचक है, तथा अतिसार में
उपयोग किया जाता है ।

मुकजी—किशमिश शीतल तथा मृदुभेदक
उपाय किया जाता है और खांसी, मतिश्याय
तथा पांडुरोग में व्यवहार में आता है ।

अंगूर की शकर (Angur ki shakar)
हिं०, द्राक्षीक, द्राक्षा खट्ट, दाख की शर्करा
Dextrosa ।

अंगूरे काबुली (Anguro-kabuli) کابلی
काबुली फा०, किशमिश काबुली किशमिश ।
Raisin ।

अंगूरे कोली (Angur-kauli)
अंगूरे खिरस (Angur-khira) انگورخوس
रीछराख । यूवी बसई फालिया Uva Ursi
folia-से० । ए० में० में० ।

अंगूरे खुश्क (Anguro khushk) خشک
का०, मुनका, सूखे अंगूर, निशमिश ।
Raisins (Uvae) ।

अंगूरे रूबाह (Anguro rubah) انگری
फा० मको, काला मको, करामको-हिं० । को
विदार, कृष्णकवि, रा-सं० । Solanum
Nigrum, Bl not Linn सं० फा० इ० ।

अंगूरे रूबाहे सुख [Anguro-rubaho
sukha]-फा० कोविदार । रक्तकोविंदी
सं० । मको, रक्त [खल] मको थं० । हिं० ।
Solanum Rubrum, Mill ।

अंगूरे सूबाहे सियाह Anguro-rubaho
siyah] फा० 0'4-0'3, انگری کالای ماکو
हिं० । Solanum nigrum, Bl not
Linn ।

अंगूरे शिगाल (Angur shighal)-फा०
انگور شام मको - Dulcamara सं० । Be-
ttrawest इ० ।

अंगूरे शिफा (Angur shifa)-फा० شفا
मको । हिं० । Dulcamara सं० ।

अंगूरे सग (Angur sag)-फा० سگ
Jacquins nightshade । इ० इ०

अंगूरी शकर (Anguri shakar) شکر
काबुली द्राक्षीक, द्राक्षखट्ट । Dextrosa ।
अंगूरकी शर्करा ।

अंगुरीशराब (Anguri sharab)-हिं०,
 १. व०, द्राक्षास्रव, मद्य। खन्न (خन्न), शराब
 (شراب), अ०। मै (مै), बावह (बावह),
 (मुक (مুক)-फ़०। शाङ्गयाम-ता०। द्राक्ष
 शरायि, द्राक्ष रसम-ते०। मुस्तिरिख्ख्य
 पम्प-वारायम-मन्त्र०। द्राक्ष-ख-दाह-गु०।
 मुदिर-का अण्ड, मुदिर-क-पान-सि०।
 वारनम (Vinum "Fermented juice
 of grapes-Wine or port wine) ले०।
 १०१ फा० १०।

अंगुरीसिका (Anguri-sirka)-हिं०, १०
 अंगुरेर सिका-ब०। जल्लुल कसर, حل الصو
 कल्लुल अमब (حل العنب) अ०। सिकहे
 अंगुरी (سركه انگورى) फ़०। दिराब-कार्डी
 ता० द्राक्ष-पुलकगीखु-ते०। मुस्तिरिख्ख-काटि
 मन्त्र०। द्राक्षी-कायी कमा०। द्राक्षु सिकाँ गु०
 विनेगर अफ़ मेन्स (Vinegar of grapes
 or wine vinegar) १०। स० फा० १०।

अंगुरेरसिका (Angurer-sirka) १०।
 अंगुरी सिकाँ। (Vinegar of grapes)।
 १० फा० १०।

अंगुलिया-पीपर (Anguliya piper)
 (Angez) अफ़। अफ़गानी
 में इसका नाम नूरेआलम है। यह एक
 ही ओ गीब्रान के पहाड़ों में उगता है।
 यह मीठा मेह से दो प्रकार का होता है।
अंगेजअवरतस (Angez avartas) फ़०
 (असफ़ुयदीय नख)।

अ गेलिकाआकैङ्गलिका (Angelios A-
 changelica) हा० सुम्बुलकतार्ई
 (سامل حطاي) पाबद्धमेद। १० हीं० गा०।

अ गेलिकागार्डेन (Angelika-garden)
 १० सुम्बुलकतार्ई (سامل حطاي) पाबद्ध
 मेद १०। ११० गा०।

अ गेलिकागलाका (Angelica-glanca,
 Bdgw) लें० चार० म्त्रा० प०। मे० मो०।

अ गेलिकारूट (Angelica-root) १०
 बेल सुम्बुलकतार्ई (سامل حطاي) अंग
 लीमा (الكملة) पाबद्ध मूख।

अ गेलिकासीड (Angelica-seed) १०
 सुम्बुल सुम्बुलकतार्ई (سامل حطاي) पाबद्ध
 योज।

अ गेलिम (Angelim)-१० अँकमारी,
 जैहनी। फा० १०।

अ गेलिमअमरगोसो (Angelim amar
 goso) १० अरारोपा। फा० १० १ मा०।

अ गेलिम आवेन्सिस (Angelim Ar
 vensis) ले०। अँकमारी, जैहनी। फा० १०

अ गोकर [Angokar]-ते०, चारकरेला,
 हिं०। फा० १० व० सा०।

अ गोजह [Angozah]-अज्जि फा०। हींग
 हिं०। हींग, रामठम्-स०। Assafoetida।

अ गोजहे इलरी [Angozah ilari] الی
 अज्जि फा० हींग, हिं० Assafoetida।

अ गोद वर्तन [Angoda vartan]-स०,
 अंगलेपन। अतुलेपन, लेप। फा० १०।

अंगोरम [Angoram]-कोपल मषपल्लव,
-Bud ।

अंगौन [Angoun]-घर, कलौ । Bud ।

अंग्वेण्टम् [Unguentum]-लेठ, [ए०

ब०], अंग्वेण्ट [Unguenta] । अंग्वेण्ट

मेण्ट [Ointment]-ई० [ए० ब०], अंग्वेण्ट

मेण्ट्स [Ointments] [ए० ब०] ।

मलहम, अल्लोप-दि० । मरहम [ए० ब०],

मराहम् 'ब० ब०' अ०, -फा० ।

अंग्वेण्टम अर्थात् मलहम एक या अनेक

औषधी को किसी प्रकार की घसा या तैल

प्रमति में मिलाकर निर्मित किया हुआ एक

अर्ध तरल या मृदु भौगिक होता है । ओ के

बल बाह्यरूप से उपयोग में लाया जाता है ।

मलहम प्रस्तुतिकरण में निर्माकित यलामय

तैलीय पदार्थ बेसिस (मुख्य अवयव) रूप

से अवले अवयव एक दो मिलाकर उपयोग में

आते हैं, यथा—(१) विद्युत् मेड़ की घसा

(२) शूकर घसा, (३) शूकर को छायात

युक्त घसा, (४) हेज मस्य के शिर की घसा

(५) मेड़ ऊर्णघसा, (६) मोम, (७) जौ

घृत तैल, (८) पादाम तैल, और (९) पैरा

फॉन । सूचना—दृष्य देशों में जहाँ उष्ण

धिक्य के कारण मसूहमें अत्यन्त मृदु हो

जाते हैं वहाँ पर साधारण बेसिस की स्थान

में इथ्यारेड ज़ाबे (यर्बावर कठोर की हूर)

शूकर घसा, विद्युत् मेड़ की घसा । और श्वेत

या पात मोम उपयोग में ला सकते हैं ।

अंग्राल्जी (Anghralgi)--स०, खी०

अभ्राल्सी रोग ।

अंधि (Anghrih)-स०, पु० (Root) हुम

। मूल, अङ्ग १ रा० नि० ब० २ । अम । पार ।

रा० नि० ब० १८ ।

अंधि ग्रन्थिकम् (Anghri-granthikam)

स० ब्रौ० । पिपेलावूल । Piper root ।

अंधि जिह्विक (Anghri jilvikah)

स०, पु० दमनक वृक्ष ।

अंधि नामक (नामन्) (Anghri-

amakali)-स०, पु०, दमनक वृक्ष,

रा० नि० ब० २ । अम० ।

अंधिपः (Anghripah) स० प्र०

वृक्ष । रा० नि० ब० २ । हला० ।

अंधिपर्णिका (Anghri parnika) स०

अंधिपर्णी (Anghri parni) स०, खी०

पुश्पपर्णी । चाकुलिया ब० । मा० पू० १०

ब० ।

अंधिवला (Anghri bala) स०, खी०

पुश्पपर्णी ।

अंधिवल्लि (का) स०, खी० पुश्पपर्णी ।

ख अंधिवल्ली (स०, खी०) चाकुलिया

ब० । प्र० टी० २० । Uraria Lagopoides

अंधिव. (Anghri shah) स०,

नाम का ताछ रोग । वेष्ठी-अधुपा ।

अंधिसन्धि (Anghri

अंधिस्कन्ध Anghri

अध्रम

M

अनुमृत योगमाला ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित ग्रन्थरत्न ।

वैद्यक विद्या को प्रेम करने वालों के लिये अप्राप्य रत्न, कोई भी वैद्य, कोई पृथ इन पुस्तकों से रिक्त न रहना ही योग्य है । अज्ञ हो आर्टर दीजिये ।

त्रिभिन्त गुण न होने पर वाम वापिस होने की प्रतीति है ।

सिद्धोपधि प्रकाश —

यह अपूर्व पुस्तक आयुर्वेद चिकित्सा के प्रचार करने के अर्थ प्रकाशित हुई है । इसमें सिर से लेकर पैर तक होने वाले सभी पुरुष और बालकों के रोगों को दूर करने के लिये बिना योग प्रकाशित किये गये हैं । पुस्तक प्रत्येक घर में रहने योग्य है । मूल्य १५) ४०

वैद्यक शब्दकोष—यह कोष आकारादि कर्मसे संस्कृत व्वाहियों के नाम सरल हिन्दी भाषा बचाने के लिये प्रकाशित किया गया है मू० १) आना ।

श्रीरोच चिकित्सा—यह एक वर्ष नई और विशेष उपयोगी विषय पुस्तक, ६९ पृष्ठों में समाप्त हुई है, सभी रोग कैसे पैदा होता है और कैसे दूर होता है । मू० १) आना ।

ज्वीहा—ज्वीहा नाश करने के अनुमृत योग लिखे हैं ज्वीहा कित २ कारणों से होती है । मू० १-२) आना ।

राज्यवर्मा—यह पुस्तक पं० बिन्देश्वर ब्राह्मण वैद्यराज सम्पादक अनुमृत योगमाला के संस्करणों द्वारा लिखी गई है जो गणादि पर वैद्य सम्मेलन ने पास की है और बड़े २ विद्वानों ने प्रशंसा पत्र दिये हैं । मू० १)

धमा (ध्वास्) —जो लोग कहते हैं कि आताही नहीं वह देखेंगे कि इस पुस्तक कहावत को जड़ से मिटा दिया । आना ।

शंश—सब प्रकार की बवालीर और से दूर करने के उपाय मू० १) आना ।

हरिधारितग्रन्थरत्न—समस्त रोगों के प्रम योग भाषा टीका सहित १०) आना ।

मधुमेह आयुर्वेद—यह मधुमेह क्या है कैसे होता है आदि का विशेष है । यह पुस्तक स्वर्गवासी पं० परशुराम शास्त्री विद्यासागर रचित है । मू० १) आना ।

श्रीरोचपचार पद्धति—इस पुस्तक में विप्रधि, जहरबाद, महरुखा, आँस से जलना, खोट लगने के घाव, विसर्प, गलतगड, गंभीर माला, भगदर, प्रमथि, अर्धुद, पामारोग का चिकित्सा लिखी है । मू० १०) आना ।

सिद्ध प्रयोग प्रथम भाग—इस में बहो प्रयोग प्रकाशित किये गये जो अनुमृत योगमाला में गठ ४ वर्षों में निकल चुक थे जिनकी परीक्षा होशुकी ही उम्मी को हलोक बस करके हिन्दी टीका पुस्तक प्रकाशित किया गया है मू० १) २० ।

सिद्ध प्रयोग द्वितीयभाग—यह पुस्तक प्रथम भाग की तरह पर बनाई गई है इसमें सम २६२० के परीक्षा में सिद्ध योगों का संग्रह प्रथम के अनुसार ही श्लाक बस और भाषा टीका पुस्तक दिया गया है । मू० १) आना ।

आग्नेय बचनानुमृत—आग्नेय बचनानुमृत पुस्तक क्या है वह नित्य है या अनित्य ? पुनर्जन्म क्या है ? सवष्ट, सदाचार, शास्त्रार्थ करने की विधि आदि का वर्णन है । मू० १) आना ।

बिन्ध्यमहाराज्य—बिन्ध्यमहाराज्य यह पुस्तक प्रत्येक सनातनधर्मी के देखने योग्य है मू० १५) ४० ।

कुप्टाक—कुप्ट के मेद और उसकी चिकित्सा । मू० १) आना ।

अंगोरम [Angoram]-कौपल नक्षपस्तक,
Bud ।

अंगौन [Angoun]-पर, कली । Bud ।

अंग्वेण्टम् [Unguentum]-लेह; [अं.
ब०], अंग्वेण्ट [Unguenta] । अंग्वेण्ट
मेण्ट [Ointment]-हं [अं० ब०] । अंग्वे
टमेण्टस [Ointments] [अं० ब०] ।
मलहम, अल्लुजेप-दि० । मर्हम [अं० ब०],
मराहम 'अं० ब०' अं०-फा० ।

अंग्वेण्टम अर्थात् मलहम एक वा अनेक
श्रीपथों को किसी प्रकार की घसा या तैल
प्रभृति में मिलाकर निर्मित किया हुआ एक
अथं तरल या मृदु यौगिक होता है । जो के
वल बाह्यरूप से उपयोग में लाया जाता है ।
मलहम प्रस्तुतिकरण में मिश्रांकित घसामय
वैधीय पदार्थ वेसिस (मुख्य अवयव) रूप
से आते हैं, यथा—(१) विशुद्ध भेड़ की घसा
(२) शूकर घसा, (३) शूकर को लायान
युक्त घसा, (४) हेम मत्स्य के शिर की घसा
(५) मेंढ्र ऊंघ्यघसा, (६) मोम, (७) जै
तन तैल, (८) पाशम तैल, और (९) पीरा
फोन । सूचना—उष्ण देशों में जहाँ उष्ण
पित्त के कारण मलहम अत्यन्त मृदु हो
जाते हैं यहाँ पर साधारण वेसिस की स्थान
में इयोरिंड्र लाई (द्याकर फटोर की छुरे)
शूकर घसा, विशुद्ध भेड़ की घसा । और श्वेत
या पात मोम उपयोग में ला सकते हैं ।

अंग्रालजी (Anghralgī)-सं०, खी०
अंग्रालजी रोग ।

अंधि (Anghrih)-सं०, पुं० (Boot) द्रुम
मूल, खड्ड । रा० नि० घ० २ । अम । पाद ।
रा० नि० घ० १८ ।

अंधि ग्रन्थिकम् (Anghri granthikam)
सं० खी० । विप्लवमूल । Piper root ।

अंधि जिह्विकः (Anghri jihvikah)
सं०, पुं० दमनक वृक्ष ।

अंधि नामकः (नामन्) (Anghria
amakah)-सं०, पुं०, दमनक वृक्ष,
रा० नि० घ० २ । अम० ।

अंधिपः (Anghripah) सं० प्र०
वृक्ष । रा० नि० घ० २ । वृक्षा० ।

अंधिपर्णिका (Anghri parnika) सं०

अंधिपर्णी (Anghri parni) सं०
पृथिनपर्णी । साकुब्धिया ब० । भा० पू० १०,
ब० ।

अंधिवला (Anghri bala) सं०,
पृथिनपर्णी ।

अंधिवल्लि (का) सं०, खी० } पृथिनपर्णी ।

ख अंधिवल्ली (सं० खी० } साकुब्धिया
ब० । अं० टी० २० । Uraria Lagopoides

अंधिप (Anghri shah) सं०,
नाम का उल्लु रोग । देखो-अधुयः ।

अंधिसन्धि (Anghri sandhih)

अंधिस्कन्ध Anghri skandhih

अंध्रय (Anghryah) } गह्व
Malloolus हं० ब० ।

अनुभूत योगमाला ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित मन्थरत्न ।

बैद्यक विद्या से प्रेम करने वालों के लिये असाध्य रत्न, कोई भी वैद्य, कोई गृह दान स्वामी से रिक्त न रहना ही योग्य है । अज्ञ ही आर्द्र कीजिये ।

विहित गुण न होने पर दाम बापिस होने की प्रतिज्ञा है ।

सिद्धौषधि प्रकाश—

यह अष्टौष पुस्तक आयुर्वेद चिकित्सा के प्रारंभिक चरण के अर्थ प्रकाशित हुई है । इसमें प्रारंभ से लेकर चैत तक होने वाले श्री बुरुष, गौतम आदि के योगों को बुर, करने के लिये अज्ञ योग प्रकाशित किये गये हैं । पुस्तक के प्रारंभ में रहने योग्य है । मूल्य १॥ २०

वैद्यक अष्टौष—यह अष्टौष आचार्यादि जिनसे संस्कृत दवाइयों के नाम सरस हिन्दी तथा ब्रजभाषा के लिये प्रकाशित किया गया है (मू० १) आना ।

जीरोष चिकित्सा—यह एक अज्ञ और विशेष उपयोगी विषय पुस्तक, २३ पृष्ठों के अन्तर्गत हुई है, श्री योग कैसे पैदा होता है और कैसे बुर होता है । मू० १) आना ।

ज्योहा—ज्योहा नाम करने के अनुभूत योग जिनके हैं ज्योहा, किन् २ कारणों से होती है । मू० १-२) आना ।

राज्यधरमा—यह पुस्तक पं० विन्सेस्वर द्वारा वैद्यराज सम्पादक अनुभूत याममाता क अर्थकर्मों द्वारा लिखी गई है जो यथात्रि पर वैद्य सम्मेलन में पास की है और बड़े २ विद्वानों ने प्रशंसा पत्र दिये हैं । मू० १)

दामा (दवास्त)—जो जोग करते हैं कि आताही नहीं वह देखेंगे कि इस पुस्तक दवास्त का अर्थ से मिटा दिया । आना ।

द्वैत—सब प्रकार की बवासीर और मस्ति बुर करने के दवाय मू० १) आना ।

हरिचरित्तिलपरान—समस्त रोगों के सुखन योग यथा टीका सहित १०) आना ।

अनुभूत ज्ञानचरी—यह गौतम का है कैसे होता है । आदि का विवेचन है । यह पुस्तक स्वर्गवासी पं० प्रद्युम्न शास्त्री विद्यासागर रचित है । मू० १) आना ।

प्रवीणचार-पद्धति—इस पुस्तक में वि-प्रधि, जहरबाद, महकजा, अग्नि से जलना, जोर लगने के बाद, विसर्प, गल्लगंड, गंड-मात्रा, मगंदर, प्रन्धि, कर्पूर, यामारोग का चिकित्सा लिखी है । मू० १-२) आना ।

सिद्ध प्रयोग प्रथम भाग—इस में बड़ी प्रयोग एकत्रित किये गये जो अनुभूत योगमाला में गत ६ वर्षों में निकल चुक थे जिनकी परीक्षा हो चुकी थी उन्हीं को प्रयोग बख करके हिन्दी टीका पुस्तक प्रकाशित किया गया है मू० १) २० ।

सिद्ध प्रयोग द्वितीयभाग—यह पुस्तक प्रथम भाग की तरह पर बनाई गई है इसमें सम २१२७ के परीक्षा में सिद्ध योगों का संग्रह प्रथम के अनुसार ही श्लाक बख और भाषा टीका पुस्तक दिया गया है । मू० १) आना ।

आग्नेय बचनानामृत—आग्नेय बचनानामृत पुराण क्या है, यह नियत है या अनियत ? पुनर्जन्म क्या है ? सप्तपृष्ठ, सप्तवार, आ आर्थ करने की विधि आदि का वर्णन है । मू० १) आना ।

विन्ध्यमहाहारण्य—विन्ध्यमहाहारण्य यह पुस्तक प्रायिक समाततधर्मी के देवने योग्य है मू० ११) २० ।

कुण्डलिक—कुण्ड क शर कीर बराकी चिकित्सा । मू० १) आना ।

सास्थ्यविज्ञान—यस्य मनुष्यं हो वसुधाम् ।
पुस्तक है वैदिक आहार, विहार, धर्म, वैद्य,
भया का वर्णन है। (मू० १) ॥

आयुर्वेद—प्राचीन, अथर्वान, स्यात्-
मृत शो-... ऐतौ के चिकित्सकम्-युक्त
पुस्तक छायी है। (मू० १) ॥

भारतवास्य-संसाधनशास्त्र—सोना, चाँदी
पमाने की छरछ वृद्धकोष लिखी गई है जिससे
प्रत्येक मनस्य ज्ञान-वृद्धा-सके। (मू० १) ॥

सर्वविप्र विज्ञान—इसमें सर्पों की पहि
चान और उनको चिकित्सा का वर्णन है।
(मू० १) ॥

फेफड़ों की परीक्षा—एथिहोप जगा
कटाइकाटर खोग कैसे फेफड़ों को परीक्षा
करते हैं। (मू० १) ॥

वैद्यों को ध्यान धोना और
पट्टी बांधना नहीं आता इसमें विप्र वैकर
समझाया गया है। (मू० १) ॥

मूत्र परीक्षा—इसमें मूत्र का परीक्षा का
फरती मगानसार और आपुर्वेदीय मता
सुताई वर्णन है। (मू० १) ॥

पेटेष्ट औरघ और भारतवर्ष—इसमें
पेटेष्ट देवायो के पात्र हैं कि अमुक पेटेष्ट
आधिपा में कौन रचष्टु किस र प्रमाण
में है जागर क्या है। (मू० १) ॥

आंत्रांगांक—आंत्रों में काम र रोग होते
हैं, उनके नाम और चिकित्सा का वर्णन है।
(मू० १) ॥

अपचोगांक—कौन र ले नवीन रोग
अर वेरा हरे हैं तिनका निक आधिबेद में
महो है। (मू० १) ॥

पृष्ठांगकांक—एहें में कौन र रोग होते
हैं और उनको क्या चिकित्सा है। (मू० १) ॥

पृष्ठांक—कलेके में लपको जाने
क्या, र रोग होते हैं उनको क्या, र चिकित्सा
है। (मू० १) ॥

अपचोगांक—अपच [अतशक] क्या
रोग है, कैसे होता है, कैसे मिटाई जात
है। (मू० १) ॥

अपचोगांक—अपचक कितने प्रकारका होता
है, कैसे प्रोक्षा छुट्या जाता है। (मू० १) ॥

आतशोगांक—अतशक कितने प्रकार
के होते हैं कैसे मिटाये जाते हैं। (मू० १) ॥

अभिषेक—अभिषेक आतशक कैसे
सर्प आधिपा पर कभी किये हैं। (मू० १) ॥

अभिषेक—औरतों के अंध रोग का मूत्र
पूरा वर्णन है। (मू० १) ॥

आतशोगांक—आतश के मसिख र रोग
पक्षों द्वारा आधिबेदत आधिपात को चि
कित्सा है। (मू० १) ॥

प्राथमिकोगांक—कोकिलक म विषो
नपुंसकता आतशक योग, तिमा, सु इत्या
नाये रखने के उपाय। (मू० १) ॥

प्रथमीअङ्क—मू० १) आता।

अर्षांक—मू० १) आता।

शिरोपगांक—मू० १) आता।

अनुभूत श्यामलाकी शेर फार
१६२४ को० २) सन् १६२८ को० ४) सन्
१६२९ को० ४) सन् १६३० को० ४) सन्
१६३१ को० ४) एक साथ लेने पर १५
दे दगे, शेर-पिछलो कायते समात है
जिये लिखना व्यय होगा।

रोगी रजिस्टर—मू० २) ॥

चिकित्सक व्यवहार विज्ञान—

अधिपधि गुणधर्म विवेचन—मू० १) ॥

स्नान चिकित्सा—मू० १) आता।

मिजने का पता—अनुभूत योगमाता आकिज, पतसोकुपु, इत्या।

